राष्ट्रीय दैनिक

प्रातः किरण

दिल्ली एवं पटना से प्रकाशित

हर खबर पर पकड़

/Pratahkiran /Pratahkiran /Pratahkiran

11 इतिहास में सबसे ज्यादा, यह टीम है आगे ...

विश्व कप अभियान में खराब प्रदर्शन के बावजूद सफेद गेंद के कप्तान बने ... 11

वर्ष : 11 | अंक : 179 | पटना, शुक्रवार , 10 नवंबर, 2023 | विक्रम संवत् 2080 | पेज : 12 | मूल्य ₹ : 03.00 | www.pratahkiran.com

मौसम

अधिकतम तापमान 31°C

न्यूनतम तापमान 25.0°C

हां	30%
नहीं	50%
कह नहीं सकते	10%

बाजार

सोना 59,340

चांदी 55,350

सेंसेक्स 63,327

निफ्टी 18,816

न्यूजीलैंड ने श्रीलंका को पांच विकेट से हराया, सेमीफाइनल में पहुंचना लगभग तय

9 मैच में पांचवीं जीत के साथ कीवियों के 10 पॉइंट

प्रात : किरण

बेंगलुरु/एजेंसी। विश्व कप के 41वें मुकाबले में न्यूजीलैंड ने श्रीलंका को पांच विकेट से हरा दिया। टूनार्मेंट में उसकी यह पांचवीं जीत है और उसने सेमीफाइनल में पहुंचने की अपनी उम्मीदों को बरकरार रखा है। बंगलूरू के एम चिन्नास्वामी स्टेडियम में न्यूजीलैंड ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया। श्रीलंका की टीम पहले बल्लेबाजी करते हुए 171 रन पर ऑलआउट हो गई। न्यूजीलैंड ने 23.1 ओवर में पांच विकेट पर 172 रन बनाकर मैच जीत लिया। सेमीफाइनल के लिहाज से बेहद अहम मुकाबले में न्यूजीलैंड ने पांच विकेट से जीतते हुए टॉप-4 में अपनी दावेदारी पुख्ता कर ली है। अब सेमीफाइनल की एक और दावेदार पाकिस्तानी टीम पर दबाव बढ़ चुका है, जिसे अपना आखिरी लीग मैच शनिवार को कोलकाता के ईडन गार्डंस में इंग्लैंड के खिलाफ खेलना है।

पाकिस्तान को न्यूजीलैंड से नेट रनरेट में आगे निकलना है तो इंग्लैंड पर 287 रन के विशाल अंतर से जीतना होगा। जो लगभग असंभव सा है। अब न्यूजीलैंड के जीतते ही उसके 9 मैच में 10 पॉइंट हो चुके हैं। अब पाकिस्तान और अफगानिस्तान को एक-एक मैच खेलने हैं। अगर दोनों ही टीमें अपने-अपने मुकाबलों में इंग्लैंड और अफगानिस्तान को हरा भी दे तो सभी के पास पॉइंट्स नौ मैच में 10 अंक हो जाएंगे, लेकिन कहानी नेट रेनट पर आकर खत्म हो जाएगी क्योंकि न्यूजीलैंड का एनआरआर सबसे बेहतर है। इस स्थिति में पाकिस्तान को इंग्लैंड के खिलाफ 287 रन तो अफगानिस्तान को साउथ अफ्रीका को 438 रन से हराना होगा, जो असंभव है। गुरूवार के मैच में न्यूजीलैंड ने पहले श्रीलंका को सिर्फ 171 रन पर समेट दिया और उसके बाद 23वें

ओवर में पांच विकेट खोकर लक्ष्य हासिल कर लिया। लगातार चार मैच हार चुकी न्यूजीलैंड के लिए यह मुकाबला काफी अहम था क्योंकि उसके आठ अंक थे और उसे भारत, दक्षिण अफ्रीका और ऑस्ट्रेलिया के साथ सेमीफाइनल में पहुंचने के लिए श्रीलंका को अपने आखिरी लीग में हर हाल में हराना था। इस मैच में न्यूजीलैंड के लिए ओपनर डेवॉन कॉन्वे ने सर्वाधिक 45, रचिन रविंद्र ने 42 तो डेरिल मिचेल ने 43 रन बनाए। इससे पहले न्यूजीलैंड ने श्रीलंका को सिर्फ 171 रन पर समेट दिया।

न्यूजीलैंड ने टॉस जीतकर क्षेत्ररक्षण का फैसला किया। उसके बाएं हाथ के तेज गेंदबाज बोल्ट (3/37) और बायें हाथ के स्पिनर सैंटनर (2/22) ने टीम की जरूरत के अनुरूप गेंदबाजी की। सलामी बल्लेबाज कुसल परेरा को एक रन पर विकेटकीपर टॉम लैथम ने जीवनदान दिया था, जिन्होंने 28 गेंद में 51 रन की अर्धशतकीय पारी खेली। जल्द ही श्रीलंका का स्कोर चार विकेट पर 70 रन हो गया। एक छोर से विकेट गिर रहे थे तो दूसरे छोर पर कुसल परेरा डटे थे और उन्होंने साउदी की गेंदों पर भी काफी अच्छे शॉट लगाए। वह टूनामेंट में केवल आस्ट्रेलिया के खिलाफ ही एक अर्धशतक जड़ पाए हैं और पिछली पांच पारियों में दोहरे अंक तक भी नहीं पहुंच सके। महीश तीक्षणा (नाबाद 38 रन) और दिलशान मधुशंका (18 रन) ने अंतिम विकेट के लिए 43 रन जोड़े जो श्रीलंका की पारी की सबसे बड़ी साझेदारी रही।

संक्षिप्त खबरें

मुख्यमंत्री ने धनतेरस की बधाई एवं शुभकामनायें दी

पटना। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने प्रदेश एवं देशवासियों को धनतेरस की बधाई एवं शुभकामनायें दीं। मुख्यमंत्री ने अपने शुभकामना संदेश में कहा है कि प्रदेश एवं देशवासियों पर महालक्ष्मी की कृपा बनी रहे। प्रदेश में सुख, शांति एवं समृद्धि आये। प्रदेशवासी पारस्परिक प्रेम, आपसी भाईचारा, साम्प्रदायिक सौहार्द्र एवं शांतिपूर्ण ढंग से धनतेरस पर्व को मनायें। बिहार प्रगति के शिखर पर पहुँचे।

संसद का शीतकालीन सत्र 04 से 22 दिसंबर तक

नई दिल्ली। संसद का शीतकालीन सत्र 04 दिसंबर से शुरू होगा और 22 दिसंबर तक चलेगा। केंद्रीय संसदीय कार्य मंत्री प्रहलाद जोशी ने गुरुवार को सोशल मीडिया प्लेटफार्म एक्स पर नए संसद भवन का फोटो साझा करते यह जानकारी दी। उन्होंने बताया कि शीतकालीन सत्र के 19 दिनों में 15 बैठकें होंगी। उन्होंने कहा कि अमृत काल के बीच सत्र के दौरान विधायी कामकाज और अन्य विषयों पर चर्चा होगी।

शोपियां में सुरक्षा बलों के साथ मुठभेड़ में आतंकी ढेर

श्रीनगर। जम्मू-कश्मीर के शोपियां जिले में बृहस्पतिवार सुबह सुरक्षा बलों के साथ मुठभेड़ में द रेजिस्टेंस फ्रंट (टीआरएफ) से जुड़ा एक आतंकवादी मारा गया। पुलिस ने यह जानकारी दी। पुलिस के एक अधिकारी ने बताया कि दक्षिण कश्मीर जिले के काठोहलान इलाके में आतंकवादियों की मौजूदगी की जानकारी मिलने के बाद सुरक्षा बलों ने इलाके की घेराबंदी कर तलाश अभियान शुरू किया। अधिकारी के मुताबिक, अभियान के दौरान आतंकियों ने सुरक्षा बलों पर गोलियां चलाईं। उन्होंने बताया कि सुरक्षा बलों ने भी जवाबी कार्रवाई की, जिसके बाद दोनों पक्षों में मुठभेड़ छिड़ गई और इसमें अभी तक एक आतंकी के मारे जाने की खबर है।

पाकिस्तानी सेना ने रामगढ़ क्षेत्र में गोलीबारी की, बीएसएफ जवान शहीद

जम्मू। पाकिस्तानी सैनिकों ने जम्मू कश्मीर में सांबा जिले के रामगढ़ सेक्टर में अंतरराष्ट्रीय सीमा पर अकारण गोलीबारी की जिसमें सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) का एक जवान शहीद हो गया। बीएसएफ के प्रवक्ता ने गुरुवार को यह जानकारी दी। उन्होंने बताया कि पाकिस्तानी सैनिकों ने आठ और नौ नवंबर की दरमियानी रात को रामगढ़ सेक्टर में बिना उकसावे के गोलीबारी कर संघर्ष विराम का उल्लंघन किया। गोलीबारी में एक जवान गंभीर रूप से घायल हो गया। घायल जवान को अस्पताल ले जाया गया, लेकिन उसने दम तोड़ दिया। उन्होंने कहा कि पाकिस्तान रेंजर्स की गोलीबारी का बीएसएफ जवानों ने माकूल जवाब दिया।

वैशाली में 469 कार्टन विदेशी शराब बरामद, दो कारोबारी गिरफ्तार

हाजीपुर। बिहार में वैशाली जिले के महुआ थाना क्षेत्र से पुलिस ने 469 कार्टन विदेशी शराब के साथ दो कारोबारी को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस सूत्रों ने गुरूवार को यहां बताया कि सूचना के आधार पर पहाड़पुर गांव स्थित एक ठिकाने पर बुधवार की देर रात छापेमारी की गयी। इस दौरान ट्रक पर लदी 469 कार्टन हरियाणा निर्मित विदेशी शराब बरामद की गयी। बरामद शराब की कीमत करीब 40 लाख रुपए है।

नौकरियों और संस्थानों में दाखिले में आरक्षण की सीमा बढ़ाने का विधेयक बिहार विधानमंडल के दोनों सदनों में पारित

सुविधाओं को जल्द लागू करेगी सरकार : नीतीश

पिछड़े, अति पिछड़े, अजा और अजजा को 65 प्रतिशत आरक्षण

- आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के लिए जारी रहेगा 10 प्रतिशत आरक्षण
- बिहार विधानमंडल में आरक्षण संशोधन बिल सर्वसम्मति से पास
- एससी, एसटी व ओबीसी के लिए आरक्षण सीमा बढ़ाकर 65 फीसदी करने को मंजूरी

प्रात : किरण

पटना। बिहार विधानमंडल के दोनों सदनों से अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति एवं अति पिछड़ा वर्गों एवं अन्य पिछड़ा वर्गों के लिए आरक्षण की मौजूदा सीमा 50 फीसदी को बढ़ाकर 65 प्रतिशत करने के प्रस्ताव को बृहस्पतिवार को मंजूरी मिल गई। शिक्षण संस्थानों और सरकारी नौकरियों में इन वर्गों के आरक्षण को बढ़ाने के प्रस्ताव वाले विधेयक को दोनों सदनों से ध्वनि मत के जरिए सर्वसम्मति से पारित कर दिया गया। विधेयक के अनुसार, एसटी के लिए मौजूदा आरक्षण दोगुना कर किया जाएगा जबकि एससी के लिए इसे 16 प्रतिशत से बढ़ाकर 20 फीसदी किया जाएगा। वहीं, ईबीसी के लिए आरक्षण 18 फीसदी से बढ़ाकर 25 प्रतिशत तो ओबीसी के लिए आरक्षण को 12 फीसदी से बढ़ाकर 15 प्रतिशत किया जाएगा। इससे पहले विधानसभा में भाजपा के सदस्यों ने कई मुद्दों को लेकर हंगामा किया, जिससे सदन की कार्यवाही दोपहर दो बजे तक के लिए स्थगित कर दी गई। प्रस्ताव पारित होने के बाद मुख्यमंत्री नीतीश कुमार कहा कि 9 दलों की मीटिंग में जाति गणना और आर्थिक स्थिति का पता करने का निर्णय लिया गया था। हमलोग केंद्र सरकार के पास भी गए थे लेकिन केंद्र सरकार ने टाल दिया था। इसके बाद बिहार सरकार ने इसे करवाया। इसके बाद हमने जाति आधारित गणना करवाया। साथ ही सभी वर्ग, जाति के लोगों का आर्थिक सर्वे भी करवाया गया। सभी लोगों की राय से जब यह करवाया गया। इसके आधार पर आरक्षण बढ़ाने का निर्णय लिया गया है। मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार इन विधेयकों के जरिए मिलनेवाली सुविधाओं को जल्द लागू करेगी। मुख्यमंत्री ने कहा कि जाति आधारित गणना के आधार पर आरक्षण की सीमा बढ़ाई गई है। यह राज्य के लिए ऐतिहासिक दिन है। गणना में समाज के हरेक तबके की आर्थिक स्थिति का आकलन किया गया है। इसी आधार पर 94 लाख गरीब परिवारों को दो लाख रुपये की मदद देने का निर्णय किया है। इस राशि से ये अपनी आर्थिक स्थिति सुधारेंगे। इसके लिए वित्तीय प्रविधान किए जा रहे हैं। योजना पर पांच वर्षों में ढाई लाख करोड़ रुपये खर्च होंगे।

विशेष दर्जा मिल जाए तो राज्य खुशहाल होगा: मुख्यमंत्री ने भाजपा सदस्यों की ओर इशारा कर कहा कि बिहार को विशेष राज्य का दर्जा दिलाने के लिए वे प्रयास करें। विशेष दर्जा मिल जाए तो राज्य खुशहाल होगा। विकास के लिए सबको मिलकर प्रयास करना होगा। सब मिलकर चलेंगे तो उन्हें खुशी होगी। उन्होंने कहा कि कुल आरक्षण में 15 प्रतिशत की वृद्धि की गई है। आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के लिए 10 और अन्य वर्गों के लिए 50 प्रतिशत आरक्षण पहले से दिया जा रहा था। अनुसूचित जातियों-एवं जनजातियों को उनकी संख्या के आधार पर आरक्षण दिया जाता है। उनकी आबादी करीब 22 प्रतिशत है। इसलिए 22 प्रतिशत आरक्षण का भी प्रावधान किया गया है। उन्होंने सदन से आग्रह किया कि आरक्षण संबंधी दोनों विधेयकों को सर्वसम्मति से पारित किया जाए। संसदीय कार्य मंत्री विजय चौधरी ने कहा कि मूल रूप से आरक्षण को बढ़ाकर 65 प्रतिशत करने का ही प्रस्ताव है। आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के लिए10 प्रतिशत आरक्षण केंद्र सरकार ने पहले ही दूसरे अधिनियम से आच्छादित है।

शैक्षणिक और आर्थिक रूप से पिछड़े लोगों को प्राथमिकता मिले : नेता प्रतिपक्ष विजय सिन्हा ने कहा कि भाजपा इस विधेयक का समर्थन करती है। भाजपा की मांग है कि शैक्षणिक और आर्थिक रूप से पिछड़े लोगों को इस आरक्षण बिल में प्राथमिकता मिलनी चाहिए। विधानसभा सदन में विधायक नंद किशोर यादव ने कहा कि भाजपा आरक्षण संशोधन विधेयक 2023 का समर्थन करती है। भाजपा हमेशा पिछड़ा और अतिपिछड़ा समेत समाज के सभी वर्गों के काम करती है। यह आरक्षण प्रस्ताव जनता के हित में है, गरीबों के पक्ष में है। इसलिए भाजपा इस बिल का समर्थन करती है।

मेरी गलती थी कि मैंने इन्हें सीएम बना दिया

पटना। विधानसभा में आरक्षण संशोधन विधेयक को लेकर चर्चा के दौरान पूर्व मुख्यमंत्री जीतन राम मांझी ने जाति आधारित गणना और आरक्षण पर सवाल उठाया। उन्होंने कहा कि क्या सरकार कभी इसका विश्लेषण किया है कि आरक्षण का लाभ लोगों को मिल रहा है। इस पर मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने एतराज जताया। मुख्यमंत्री ने कहा कि इन्हें कुछ आइडिया नहीं है। मेरी गलती थी कि मैंने इन्हें मुख्यमंत्री बना दिया, इनको कुछ ज्ञान नहीं है। जब मुख्यमंत्री बनाए थे तो मेरी पार्टी के लोग हमको कहने लगे कि ई तो गड़बड़ हैं, इनको हटाइए। नारेबजी कर रहे भाजपा की ओर इशारा करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि ये गवर्नर बनना चाहते हैं, पहले भी आप लोगों के पीछे घूमते थे, बनवा दीजिए गवर्नर। उन्होंने आगे कहा कि जब हम मुख्यमंत्री बना दिए तब मेरी पार्टी के लोग हमको दो माह बाद ही कहने लगे कि यह गड़बड़ है, इनको हटाइए। इसके बाद जनता भी सवाल उठाने लगी। बाध्य होकर मुझे इसे हटाना पड़ा।

उच्चतम न्यायालय के तीन न्यायाधीशों की शपथ के साथ संख्या 34 हुई

प्रात : किरण

नई दिल्ली/एजेंसी। मुख्य न्यायाधीश डी वाई चंद्रचूड़ ने गुरुवार को न्यायमूर्ति सतीश चंद्र शर्मा, न्यायमूर्ति ऑगस्टीन जॉर्ज मसीह और न्यायमूर्ति संदीप मेहता ने उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश के तौर पर शपथ दिलाई। इसके साथ ही शीर्ष अदालत के लिए निर्धारित कुल 34 न्यायाधीशों की संख्या पूरी हो गई। न्यायमूर्ति शर्मा दिल्ली उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश थे, जबकि न्यायमूर्ति ऑगस्टीन जॉर्ज मसीह राजस्थान उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश और न्यायमूर्ति संदीप मेहता गुवाहाटी उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश थे। मुख्य न्यायाधीश चंद्रचूड़ की अध्यक्षता वाले उच्चतम न्यायालय कॉलेजियम ने सोमवार को तीन उच्च न्यायालयों के मुख्य न्यायाधीशों को शीर्ष अदालत में न्यायाधीश के रूप में नियुक्त करने की सिफारिश की थी। केंद्र सरकार ने बुधवार को तीनों न्यायाधीशों की नियुक्ति से संबंधित एक अधिसूचना जारी की थी। शपथ ग्रहण समारोह में शीर्ष अदालत के सभी न्यायाधीश, वरिष्ठ अधिवक्ता, सुप्रीम कोर्ट बार एसोसिएशन के सदस्य, नव नियुक्त न्यायाधीशों के परिवार के सदस्य और अन्य गणमान्य लोग उपस्थित थे।

आपातकाल लगाना इतिहास का सबसे काला दौर: धनखड़

प्रात : किरण

नई दिल्ली/एजेंसी। उप राष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने आपातकाल को भारतीय इतिहास का सबसे काला दौर करार देते हुए कहा है कि पृथ्वी पर कोई भी ताकत भारतीयों को मौलिक अधिकारों और मानवाधिकारों से वंचित नहीं कर सकती है। उप राष्ट्रपति ने गुरुवार को गोवा के राजभवन में राज्यपाल पीएस श्रीधरन पिल्लई की साहित्यिक गतिविधियों के स्वर्ण जयंती समारोह में भाग लिया और उनकी 200वीं पुस्तक वामन वृक्ष कला का विमोचन किया। उन्होंने आपातकाल लगाए जाने को इतिहास का सबसे काला दौर बताते हुए सभी से उस दौर से सीख लेकर आगे बढ़ने का आह्वान किया। राज्यपाल की 200वीं पुस्तक वामन वृक्ष कला का विमोचन करते हुए श्री धनखड़ ने राज्यपाल की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि राज्यपाल की शपथ ह्यसंविधान की रक्षा, संरक्षण और बचावह्न के लिए है। तीन दशकों के प्रयासों के बाद नारी शक्ति वंदन अधिनियम के पारित होने को इतिहास में एक गौरवशाली क्षण बताते हुए, श्री धनखड़ ने इसकी सफलता का श्रेय दूरदर्शी, समर्पित और सर्वसम्मति से प्रेरित दृष्टिकोण को दिया।

तेजस्वी ने केक काटकर पार्टी नेताओं के साथ मनाया जन्मदिन

प्रात : किरण

पटना। उपमुख्यमंत्री तेजस्वी प्रसाद यादव का 34वां जन्मदिन राष्ट्रीय जनता दल के राज्य कार्यालय में धूमधाम के साथ मनाया गया। इस अवसर पर पार्टी की ओर से 34 पौंड का केक उपमुख्यमंत्री तेजस्वी प्रसाद यादव के द्वारा प्रदेश अध्यक्ष जगदानन्द सिंह सहित वरिष्ठ नेताओं और कार्यकताओं की उपस्थिति में काटा गया। सभी ने तालियों के साथ इन्हें हैप्पी बर्थडे कहकर स्वागत किया। सभी ने बुके और माला देकर स्वागत भी किया। रंग-बिरंगे बैलून तथा फुलों की सजावट से पूरा राज्य कार्यालय गुंजायमान रहा। इस अवसर पर उपमुख्यमंत्री तेजस्वी प्रसाद यादव ने कहा कि बिहार की जनता और नेताओं तथा कार्यकताओं के आशीर्वाद और स्नेह तथा भरपूर समर्थन मिलने से आज मैं यहां तक पहूंचा हूं, और सभी शुभकामनाएं और बधाई को मैं स्वीकार करता हूं। आज पार्टी के नेताओं-कार्यकताओं और आमजनों के द्वारा मुझे बधाई संदेश दिया जा रहा है इसके लिए मैं सबके प्रति आभार प्रकट करता हूं। इन्होंने कहा कि सभी लोग साथ मिलकर बिहार आगे बढ़ता रहे इसके लिए समर्थन और सहयोग तथा अपना आशीर्वाद देते रहें। इस अवसर पर प्रदेश अध्यक्ष जगदानन्द सिंह ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की और संचालन प्रदेश प्रधान महासचिव श्री रणविजय साहू ने किया। इस अवसर पर वन पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन मंत्री तेज प्रताप यादव, बिहार विधान परिषद के उप सभापति डॉ रामचन्द्र पूर्वे, राष्ट्रीय मुख्य प्रवक्ता सह राज्यसभा सांसद प्रो मनोज कुमार झा, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष उदय नारायण चौधरी, राष्ट्रीय महासचिव श्याम रजक, भोला यादव, बिनू यादव, प्रदेश उपाध्यक्ष अशोक कुमार सिंह, वृषिण पटेल, डॉ तनवीर हसन, शिवचन्द्र राम, सुरेश पासवान, मधु मंजरी, मंत्री आलोक कुमार मेहता, डॉ शमीम अहमद, विधायक अख्तरूल इस्लाम शाहीन, मो नेहालुदीन, अनिरूद्ध यादव, रीतलाल यादव, सैयद अशरफ सिद्दिकी, मो कामरान, अशोक सिंह, मो कारी सोहैब, निरंजन राय, कार्तिकेय सिंह, प्रदेश मुख्य प्रवक्ता शक्ति सिंह यादव, प्रदेश प्रवक्ता एजाज अहमद, चितरंजन गगन, एज्या यादव, सारिका पासवान, डॉ उर्मिला ठाकुर, पूर्व विधायक सह पटना जिलाध्यक्ष दीनानाथ सिंह यादव, आजाद गांधी, प्रदेश महासचिव बल्ली यादव, मदन शर्मा, फैयाज आलम कमाल, निराला यादव, भाई अरूण कुमार, सहित बड़ी संख्या में नेताओं और कार्यकर्ता ने उन्हें जन्म दिन की बधाई दी।

मुख्यमंत्री ने उप मुख्यमंत्री को दी बधाई

पटना। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने गुरूवार को उप मुख्यमंत्री तेजस्वी प्रसाद यादव को जन्मदिन पर उन्हें बधाई एवं शुभकामनायें दी। मुख्यमंत्री ने तेजस्वी प्रसाद यादव के स्वस्थ एवं दीघार्यु जीवन की कामना की।

सरकार बनने पर कराएंगे जातिगत जनगणना : राहुल

अशोकनगर/ एजेंसी। कांग्रेस के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष राहुल गांधी ने गुरुवार को मध्य प्रदेश के अशोकनगर जिले के नईसराय क्षेत्र में चुनावी जनसभा को संबोधित किया। इस दौरान उन्होंने केंद्र सरकार और भाजपा पर जमकर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि कांग्रेस की सरकार बनते ही पहले मध्य प्रदेश में और केंद्र में सरकार आने पर पूरे देश में जातिगत जनगणना कराएंगे। राहुल गांधी ने कहा कि कुछ महीने पहले मैंने 4000 किमी की भारत जोड़ो यात्रा की। इस दौरान मैं मध्य प्रदेश से भी गुजरा और इस देश को बहुत करीब से देखा। इस दौरान मैंने हजारों युवाओं से बातचीत की। कोई डॉक्टर बनना चाहता था, कोई इंजीनियर तो कोई वकील, लेकिन आखिर में सवाल वही था कि पढ़ाई के बाद भी अधिकतर बेरोजगार थे। उन्होंने कहा कि ऐसे में मेरे दिमाग में सवाल था कि इस देश में ओबीसी कितने हैं, दलित कितने हैं, आदिवासी कितने हैं, सामान्य वर्ग के कितने हैं और इन लोगों को हिंदुस्तान की सरकार चलाने में कितनी हिस्सेदारी मिल रही है। जब आप मीडिया में देखेंगे तो आपको देश में सिर्फ नफरत नजर आएगी, लेकिन जब मैं ह्यभारत जोड़ो यात्राह्न पर निकला तो मुझे नफरत नहीं, सिर्फ मोहब्बत मिली। इसलिए मैंने कहा कि नफरत के बाजार में मोहब्बत की दुकान खोल रहा ।

भारत और अमेरिका के बीच टू प्लस टू वार्ता आज

प्रात : किरण

नई दिल्ली/एजेंसी। भारत और अमेरिका के बीच पांचवीं मंत्री स्तरीय टू प्लस टू वार्ता शुक्रवार को होगी। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह और विदेश मंत्री एस जयशंकर वार्ता में भारत का जबकि अमेरिकी विदेश मंत्री एंटनी ब्लिंकन और रक्षा मंत्री लॉयड आस्टिन अमेरिका का प्रतिनिधित्व करेंगे। अमेरिका के रक्षा मंत्री लॉयड ऑस्टिन भारत पहुंच चुके हैं। उन्हें तीनों सेनाओं की टुकड़ी की ओर से सलामी गारद पेश की जायेगी। श्री ऑस्टिन गत जून में भी यहां आए थे और उस दौरान उन्होंने रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह के साथ वार्ता भी की थी। वार्ता के दौरान दोनों देश रक्षा, सुरक्षा, प्रौद्योगिकी और लोगों के बीच परस्पर संपर्क बढाने के लिए जारी सहयोग की समीक्षा करेंगे। दोनों देश प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और राष्ट्रपति जो बाइडन के बीच गत जून और सितम्बर में हुए विचार विमर्श के आधार पर भारत- अमेरिका साझीदारी के भविष्य के रोडमैप पर बातचीत करेंगे। इसके अलावा समसामयिक क्षेत्रीय मुद्दों तथा क्वाड जैसे मंचों पर सहयोग बढाने के बारे में भी चर्चा की जायेगी।

संबोधन मध्यप्रदेश में भारतीय जनता पार्टी प्रत्याशियों के समर्थन में चुनावी सभा को संबोधित करते हुए बोलें पीएम

भारत के खिलाफ साजिश रचने वाले विदेशियों के साथ खड़ी कांग्रेस : मोदी

प्रात : किरण

नीमच/एजेंसी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आज कहा कि कांग्रेस देश में अस्थिरता फैलाना चाहती है और यही कारण है कि पार्टी भारत के खिलाफ साजिश फैलाने वाले विदेश के लोगों के साथ खड़ी नजर आती है। श्री मोदी मध्यप्रदेश के नीमच में भारतीय जनता पार्टी प्रत्याशियों के समर्थन में चुनावी सभा को संबोधित कर रहे थे। राज्य में श्री मोदी की आज ये तीसरी सभा थी। इसके पहले उन्होंने सतना और छतरपुर में भी पार्टी प्रत्याशियों के समर्थन में सभाओं को संबोधित किया। प्रधानमंत्री ने कहा कि कांग्रेस देश में अस्थिरता और अराजकता फैलाना चहती है। इसके लिए पार्टी ने ना जाने किस-किस से गुप्त समझौते किए हुए हैं। विदश के जो लोग खुलेआम भारत के खिलाफ साजिश रचते हैं, कांग्रेस उनके साथ खड़ी नजर आती है। पार्टी को 10 साल से शासन से बाहर रहना पच नहीं रहा। उन्होंने कहा कि कांग्रेस ने सत्ता के लालच में हमेशा समाज को बांटा है। कांग्रेस की कुनीति से देश में आतंक

और अराजकता का कालखंड आ गया। आजादी के समय राष्ट्रनिर्माण का जज्बा कांग्रेस ने एक परिवार की भक्ति में कुचल दिया। केंद्र या राज्य में कांग्रेस जहां भी रही, हमेशा भ्रष्टाचार के नए रिकॉर्ड बनाए हैं। इसी मानसिकता के कारण एक के बाद एक कई राज्यों से कांग्रेस साफ हो गई। मध्यप्रदेश में भी दो दशक से कांग्रेस बहुमत के लिए तरस रही है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस के पास विजन के नाम पर सिर्फ विरोध और विभाजन है। मध्यप्रदेश के लोगों को कांग्रेस से सतर्क रहना है। कांग्रेस देश के लिए सिर्फ समस्या पैदा करना जानती है, कोई समाधान नहीं है। उन्होंने कहा कि एक ओर कांग्रेस ने भ्रष्टाचार का किला बनाया, वहीं दूसरी ओर राम को भी काल्पनिक बता दिया। कांग्रेस ने महात्मा गांधी से लेकर डॉ भीमराव अंबेडकर तक, किसी की भी नहीं सुनी। प्रधानमंत्री ने कहा कि कांग्रेस के एक प्रधानमंत्री कहते थे, दिल्ली से 100 पैसा भेजने पर सिर्फ 15 पैसा लाभार्थी तक पहुंचता है। उस समय पंचायत से संसद तक कांग्रेस के ही लोग थे। अब ये पैसा कौन सा ह्यपंजाह्न मार लेता था। कांग्रेस ने जो समस्या पैदा की, उसका समाधान भी भाजपा ने किया। उन्होंने कहा कि कांग्रेस मतलब समस्या, भाजपा यानी समाधान। श्री मोदी ने कहा कि कांग्रेस ने तकनीकी में देश को पीछे रख कर भी पैसा कमाया। तकनीकी आती तो पारदर्शिता आती।पुरानी व्यस्था में वो अपनी कमाई के साधन खोज लेती थी। देश को 2 जी घोटाला याद है। अब भारत 5 जी की रफ्तार से आगे बढ़ रहा है। उन्होंने कहा कि कंप्यूटर, मोबाइल और इंटरनेट बहुत पहले आ गए थे, पर भारत में देर से पहुंचे। ये सब इसलिए क्योंकि कांग्रेस की नीयत समाधान की नहीं थी।

संक्षिप्त खबरें

मालवाहक टेम्पो की चोरी

फतुहा। बीते बुधवार की रात स्थानीय वाणी पुस्तकालय के पास से एक मालवाहक टेम्पो चोरी हो जाने का मामला प्रकाश में आया है। इस सन्दर्भ में पीड़ित टेम्पो मालिक नोहटा निवासी राजा राम यादव ने थाने में शिकायत दर्ज करायी है। बताया जाता है कि पीड़ित अपने मालवाहक टेम्पो को हर दिन की तरह वाणी पुस्तकालय के पास खड़ी कर घर चला गया। गुरुवार को सुबह जब वह वाणी पुस्तकालय के पास पहुंचा तो उसकी मालवाहक टेम्पो वहां से गायब थी। खोजबीन का प्रयास किया गया लेकिन टेम्पो का कुछ अता पता नही चला। शिकायत के आलोक में पुलिस मामले की जांच कर रही है।

शांति समिति की बैठक की गई

दानापुर। दीपावली व छठ व्रत को लेकर थाना परिसर में थानाध्यक्ष सम्राट दीपक के अध्यक्षता में शांति समिति की बैठक आयोजित किया गया। शांतिपूर्ण दीपावली एवं छठ व्रत सम्पन्न कराने को लेकर उन्होने समिति के सदस्यो से जानकारी लेते हुए सहयोग की अपील की। उन्होने कहा कि पुलिस शांतिपूर्ण त्योहार सम्पन्न कराने को लेकर तैयार है। लोगो कोई भी सूचना हो उसकी जानकारी देने की बात कही। समिति के सदस्यो ने पूजा को लेकर कई सुझाव दिये। बैठक में पूर्व पार्षद मासूम अली कमल कुमार गुप्ता उर्फ बंटी गुप्ता बलदेव मेहता सलिम साहिल समेत सदस्य उपस्थित थे।

चित्रगुप्त महाराज का अवतरण दिवस मनाया

पटना सिटी (प्राकि)। नौजर घाट स्थित श्री चित्रगुप्त आदि मंदिर में चित्रगुप्त भगवान का अवतरण दिवस मनाया गया। इस दौरान चित्रांश परिवार के लोगों ने दीप जलाकर उनकी पूजा और आराधना की। इस संबंध में अधिवक्ता संजय कुमार सिन्हा ने बताया कि करीब 50-60 वर्ष पूर्व काले कसौटी की चित्रगुप्त भगवान की प्रतिमा मंदिर परिसर से चोरी हो गई थी। इसके बाद वर्ष 2007 में सोनपुर के एक गांव में प्रतिमा मिली। तब शासन प्रशासन के आदेश पर वहां से प्रतिमा लाकर फिर से मंदिर में प्रतिष्ठापित किया गया। तब से हर साल अवतरण दिवस मनाया जाता है। आयोजन में श्री चित्रगुप्त आदि मंदिर प्रबंधक समिति के उपाध्यक्ष अधिवक्ता संजय कुमार सिन्हा, महामंत्री सुदामा प्रसाद सिन्हा, पूर्व पार्षद धर्मेंद्र प्रसाद मुन्ना, नवल किशोर सिन्हा, अजय कुमार मंटू, अनुज कुमार सिन्हा, मनीष कुमार सिन्हा, सन्नी सिन्हा, अनूप कुमार सिन्हा, शंकर पांडेय, आनंद कुमार, अरुण कुमार आदि चित्रांश शामिल हुए।

एसजीपीसी अमृतसर के 3री बार अध्यक्ष बनने पर दी धामी को बधाई

पटना सिटी (प्राकि)। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक समिति, श्री अमृतसर के अध्यक्ष के रूप में अधिवक्ता हरजिंदर सिंह धामी चुने गए हैं। इसे लेकर प्रबंधक कमेटी, तख्तश्री हरिमंदिर जी पटना साहिब के वरीय उपाध्यक्ष लखबिंदर सिंह, महासचिव इंद्रजीत सिंह, एसजीपीसी बिहार के अध्यक्ष सूरज सिंह नलवा आदि ने अमृतसर में ही श्री धामी से मिल कर उन्हें बधाई दी है। इन सबों ने कहा कि श्री धामी सिख पंथ और शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक समिति के साथ ही देश के सभी सिख संस्थान और विकास के लिए उनकी सेवा से खुश रहेंगे।

छठ पर व्रतियों व श्रद्धालुओं को मिलेगी सुविधा: एसडीओ

दिवाली में जुआरियों पर नजर, अग्निशामक रहेगा सतर्क, आतिशबाजी पर रोक

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

दीपों का पर्व दीपावली, लक्ष्मी पूजा एवं छठ पूजा को ले गुरुवार को गुलजारबाग ऑडिटोरियम में शांति समिति की बैठक हुई। इसकी अध्यक्षता अनुमंडल पदाधिकारी गुंजन सिंह, एवं एएसपी शरथ आरएस ने संयुक्त रूप से की।

इसमें अनुमंडल के सभी थाना प्रभारी, पटना नगर निगम, जल पर्षद, बिजली विभाग के अभियंता, अग्निशामक सेवा, चिकित्सा सेवा के पदाधिकारी उपस्थित हुए। एसडीओ गुंजन सिंह ने होने वाले पर्व में विधि-व्यवस्था बनाए रखने के लिए दिशा-निर्देश जारी कीं। इस बार देर से बारिश होने के कारण गंगा नदी में जलस्तर बढ़ने से परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। फिर भी घाटों की स्थिति काफी ठीक है। अनुमंडल क्षेत्र में भगवती काली एवं महालक्ष्मी पूजा के विसर्जन के लिए लाइसेंस लेना अनिवार्य है। पंडाल सड़क पर बनाने की अनुमति नहीं दी जाएगी। डीजे एवं लाउडस्पीकर पर प्रतिबंध जारी रहेगा। शांति समिति के सदस्यों के द्वारा भगवती काली एवं महालक्ष्मी पूजा के बाद प्रतिमा विसर्जन से संबंधित जानकारी दी गई। कौन-कौन पूजा समिति कब-कब विसर्जन करेंगे एवं अनुमंडल पदाधिकारी समय पर विसर्जन करने के लिए अनुरोध कीं। लॉ कॉलेज घाट, कदम घाट, घघा घाट, रोशन घाट एवं चौधरी टोला घाट खतरनाक साबित होता जा रहा है। इसे जल्द ठीक कराने की बात कही गई। घाटों पर एनडीआरएफ, पुलिस पदाधिकारी, बल, एसडीआरएफ, चेंजिग रूम, वाच टावर, सीसीटीवी से लैस होगा। इससे घाट पर सभी आने व जाने वाले लोगों एवं संदिग्धों पर पैनी नजर रखी जा सकेगी। प्रमुख स्थानों पर पानी के टैंकर की व्यवस्था रहेगी तथा अस्थायी थाना में एंबुलेंस के साथ साथ डाक्टर की टीम मौजूद रहेगी।लटका हुआ बिजली तार को जल्द से जल्द ठीक किया जाए, ताकि अनहोनी से बचा जा सके। घाट जाने वाला एप्रोच जर्जर सड़क को जल्द दुरुस्त कराने के लिए संबंधित विभाग को निर्देश दिया गया है। गायघाट में जो गंगा घाट पर बना हुआ सीढ़ी जर्जर एवं छोटा है। उसका चौड़ीकरण कर ठीक कराने की बात कही गई। एएसपी शरथ आरएस ने कहा कि कम से कम पटाखा का उपयोग करें, यातायात व्यवस्था पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। एसडीओ ने कहा कि जिला प्रशासन के द्वारा हर घाट पर निगरानी की जा रही है। इसके लिए स्थानीय पूजा समिति के साथ विमर्श कर घाट को अनुकूल बनाया जा रहा है। खतरनाक घाटों पर लाल कपड़ा बांध कर सचेत किया जाएगा। बैठक में गणेश कुमार, बाबू भाई, संतोष कुमार, मनोज शर्मा, शाहिद अंसारी, अंजू सिंह, रामजी योगेश, अमित कुमार, मनीष सिंह, बटु,, धर्मेंद्र कुमार मुन्ना, मिथलेश कुमार शर्मा आदि शामिल हुए।

जीवन में सफलता पाने को परिश्रम व प्रतियोगिता जरूरी : रंजन जोसेफ

प्रात :किरण संवाददाता

पटना सिटी (प्राकि)। प्रतियोगिता चाहे कैसी भी हो, यह हमें अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए तैयार करती है। टेढ़ी घाट स्थित इन्फेंट जीसस स्कूल में प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

इसका शुभारंभ विद्यालय के निदेशक पास्कल पीटर ओस्ता, प्राचार्य रंजन जोसेफ और प्रशासिका शुभदा रंजन ने दीप प्रज्ज्वलित कर किया। ऐसे कार्यक्रमों के आयोजन का उद्देश्य यह है कि परिश्रम कभी भी व्यर्थ नहीं जाता और जीवन में सफलता पाने के लिए परिश्रम व प्रतियोगिता बेहद जरूरी है, जिसे चरितार्थ करते हुए षष्ठम से द्वादश वर्ग के चारों हाउस के बच्चों ने अपने मिशन और लक्ष्य को ऊँचा रखते हुए अपनी बौद्धिक क्षमता का बेहतरीन प्रदर्शन दिया, वहीं दूसरी ओर कक्षा नवम से द्वादश के बच्चों ने स्वस्थ व स्वच्छ भोजन की प्राथमिकता बताते हुए फूड फेस्ट का आयोजन किया , फूड स्टॉल के लिये बच्चों ने वाहवाही भी बटोरी। प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में ग्रीन हाउस के बच्चे विजयी रहे।

समाजवादी व किसानों के नेता कुशवाहा नंदन को दी श्रद्धांजलि

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

जन संघर्ष मोर्चा के तत्वावधान में जन संघर्ष मोर्चा के संस्थापक, संरक्षक एवं सीपीआईएम पटना जिला कमेटी के सदस्य और किसान सभा के उपाध्यक्ष जेपी सेनानी कुशवाहा नंदन के निधन पर श्रद्धांजलि सह शोकसभा का आयोजन पश्चिम बजरंगपुरी स्थित निजी सामुदायिक भवन में हुआ।

इसकी अध्यक्षता राष्ट्रीय जनता दल के प्रदेश महासचिव सह पूर्व पार्षद प्रदीप मेहता और संचालन

बिहार अराजपत्रित कर्मचारी यूनियन के पूर्व अध्यक्ष राजकिशोर राय ने किया। शोकसभा में विभिन्न राजनीतिक दल के नेताओं, कार्यकताओं और सामाजिक संगठन के साथियों ने भाग लिया। श्री मेहता ने कहा कि कुशवाहा नंदन प्रखर समाजवादी एवं राष्ट्रवादी चिंतक और क्रांतिकारी मधुरभाषी नेता थे। वे किसानों के ज्वलंत जनसमस्या को लेकर लगातार संघर्ष करते रहे। वे जेपी आंदोलन में आपातकाल के समय 18 महीने से अधिक मीसा के तहत भागलपुर केंद्रीय कारागार में बंदी रहे। शोकसभा में पूर्व विधान पार्षद डॉ उपेंद्र प्रसाद, डॉ इकबाल अहमद, अखिल भारतीय कुशवाहा महासभा के प्रदेश अध्यक्ष नरेश मेहता, डॉ धीरज मेहता, उमेश पंडित, मंजुल कुमार दास, जेपी सेनानी संघर्ष समिति के महासचिव शंभू मेहता, त्रिलोकीनाथ पांडेय, रविंद्र कुमार सिन्हा, सलमान अख्तर, डॉ विनोद कुमार सिन्हा, पंचम मेहता, पार्षद मनोज मेहता, ओमप्रकाश मेहता, प्रमोद मेहता, चुन्नू सिंह, जदयू के पंकज कुशवाहा, मनोज मेहता, राजकिशोर सिंह, शेष नारायण मेहता, अवध किशोर मौर्य, रामबाबू पाल, रतन यादव, पप्पू मेहता, छोटू राम, राजेश रजक, अधिवक्ता मनोहर लाल मेहता, संजीत मेहता, ओमप्रकाश, विनय कृष्ण मौर्य, जेपी मेहता आदि नेता उपस्थित थे।

डिप्टी सीएम तेजस्वी के आरोग्य, दीर्घायु व सेवा को शक्ति की कामना

काटा गया केक, बच्चों में मिठाई व मरीजों के बीच फल वितरण

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

पटना साहिब राजद द्वारा उप मुख्यमंत्री तेजस्वी यादव का जन्मदिन पार्टी के पदाधिकारियों, नेताओं को कार्यकताओं के द्वारा मनाया गया। नून की चौराहा स्थित अवध उत्सव हॉल में युवा राजद के पूर्व प्रदेश महासचिव अभिषेक कुमार रिंकू की अध्यक्षता में श्री तेजस्वी का 34वां जन्मदिन केक काट कर मनाया गया। बच्चों व राहगीरों के बीच केक व मिठाइयां बांटा गया। वक्ताओं ने कहा कि बिहार में सीएम नीतीश कुमार और उप मुख्यमंत्री तेजस्वी यादव के नेतृत्व में महागठबंधन की सरकार में बेरोजगार युवाओं को रोजगार से जोड़ने का काम किया जा रहा है। इसका उदहारण एक बार में 12,0336 शिक्षकों की बहाली।श आगे और भी विभाग में बहाली की प्रक्रिया चल रही है। बधाई देने वालों में राजद के पूर्व प्रदेश महासचिव डॉ एकबाल अहमद, मो कासिम चांद, पूर्व पार्षद प्रदीप मेहता, पूर्व प्रदेश महासचिव सलमान अख्तर, मो कलाम, बबलू कुमार राम, लाला प्रकाश आदि थे। दूसरी ओर श्री गुरु गोविंद सिंह सदर अस्पताल में मरीजों के बीच केक काट एवं फल का वितरण कर डिप्टी सीएम के दीघार्यु होने की कामना की गई।कार्यक्रम में राजद के पूर्व प्रदेश महासचिव सह पूर्व पार्षद बलराम चौधरी, पूर्व प्रदेश महासचिव मोहम्मद जावेद, शत्रुघ्न यादव, एजाजुद्दीन सानू, मो शाहीन अनवर, भूषण माली, कुंदन माली, दीना ठाकुर, त्रिभुवन यादव, शशि कुमार आदि मौजूद थे।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2023 का समापन सह पुरस्कार वितरण समारोह का किया भव्य आयोजित

प्रात : किरण ब्यूरो

भागलपुर। एनटीपीसी कहलगाँव के प्रांगण में सतर्कता विभाग द्वारा आयोजित सतर्कता जागरूकता सप्ताह-2023 का पुरस्कार वितरण के साथ विधिवत रूप से समापन समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरूआत एनटीपीसी के प्रशासनिक भवन प्रांगण स्थित नेताजी सुभाष चन्द्र बोस प्रेक्षागृह में भव्य आयोजन को किया गया। ज्ञात हो कि केन्द्रीय सतर्कता आयोग भारत सरकार एवं केन्द्रीय सतर्कता कार्यालय, एनटीपीसी लिमिटेड के निदेर्शानुसार कहलगाँव परियोजना के तहत विगत 30 अक्टूबर से लेकर 5 नवम्बर 2023 तक सतर्कता जागरूकता सप्ताह का आयोजन किया गया था। वही सतर्कता जागरूकता सप्ताह का कार्यक्रम का समापन पुरस्कार वितरण के साथ किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि, महाप्रबंधक (ओ एंड एम) अजय शर्मा ने दीप प्रज्ज्वलित कर किया। वही कार्यक्रम को लेकर सतर्कता जागरूकता सप्ताह के अंतर्गत कर्मचारियो, उनके परिवारजनों, सीआईएसएफ कर्मचारी, स्कूली बच्चो, एसएसवी महाविद्यालय के विद्यार्थीयों, संविदाकर्मियों हेतु निबंध प्रतियोगिता, भाषण प्रतियोगिता, पोस्टर प्रतियोगिता, नारा प्रतियोगिता, क्विज, इत्यादि प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया था, जिसमें सभी नें बढ़-चढ़ कर आयोजित प्रतियोगिता में भाग लेकर कार्यक्रम को सफल बनाया है। इसके उपरांत सतर्कता जागरूकता के लिए नुक्कड़ नाटक एवं भ्रष्टाचार विरोधी वाकथन का भी आयोजन किया गया था। इस अवसर पर महाप्रबंधक (ओ एंड एम) श्री शर्मा ने अपने सम्बोधन में कहा कि जागरूकता सप्ताह के दौरान विभिन्न जागरूकता संदेशों को कार्यक्रमों के माध्यम से हम सभी आम जनों तक पहुंचाने के लिए सतर्कता विभाग की ओर से किए गए प्रयासों का काफी सराहनीय रहा है। साथ ही उन्होंने ने कहा कि देश को भ्रष्टाचार मुक्त बनाने हेतु लोगों को अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने की जरूरत है, जिसके लिए आम जनों को आगे बढ़ने हेतू अपील की है। इस अवसर पर महाप्रबंधक(एस डाइक मेनेजमेंट) राजेश गुप्ता, महाप्रबंधक (एफएम) हफिजुर रहमान मलिक, महाप्रबंधकगण (मैंटेनेंस) प्रभात रंजन बारीक, महाप्रबंधक (तकनीकी सेवाएँ) चंद्रासिस घोषदास्तिदर, सीनियर कमांडेंट (सीआईएसएफ) नरेंद्र देव आनंद, (जीवन ज्योति अस्पताल) सीएमओ, डॉ. सुष्मिता सिंह, अध्यक्षा (सृष्टि समाज) बी. बिन्दु, (सृष्टि समाज) उपाध्यक्षा सेफाली शर्मा, सहित सभी विभागाध्यक्षगण यूनियन एवं एसोसियेशन के प्रतिनिधिगण एवं बड़ी संख्या में एनटीपीसी कर्मी एवं उनके परिवारजन, स्कूल एवं कॉलेज के बच्चे के अलावा संविदा कर्मचारी उपस्थित थे।

101वीं हजरत सैयद शाह पीर नसीरुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह का उर्स बड़ी धूम-धाम और अकीदत के साथ मनाया गया

प्रात :किरण संवाददाता

दानापुर खगौल नगर के अंतर्गत ताज एकता कमेटी व रहनुमा-ए-कौम कब्रिस्तान कमिटी के जरिये 101वीं हजरत सैयद शाह पीर नसीरुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह का दो दिनों तक चलने वाला उर्स बड़ी धूम-धाम और अकीदत के साथ मनाया गया। यह मजार शरीफ हिन्दु -मुस्लिम एकता का मिसाल है।

यहाँ सभी धर्मो के लोग हर साल यहाँ आकर मन्नत मांगते है और मन्नत पूरी होने पर फूल और चादर चढ़ाते है। 8 नवंबर को सुबह में कुरानख्वानी, बाद नमाज जोहर मजार शरीफ का गुसुल और बाद नमाज ईशा मिलादुन्नबी का प्रोग्राम हुआ। मिलाद में मौलाना अल्हाज हाफिज मिफ्ताउर रब अशरफी, सय्यद ओवैश अहमद फिरदौसी, सय्यद सदफ साईद, कारी मोहम्मद खुर्शीद ने हजरत की तारीफ बयान की और 9 नवंबर को सुबह से लेकर रात तक नेयाज, फातेहा, गुलपोशी, चादरपोशी होती रही और दुआ जायेरीन करते रहे और रात में कई तंजीमों के तरफ से गुल पोशी और चादर पोशी हुई। जिसमें ताज एकता कमिटी, के अध्यक्ष मोहम्मद शाहनवाज उर्फ रिंकू संयोजन चंदू प्रिंस उप सचिव मोहम्मद पिंटू कोषाध्यक्ष मोहम्मद गुड्डू बादल मोहम्मद सादाब मोहम्मद गोल्डन ओम नंदन तिवारी टुनटुन यादव मुन्ना यादव बड़ी खगौल के आफताब रजा, फैजाने औलिया कमिटी और छोटी खगौल चीक टोली से लोगों ने चादर चढ़ाया साथ ही हिन्दुस्तान के साथ पूरी दुनिया में अमन शान्ति और भाईचारगी कायम रहने की दुआ की।

हाफिज व कारी मोहम्मद शमशाद साहेब नात शरीफ पढ़ा। कमिटी के अध्यक्ष शोएब कुरैशी, उपाध्यक्ष मोहम्मद मुश्ताक कुरैशी, सचिव मोहम्मद सज्जाद आलम उर्फ गुड्डू, संयुक्त सचिव मोहम्मद शम्सुद्दीन उर्फ पिंटू, कोषाध्यक्ष मोहम्मद सुल्तान उर्फ विक्की ने आये हुए जायरीन और भक्तों का हार्दिक स्वागत किया और उनलोगों का शुक्रिया अदा किया।

पुलिस प्रशासन के सामने अतिक्रमण, महावीर घाट मोड़ जाम

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

गंगा पाथवे निर्माण को लेकर भद्र घाट का रास्ता बंद किया गया है। इस कारण से गंगा किनारे रोड से आने-जाने वाले चालक वाहन लेकर अशोक राजपथ के महावीर घाट की ओर निकलते हैं या फिर महावीर घाट से ही प्रवेश करते हैं। मगर मुहाने पर ही फुटपाथ पर दुकान आबाद है। रास्ता के संकरा होने के कारण भी लंबा जाम लग रहा है। गुरुवार को भी अपराह्न में स्कूली बस से लेकर अन्य वाहन जाम में फंसा रहा। आश्चर्य की बात यह है कि अनुमंडल पुलिस प्रशासन का मुख्यालय पास में है। एसडीओ, एएसपी और नगर निगम के अधिकारी से लेकर पदाधिकारी के द्वारा लगातार छठ पर्व को लेकर गंगा के घाटों का मुआयना किया जा रहा है। मगर शायद महावीर घाट में लगने वाले वाहनों के जाम की ओर लोगों का ध्यान नहीं जा पाया है और न ही अब तक महावीर घाट मुहाने पर आबाद अतिक्रमण को हटाने का काम ही किया गया है। निजी या सवारी वाहन से आने-जाने वाले लोग जाम में फंसकर बेहाल हो रहे हैं। उन्हें कोई वैकल्पिक मार्ग भी नहीं मिल पाता है। यदि वह नौजर कटरा, दीवान मोहल्ला, मितन घाट होते हुए खाजेकलां की ओर जाते हैं, तो उस ओर भी रास्ता के संकरा होने के कारण जाम की स्थिति बन रही है।

13 तक गंगा घाटों को छठ के लिए करें तैयार : अनिमेष पराशर

पानी में बेरिकेडिंग व बांस-बल्ला को रंग लगाया जाना है झंडा : शीला

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

नगर निगम के नगर आयुक्त, अपर नगर आयुक्त, अभियंता के साथ ही कार्यपालक पदाधिकारी की टीम के साथ अन्य पदाधिकारियों ने अजीमाबाद और पटना सिटी अंचल के विभिन्न घाटों का दौरा कर निरीक्षण किया। इसे लेकर कार्य कर रहे ठेकेदारों को भी जरूरी निर्देश दिए गए। निगमायुक्त अनिमेष कुमार पाराशर ने कहा कि छठ को लेकर नगर निगम की ओर से तैयारी ठीक-ठाक हो रही है। सुरक्षा उनकी प्राथमिकता है। गंगा घाट के किनारे कीचड़ को ठीक करना है। पानी में बांस-बल्ला से घेर कर बेरिकेडिंग और प्रकाश की समुचित व्यवस्था करना रह गया है। स्थानीय स्तर पर दोनों अंचल के कार्यपालक पदाधिकारी, मुख्य सफाई निरीक्षक, नगर प्रबंधक, वार्ड के सफाई निरीक्षक, पर्यवेक्षक सभी घाट जाने वाले रास्ते और घाट किनारे सफाई व्यवस्था को सुदृढ़ रखे हुए हैं। ठेकेदारों को हर हाल में 13 नवंबर तक घाट को तैयार करने का टास्क दिया गया है। दूसरी ओर अपर नगर आयुक्त शीला ईरानी ने भी घाट पर मौजूद अभियंता व ठेकेदारों को भी स्पष्ट तौर पर कहा कि कार्य में कोई कोताही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। इस बार गंगा के घाट किनारे पाट चौड़ा निकला है। दलदल काफी कम है। थोड़ा कीचड़ है, मगर उसके भी आने वाले समय में सुखने की पूरी संभावना बनी हुई है। निगमायुक्त के निदेशानुसार 13 नवंबर तक घाटों पर पूरा काम दिखना चाहिए। साथ ही पानी में बांस-बल्ला से किए गए बेरिकेडिंग को रंगना है। उस पर झंडा-पताका भी लगाया जाना है, ताकि इसका पता दूर से और व्रतियों से लेकर श्रद्धालुओं को भी जानकारी हो सके कि इसके आगे नहीं जाना है। इस दौरान अजीमाबाद अंचल के कार्यपालक पदाधिकारी मो नुरूल हक शिवानी, मुख्य सफाई निरीक्षक राजीव कुमार, अभियंतागण सभी मिलकर महाराज घाट तक मुआयना किया। इसके आगे पटना सिटी अंचल के कार्यपालक पदाधिकारी आशुतोष कुमार ने मोर्चा संभाला और केशव राय घाट से लेकर दीदारगंज के बीच के घाटों का निरीक्षण किया गया एवं जरूरी निर्देश पदाधिकारियों व काम कर रहे ठेकेदारों को दिया गया।

भारतीय मानक ब्यूरो ने छापेमारी कर भारी मात्रा में नकली पैकेजबंद पेय जल किया जब्त

प्रात :किरण संवाददाता

पटना। भारतीय मानक ब्यूरो के पटना शाखा कार्यालय को सूचना मिली थी कि रोहतास में एक फैक्ट्री द्वारा भारतीय मानक ब्यूरो से बिना लाइसेंस प्राप्त किए अवैध रूप से नकली आईएसआई मार्क के साथ पैकेजबंद पेय जल का निर्माण एवं विक्रय कर रहे हैं। इस आधार पर कार्यालय प्रमुख द्वारा एक विशेष छापेमारी दस्ता का गठन किया गया एवं तलाशी एवं जब्ती अभियान गुरुवार को दस्ते दल को भेजा गया। भारतीय मानक ब्यूरो के छापेमारी दस्ता ने एसपी रोहतास एवं डेहरी मुफ्फसिल थाना के सहयोग से छापेमारी की। छापेमारी के दौरान मेसर्स - अर्था बिवरेजेज एलएलपी, पहलेजा रोड, पोस्ट- पहलेजा, थाना झ डेहरी मुफ्फसिल, जिला- रोहतास (बिहार) 821305 भारतीय मानक ब्यूरो के आईएसआई मार्क का दुरुपयोग करते हुए पाया गया। छापेमारी के दौरान उपरोक्त फैक्ट्री में भारी मात्रा में अवैध रूप से निर्मित नकली आईएसआई मार्क पैकेजबंद पेय जल पाया गया जिसको छापेमारी दल ने जब्त एवं सील किया एवं सबूत के तौर पर रखा। साथ ही पैकिंग मशीनें, बोतल बनाने की मशीनें, लेबल ईत्यादि लगाने का प्रबंध था। 400 बोतलें नौ रोल लेवल एवं प्रीफार्म एवं कैप के एक बैग को सील किया गया। भारतीय मानक ब्यूरो अधिनियम 2016 के नियमों के तहत आईएसआई मार्क के दुरुपयोग पाए जाने पर तथा इसकी कोर्ट की सत्यापन होने पर कम से कम रु.2,00000/-का जुमार्ना तथा उत्पादनकर्ता को दो वर्ष की सजा या दोनों दिया जा सकता है । भारतीय मानक ब्यूरो उत्पाद की गुणवत्ता बनाए रखने में इस तरह का अभियान गुप्त सूचना के आधार पर,अपने सौजन्य से एवं अन्य आधार पर करता रहता है। उक्त फर्म के विरुद्ध भारतीय मानक ब्यूरो अधिनियम,2016 के अंतर्गत कार्यवाही की जा रही है ।

रंगकार 2023 खालिद की खाला नाटक का हुआ सफल मंचन

प्रात :किरण संवाददाता

पटना: अभिनय आर्ट्स द्वारा "रंगकार 2023" नाट्य महोत्सव सह "नागेश्वर सम्मान समारोह" का आयोजन स्थानीय कालिदास रंगालय में किया गया. रंग गुरुकुल पटना कि प्रस्तुति "खालिद की खाला" की प्रस्तुति की गई। इस नाटक के लेखक बेगम कुदसिया जैदी और निर्देशक राजवीर गुंजन थे। खालिद अपनी वित्तीय समस्याओं से छुटकारा पाने के लिए अपनी खाला से मिलना चाहता है। वह अपनी गर्लफ्रेंड को लंच पर बुलाने के लिए भी उतना ही बेताब रहता है। यह महज संयोग है कि ये सहेलियाँ जो अत्यधिक रूढ़िवादी और कठोर अनुशासनप्रिय खान बहादुर सिब्तैन की निगरानी में रहते हैं। प्यारे दोस्त खालिद की खाला की मौजूदगी में अपनी प्रेमिकाओं को दोपहर के भोजन पर आमंत्रित करने की योजना बनाते हैं। जैसे ही दोपहर के भोजन की तैयारी चल रही थी, खालिद को अपनी खाला से एक और संदेश मिला कि उनके आने में देरी हो गई है। सुरया और नुसरत ने अपने प्रेमियों से स्पष्ट रूप से कहा था कि वे दोपहर के भोजन के लिए केवल एक महिला की उपस्थिति में आएंगे। निराश होकर, खालिद और अहमद अब अपनी प्रेमिकाओं से मिलने की सारी आशा खो दी है। हालाँकि, आशा की किरण तब नजर आती है जब उनके दोस्त बाबाखान की एंट्री होती है। उन्हें एक शो में एक महिला के रूप में दिखना है। वह वेशभूषा के साथ रिहर्सल करना चाहते हैं।' दोस्त इस बात पर जोर देते हैं कि वह खालिद की खाला के रूप में काम करें। इसके साथ ही असली मजा शुरू होता है. लड़कियां सही समय पर पहुंचती हैं और खुश होती हैं कि उन्हें अपने प्रेमियों से मिलने के दौरान महिलाओं का साथ मिलता है। अपनी बेटी और भतीजी की हरकतों से गुस्सा होकर, सिब्तैन ने युवकों को लड़कियों को अपने कमरे में बुलाने के दुस्साहस के लिए गंभीर परिणाम भुगतने की धमकी दी। उसका सामना 'खालिद की खाला' से भी होता है और वह 'उसकी' शारीरिक भाषा पर मोहित हो जाता है। जल्द ही, उनके सख्त अनुशासक का मुखौटा उतर गया। वह 'उसकी' की ओर आगे बढ़ना शुरू कर देता है। असली खाला-बेगम जाफर शुस्तारो मदिनो- के आने के साथ स्थिति और भी जटिल हो जाती है, जो अपने लंबे समय से खोए हुए प्रेमी की तलाश में एक खूबसूरत युवा महिला के साथ आती है। इसमें अहमद के चाचा शामिल हैं, जो एक रेटायअर्ड फौजी हैं, जैसे ही वह बेगम जाफर से मिलता है, उसे उससे प्यार हो जाता है। कहानी अंत में असली खाला के आने के बाद सब को ये पता चलता है की असली खाला तो कोई और है ये तो बाबाखान है। नाटक में कलाकारों की भूमिका में अहमद :- अविराज कपूर , खालिद :- शिव सिंह राजपूत, सिब्बतएन :- विष्णुदेव कुमार, सरगुलाम :- सौरभ सिंह, बाबाखान :- राजवीर गुंजन, बेगम :- अनामिका, नुसरत :- मुस्कान झा, सुरया :- पूजा सिंह राजपूत, रुखसाना :- रिंकी कुमारी, फकीरा :- गौतम कुमार निराला थे।

भाजपा को महिला सम्मान की बात करने का अधिकार नहीं : ललन

बोलें-भाजपा बताए कि उन्होंने साढ़े नौ वर्षों में किसका विकास किया ?

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

पटना। जदयू के राष्ट्रीय अध्यक्ष सह सांसद राजीव रंजन सिंह ललन सिंह ने गुरुवार को पत्रकारों से बातचीत करते हुए कहा कि भारतीय जनता पार्टी को महिला सम्मान के विषय में ज्ञान देने का कोई अधिकार नहीं है। उन्होंने कहा कि महिलाओं को सशक्त और संबल बनाने में मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की अहम भूमिका रही है। महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में नीतीश कुमार ने जो काम किया है, वह सिर्फ देश ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया में एक उदाहरण है। राष्ट्रीय अध्यक्ष ने कहा कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार सामाजिक न्याय के साथ विकास के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने सभी वर्गों के साथ न्याय किया है। आर्थिक रूप से पिछड़े 94 लाख परिवारों को मुख्यमंत्री ने 2 लाख देने की घोषणा की है। अतिपिछड़ा-पिछड़ा एवं अनुसूचित जाति-जनजाति के लोगो के लिए भी आरक्षण बढ़ाने का निर्णय लिया। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री ने सबका साथ और सबके विकास का नारा दिया था। लेकिन प्रधानमंत्री को बताना चाहिए कि उन्होंने साढ़े नौ वर्षों में किसका विकास किया? राष्ट्रीय अध्यक्ष ने कहा कि

बिहार विधानसभा में मुख्यमंत्री नीतीश कुमार प्रजनन दर के विषय में अपनी बात कह रहे थे और बिहार सरकार की उपलब्धियां को गिनवा रहे थे। इस दरमियान कुछ ऐसे शब्दों का प्रयोग हुआ, जो आमतौर पर नहीं होना चाहिए था। लेकिन मुख्यमंत्री को तुरंत अपनी गलतियों का एहसास हुआ और उन्होंने 24 घंटे के भीतर मीडिया में सार्वजनिक रूप से माफी मांगी। इसके बाद इस विषय पर हो हल्ला बंद हो जाना चाहिए था। राष्ट्रीय अध्यक्ष ने कहा कि प्रधानमंत्री ने भी महिलाओं के लिए निम्नस्तरीय वाक्यों का प्रयोग किया था। क्या इसके लिए कभी उन्होंने माफी मांगी?

मुख्यमंत्री नीतीश कुमार से पूर्व मध्य रेल के महाप्रबंधक अनिल खंडेलवाल ने की मुलाकात

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

पटना। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार से पूर्व मध्य रेल के महाप्रबंधक अनिल कुमार खंडेलवाल ने पटना में शिष्टाचार मुलाकात की। म्मुलाकात के दौरान महाप्रबंधक ने बिहार राज्य की महत्वपूर्ण रेल परियोजनाओं, यात्री सुविधा और रेल विकास से जुड़े पूर्व मध्य रेल की विभिन्न योजनाओं की प्रगति से मुख्यमंत्री को अवगत कराया। महाप्रबंधक ने छठ महापर्व पर यात्री सुविधा, सुरक्षा और सुगम रेल परिचालन के लिए पूर्व मध्य रेल की तैयारियों से भी मुख्यमंत्री को अवगत कराया। महाप्रबंधक ने रेलवे के क्रिया-कलाप, यात्री सुविधा में और सुधार के उपायों तथा रेल विकास आदि से जुड़े विषयों पर मुख्यमंत्री से मार्गदर्शन प्राप्त किया।

एकत्व का भाव मजबूत रहने पर ही हम श्रेष्ठ रहेंगे : राज्यपाल

राजभवन में हुआ उत्तराखंड दिवस का आयोजन

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

पटना। राज्यपाल राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने राजभवन बिहार के दरबार हॉल में एक भारत, श्रेष्ठ भारत के तहत आयोजित उत्तराखंड के स्थापना दिवस कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि हम सभी भारतवासी राष्ट्रीय एकता के सूत्र से बँधे हुए हैं, हम सब एक हैं। इस भाव को उजागर करने की आवश्यकता पर बल देते हुए उन्होंने कहा कि एक भारत, श्रेष्ठ भारत जैसे कार्यक्रमों के आयोजन से हमारी राष्ट्रीय एकता की भावना का प्रकटीकरण होता है। राज्यपाल ने कहा कि भारत जब-जब एक होता है तब-तब श्रेष्ठ होता है। एकत्व का भाव मजबूत रहने पर ही हम श्रेष्ठ रहेंगे। हमारे देश की गुलामी का कारण एकता का अभाव ही रहा है। उन्होंने कहा कि सांस्कृतिक एकता हमारे मन के भीतर होती है। हम सब भारतमाता की संतान हैं और हमें एकत्व के भाव को जागृत करने की आवश्यकता है। राज्यपाल कहा कि भारत के सभी राज्यों में अन्य प्रदेशों के लोग रहते हैं और धीरे-धीरे वहाँ की संस्कृति के साथ तादात्म्य स्थापित कर लेते हैं। उन्होंने बिहार में रह रहे उत्तराखंड के लोगों को आपस में मिलने-जुलने पर जोर देते हुए कहा कि इससे एकत्व का भाव बढ़ता है और धीरे-धीरे इसका विस्तार होता जाता है। अन्य राज्यों के लोगों को भी ऐसा करना चाहिए। हमें दूसरे राज्यों की भाषायें भी सीखनी चाहिए। इससे एकत्व का सूत्र उजागर होता हैं। राज्यपाल ने इस अवसर पर भारतमाता के चित्र पर माल्यार्पण किया। कार्यक्रम में विभिन्न विश्वविद्यालयों के कुलपतिगण, राज्यपाल के प्रधान सचिव रॉबर्ट एल चोंग्थू, बिहार में पदस्थापित उत्तराखंड के पदाधिकारीगण एवं उनके परिजन, बिहार में पढ़ाई कर रहे उत्तराखंड की छात्र-छात्राएं तथा राज्यपाल सचिवालय के पदाधिकारीगण एवं कर्मीगण उपस्थित थे।

महत्वपूर्ण मुद्दों से सदन को भटकाना चाहते हैं भाजपा सदस्य : श्रवण

- बोलें-संसदीय प्रणाली में उनका भरोसा नहीं

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

पटना। ग्रामीण विकास मंत्री सह बिहार विधान सभा में सत्तारूढ़ दल के मुख्य सचेतक श्रवण कुमार ने वर्तमान सत्र में सदन की कार्यवाही को विपक्षी सदस्यों द्वारा वाधित किये जाने पर नाराजगी जाहिर करते हुए कहा है कि दोनों सदनों की कार्यवाही लगातार विपक्ष के हंगामें के कारण भेंट चढ़ जा रही है। वे सदन में कोई मुद्दा नहीं उठाते हैं, बल्कि शोर-गुल एवं व्यवधान उत्पन्न कर अल्पसूचित एवं तारांकित प्रश्न में सम्मिलित जनता के महत्वपूर्ण सवालों का उत्तर भी नहीं होने देते हैं। प्रश्नकाल जैसे महत्वपूर्ण अवधि में सरकार सभी प्रश्नों का जबाब लेकर उपस्थित होती है, लेकिन बीजेपी एवं अन्य विपक्षी दलों के सदस्य इन महत्वपूर्ण विषय को वाधित कर अपना एजेंडा चलाने का प्रयास करते हैं। सदन में जब मुख्यमंत्री का वक्तव्य हो रहा था, तब इस पर किसी भी विपक्षी सदस्यों ने आपत्ति नहीं की बल्कि वे खुशी जाहिर कर रहे थे, लेकिन जब उन्हें दिल्ली से आलाकमान का निर्देश मिला तब वे उनके ईशारे पर शोर-गुल कर सदन को अव्यवस्थित कर रहे हैं। वे सदन के अन्दर तथा सदन के बाहर महत्वपूर्ण मुद्दों से सदन को भटकाना चाहते हैं। सदन के अन्दर बेंच, कुर्सी, मेज को क्षति पहुँचानें, कागज को फाड़ने, असंसदीय भाषा का प्रयोग कर असंवैधानिक कार्यों में लगे हुए हैं। संसदीय प्रणाली में उनका भरोसा नहीं है। भारतीय जनता पार्टी की हताशा, निराशा एवं बैचैनी का ही यह प्रतिफल है। जब देश के प्रधानमंत्री बेटी पढ़ाओं-बेटी पटाओं जैसे अभद्र शब्दों का प्रयोग करते हैं तब देश शर्मशार नहीं होता है। भारतीय जनता पार्टी के नेता ब्रजभूषण सिंह पर जब महिला खिलाड़ियों के शोषण का आरोप लगता है, तब भी देश शर्मशार नहीं होता है। भारतीय जनता पार्टी के कुछ नेताओं ने इस तरह के कृत्य से देश को शर्मशार किया है, यह हमलोगों को समझने की जरूरत है।

आरक्षण पर गरीबों की पीठ में खंजर घोंप रही है भाजपा : राजीव

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

- बोलें-आरक्षण रुकवाने के लिए अपने समर्थकों को कोर्ट भेज सकती है भाजपा

पटना। जदयू के राष्ट्रीय महासचिव व प्रवक्ता राजीव रंजन ने कहा है कि एक तरफ भाजपा के नेता गरीबों का हितैषी बनने का नाटक करते हैं वहीं दूसरी तरफ नीतीश सरकार के आरक्षण का दायरा बढ़ाने की घोषणा से ही इनके सीने में आग धधक गयी है। आरक्षण से पिछड़े-अतिपिछड़े व दलितों को मिलने वाले अधिकार की बात सोच कर ही इनका दिमाग मतिशुन्यता का शिकार हो गया है। यही वजह है कि यह लोग बिना वजह के मुद्दों पर पटना से दिल्ली तक छाती पीट रहे हैं। यह दिखाता है कि भाजपा की कथनी और करनी में कितना भारी अंतर है। उन्होंने कहा कि वास्तव में जातिगत गणना के बाद नीतीश सरकार का आरक्षण बढ़ाने का निर्णय आज पूरे देश में चर्चा का विषय बन गया है। देश के सभी राज्यों में ऐसी ही मांग जोर पकड़ने लगी है। दूसरी तरफ हमेशा से पिछड़े-अतिपिछड़े व दलितों को आरक्षण के विरोध में खड़ी रहने वाली भाजपा किसी भी कीमत ऐसा नहीं होने देना चाहती। इसी लिए यह लोग हंगामा करके आरक्षण के मुद्दे पर चल रही चर्चा को भटकाने के एजेंडे पर जुट चुके हैं। यह सीधा-सीधा गरीबों की पीठ में खंजर घोंपने जैसा है। भाजपा के अगले कदम की भविष्यवाणी करते हुए जदयू महासचिव ने कहा कि बिहार में जातिगत गणना और आरक्षण पर मुंह की खाने के बाद भाजपा के नेता अब निश्चय ही इस निर्णय को कोर्ट या किसी दूसरे तरीके से रुकवाने का हरसंभव प्रयास करेंगे। इस बात की पूरी उम्मीद है कि खुद पर्दे के पीछे रहते हुए यह लोग अपने समर्थकों से इसके खिलाफ कोर्ट में केस करवा देंगे। याद करें तो जातिगत गणना के मुद्दे पर भी इन्होने ऐसा ही किया था। राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग आयोग की सिफारिश और सामाजिक न्याय मंत्रालय की संसदीय समिति के समर्थन के बाद भी इन्होनें उसकी राह में रोड़े अटकाने जारी रखे थे। लेकिन भाजपा यह जान ले कि काठ की हांडी बार-बार चूल्हे पर नहीं चढ़ती। बिहार सरकार उसके किसी भी गरीब विरोधी म्ंसूबे को कामयाब नहीं होने देगी।

पदाधिकारियों के अवकाश पर 10 नवंबर से 20 नवंबर तक लगी रोक

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

पटना। जिलाधिकारी डॉ. चन्द्रशेखर सिंह द्वारा दीपावली एवं छठ महापर्व के मद्देनजर जिला, अनुमंडल व प्रखंड स्तरीय सभी पदाधिकारियों व तकनीकी पदाधिकारियों, पर्यवेक्षीय स्तर के पदाधिकारियों के अवकाश पर दस नवंबर से बीस नवंबर तक रोक लगायी गयी है। डीएम डॉ. सिंह ने कहा कि आगामी पर्व-त्योहार के अवसर पर विधि-व्यवस्था संधारण हेतु अनुमंडलवार वृहत रूप से दण्डाधिकारियों की प्रतिनियुक्ति की जा रही है। इस अवसर पर जिला मुख्यालय स्तर से लेकर अनुमंडल स्तरीय, क्षेत्रीय पदाधिकारियों का अपने-अपने मुख्यालय में उपस्थित रहना विधि-व्यवस्था के दृष्टिकोण से काफी महत्वपूर्ण है। अतएव कार्यहित में उपर्युक्त आदेश जारी किया गया है। यदि किसी पदाधिकारी, तकनीकी पदाधिकारी, पर्यवक्षक स्तरीय पदाधिकारी को विशेष परिस्थिति में अवकाश की आवश्यकता पड़ती है तो वे वरीय प्रभारी उचित माध्यम से स्पष्ट कारण का उल्लेख करते हुए अवकाश आवेदन जिलाधिकारी के कार्यालय में प्रस्तुत करेंगे एवं अनुमति प्राप्त होने के उपरांत ही मुख्यालय छोड़ेंगे। यह आदेश तत्काल प्रभाव से प्रभावी है।

एससी,एसटी सब प्लान के लिए बने कानून : लक्ष्मणैया

- दलितों को शिक्षा रोजगार का अधिकार मिले : सत्यदेव

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

पटना। खेत एवं ग्रामीण मजदूर संगठनों और दलित एवं अंबेडकरवादी संगठनों की ओर से पटना के आइएमए हाल में दलित अधिकार सम्मेलन का आयोजन किया गया। सम्मेलन का उदघाटन करते हुए दलित स्टडी सेंटर के लक्ष्मणैया ने कहा कि बिहार में एससी,एसटी सब प्लान का प्रभावी क्रियान्वयन नहीं हो रहा है।आंध्र,तेलंगाना और कर्नाटक में इसके शिक्षा के क्षेत्र में बहुत ही सकारात्मक परिणाम दिखा है। बिहार में इसको लेकर कानून बनना चाहिए। माले के 12 विधायक के साथ लेफ्ट के अन्य विधायक और दलित विधायक सांसद इसमें बड़ी भूमिका निभा सकते हैं। उन्होंने कहा कि बिहार में वामपंथी आंदोलन मजबूत है, इसके साथ दलित आंदोलन को एका बनाने की जरूरत है। समय की मांग है कि भारत के संविधान के पक्ष में खड़े सभी लोग एक साथ आएं। अखिल भारतीय खेतिहर मजदूर यूनियन के नेता डॉक्टर बिक्रम सिंह ने कहा कि दलित अधिकारों के लिए 4दिसंबर को जंतर मंतर पर महा जुटान होगा। मांग पत्रों के साथ करोड़ों हस्ताक्षर के साथ देशभर से लोग दिल्ली में जुटेंगे। रिटायर्ड अधीक्षण अभियंता हरिकेश्वर राम ने कहा कि आजादी के 75 वर्ष के बाद भी हर क्षेत्र में दलितों की हिस्सेदारी काफी कम है। उनकी हिस्सेदारी दावेदारी के बिना समतामूलक समाज के सपनों को पूरा नही किया जा सकता है। इस मौके पर बोलते हुए खेग्रामस के राष्ट्रीय अध्यक्ष सह विधायक सत्यदेव राम ने कहा कि जमीन, वास आवास और शिक्षा के अधिकारों की गारंटी के बिना दलित गरीबों का मुकम्मल विकास असंभव है। प्रोफेसर रमाशंकर आर्य ने कहा कि संविधान लोकतंत्र खतरे में है, इसलिए सबों को साझे संघर्ष को बढ़ाना होगा। सम्मेलन को विधायक मनोज मंजिल, विधायक अजय कुमार, श्याम भारती, शत्रुघ्न सहनी, जीबछ पासवान, केदार पासवान आदि ने संबोधित किए।सम्मेलन का संचालन ओमप्रकाश मांझी और भोला प्रसाद दिवाकर ने किया।

रक्तदान के प्रति जागरूक होना आवश्यक : हरओम

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

जमुई। सदर प्रखंड के नीमनवादा गांव निवासी अखिल भारतीय युवा कुशवाहा समाज (भारत) प्रदेश अध्यक्ष सह जदयू प्रदेश महासचिव श्रम एवं तकनीकी प्रकोष्ठ हरिओम कुशवाहा ने गुरूवार को पारस अस्पताल पटना जाकर जरुरतमंद को रक्त दान किए। हरिओम कुशवाहा प्रत्येक तीन महीने पर रक्तदान करते है। विगत तीन माह पूर्व भी अलीगंज निवासी की सड़क दुर्घटना में घायल व्यक्ति को भी रक्तदान कर मदद किए। हरिओम कुशवाहा ने कहा कि एक दूसरे के काम आना ही सच्ची मानवता है। समाज के सभी लोगों को इस तरह का प्रयास कर लोगों की मदद करनी चाहिए। श्री कुशवाहा ने बताया कि एबीवायकेएस ब्लड बैंक संस्था के संयोजक नागमणि कुशवाहा के माध्यम से रक्तदान शिविर आयोजित कर लोगों को रक्त दान के लिए जगरूकता अभियान भी चलाते है।

एक दिवसीय उद्यमिता जागरूकता कार्यक्रम का हुआ आयोजन

एमएसएमई द्वारा राजकीय महिला महाविद्यालय गुलजरबाग में कार्यक्रम आयोजित

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

पटना। एमएसएमई द्वारा गुरुवार को राजकीय महिला महाविद्यालय गुलजरबाग में एक दिवसीय उद्यमिता जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें विभिन्न आयु वर्ग के प्रतिभागियों ने भाग लिया। जागरूकता कार्यक्रम का उद्देश्य, उद्यमियों, भावी उद्यमियों, छात्रों व छात्राओं के बीच उद्यमिता के महत्व, प्रक्रियाओं, इस संबंध में विभिन्न सरकारी योजनाओं एवं बिहार राज्य में एमएसएमई क्षेत्र को बढ़ावा देने के लिए उपलब्ध वित्तीय सहायता एवं विभिन्न प्रक्रियाओं के बारे में जागरूकता उत्पन्न करना था। इस कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ जयश्री, प्राचार्या, राजकीय महिला महाविद्यालय, रविकांत, सहायक निदेशक, सुमन शेखर, महासचिव, लघु उद्योग भारती, बिहार, डॉ. सफीउल्लाह, सहायक प्रोफेसर, चाणक्य राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय, अनिता मिनिक, सहायक प्रोफेसर, संजीव आजाद, सहायक निदेशक इत्यादि मौजूद रहे। कार्यक्रम संयोजन एवं समन्वयन सहायक निदेशक रविकांत ने किया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए रविकांत सहायक निदेशक ने कार्यक्रम के उद्देश्य के बारे में विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने उद्यमिता का महत्व, प्रक्रियाओं, इस संबंध में विभिन्न सरकारी योजनाओं के बारे में जानकारी दी। रविकांत ने उद्यमियों एवं भावी उद्यमियों को बिहार राज्य मे एमएसएमई क्षेत्र को बढ़ावा देने के लिए भारत सरकार एवं बिहार सरकार द्वारा चलाये जाने वाली योजनाओं जैसे प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम, मुद्रा, स्टार्टअप, मुख्यमंत्री उद्यमी योजना, मुख्यमंत्री क्लस्टर योजना एवं जिला मे प्रधानमंत्री स्वरोजगार सृजन कार्यक्रम सफलता में जिला उद्योग केन्द्र की भूमिका के बारे में जानकारी दी एवं पटना जिला में विभिन्न औधोगिक सम्भावनाओं के बारे में विस्तृत जानकारी दी। सुमन शेखर ने विभिन्न उदाहरणों के माध्यम से उद्यमिता के लिए उपस्थित प्रतिभागियों को प्रेरित किया। संजीव आजाद ने जिला में चलाये जाने वाली विभिन्न योजनाओं में बैंको द्वारा दी जाने वाली वितीय सहायता एवं जिला अग्रणी बैंक की भूमिका और बैंकों द्वारा चलाये जाने वाली अन्य स्कीम के बारे में विस्तृत जानकारी दी। कार्यक्रम में रविकांत ने संबोधित करते हुए हर संभव सहायता देने के लिए प्रतिभागियों को भरोसा दिया एवं उनके सवालों का निराकरण किये। कार्यक्रम का विधिवत समापन डॉ कुमारी निमिषा, सहायक प्रोफेसर द्वारा धन्यवाद ज्ञापन द्वारा किया गया क कार्यक्रम का समन्वयन रविकांत, सहायक निदेशक द्वारा किया गया।

भारोत्तोलन खेल प्रतियोगिता का खिताब जहानाबाद ने जीता

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

पटना। कला, संस्कृति एवं युवा विभाग एवं बिहार राज्य खेल प्राधिकरण के संयुक्त तत्वावधान में जिला प्रशासन पटना द्वारा आयोजित राज्य स्तरीय (अन्तर जिला) विद्यालय भारोत्तोलन खेल प्रतियोगिता 2023-24 का ओवरऑल का खिताब जहानाबाद ने कुल 63 अंक प्राप्त कर जीता। वहीं सारण ने 42 अंक तथा नवादा ने 34 अंक प्राप्त कर क्रमशः दूसरे और तीसरे स्थान पर रही। इस प्रतियोगिता में जहानाबाद ने कुल 7 स्वर्ण, 7 रजत एवं 7 कांस्य पदक वहीं सारण ने 5 स्वर्ण, 5 रजत एवं 2 कांस्य तथा नवादा ने 4 स्वर्ण, 3 रजत एवं 5 कांस्य पदक जीता। स्थानीय पाटलीपुत्र स्पोर्ट्स कॉम्पलेक्स में गुरूवार को संपन्न हुए प्रतियोगिता के पुरस्कार-सह-समापन समारोह के मुख्य अतिथि अरूण कुमार सिन्हा, विधायक, कुम्हरार, पटना ने विजेता खिलाड़ियों को पुरस्कृत किया। अपने संबोधन में उन्होंने खिलाड़ियों की हौसला अफजाई करते हुए अनुशासन के साथ कड़ी मेहनत करने की सलाह देते हुए उम्मीद जतायी कि आपही में से कल कोई खिलाड़ी अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर देश एवं राज्य का नाम रौशन करेगा। प्रतियोगिता के आयोजन सचिव-सह-जिला खेल पदाधिकारी, पटना ओम प्रकाश ने मुख्य अतिथि को पौधा एवं स्मृति चिन्ह प्रदान कर स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन एनआईएस एथलेटिक्स प्रशिक्षक अभिषेक कुमार ने किया। इस अवसर पर भारोत्तोलक प्रशिक्षक, राजेन्द्र प्रसाद, सुदर्शन कुमार, मनोज कुमार, अशोक कुमार, मनीषा यादव, किरण कुमार झा, धीरेन्द्र पासवान, दीपक कुमार,सुरज कुमार सहित कई गणमान्य लोग उपस्थित थे।

आने वाली पीढ़ियों के स्वर्णिम भविष्य का साक्षी बन रहा बिहार : उमेश

बोलें- आरक्षण की सीमा बढ़ने से न्याय के साथ विकास के लक्ष्य को बल मिलेगा

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

पटना। बिहार विधानसभा में सर्वसम्मति से आरक्षण संसोधन विधेयक-2023 पारित होने पर बिहार जदयू के प्रदेश अध्यक्ष उमेश सिंह कुशवाहा ने खुशी जताते हुए कहा कि यह बिहार की जनता के लिए सबसे बड़ा दिन है। इतिहास के पन्नों में 9 नवंबर की तारीख और मुख्यमंत्री नीतीश कुमार का नाम हमेशा के लिए दर्ज हो गया। प्रदेश अध्यक्ष ने कहा कि जाति आधारित गणना के आधार पर आरक्षण के दायरे को बढ़ाने का ऐतिहासिक फैसला सामाजिक न्याय के साथ विकास के लक्ष्य को साकार करने में सार्थक और निर्णायक भूमिका निभायेगा। प्रदेश अध्यक्ष ने कहा कि इस अतिमहत्वपूर्ण विधेयक को पारित कराने हेतु सभी सदस्यों का हम आभार प्रकट करते हैं। आगे उन्होंने कहा कि हिस्सेदारी के अनुरूप आनुपातिक भागीदारी आज समय की सख्त मांग है। चुकी बीते सालों में अनुसूचित जाति-जनजाति एवं पिछड़ा-अतिपिछड़ा की आबादी बढ़ी है। लिहाजा इसकी जरुरतों को समझते हुए नीतीश कुमार के नेतृत्व में राज्य सरकार ने अनुसूचित जाति के आरक्षण को 16 फीसदी से बढ़ाकर 20 फीसदी, अनुसूचित जनजाति के आरक्षण को 1 फीसदी से बढ़ाकर 2 फीसदी को और पिछड़ा-अतिपिछड़ा के आरक्षण को 27 फीसदी से बढ़ाकर 43 फीसदी करने का युगान्तकारी निर्णय लिया है। प्रदेश अध्यक्ष ने कहा कि हमारी पार्टी राष्ट्रपिता महात्मा गांधी, जयप्रकाश नारायण, राम मनोहर लोहिया, डॉ भीमराव अंबेडकर एवं कपूर्री ठाकुर की समाजवादी विचारधारा से प्रेरित है। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार से भी हमारी मांग है कि देशभर में जातीय जनगणना के कार्य को पूर्ण करवाकर एवं आरक्षण के दायरे को बढ़ाकर अनुसूचित जाति-जनजाति एवं पिछड़ा-अतिपिछड़ा की अनुपातिक भागीदारी को सुनिश्चित करें।

तीन दिवसीय किसान मजदूर महापड़ाव को लेकर बैठक

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

पटना। केदार भवन में केन्द्रीय श्रमिक संगठनों और संयुक्त किसान मोर्चा की संयुक्त राज्यस्तरीय बैठक आयोजित हुई। बैठक में 26-27-28 नवंबर को पटना में तीन दिवसीय किसान मजदूर महापड़ाव के कार्यान्वयन पर विस्तृत चर्चा की गई। बैठक की अध्यक्षता किसान संगठन की तरफ से राजेंद्र पटेल और ट्रेड यूनियन की तरफ से सूर्यकर जितेंद्र ने की। 26-27-28 नवंबर 2023 को बिहार के हजारों किसान और मजदूर एक ऐतिहासिक करवाई में पटना के गर्दनीबाग में एकजुट होंगे। इस महापड़ाव के माध्यम से किसान और मजदूर एमएसपी की कानूनी गारंटी करने, चार श्रम संहिताओं को रद्द करने, योजनाकर्मियों को नियमित करने, पुरानी पेंशन स्कीम (ओपीएस) को पुनः बहाल करने, बिहार में एपीएमसी अधिनियम को पुनः बहाल करने, बँटाईदार किसानों का निबंधन करने, किसानों को उनकी जमीन का उचित मुआवजा देने, युवाओं को रोजगार देने, महंगाई को कम करने, खाद्य सुरक्षा की गारंटी करने, सहित अन्य मांगों को उठाएंगे। बैठक में बिहार के आंगनवाड़ी कार्यकताओं के आंदोलन के समर्थन में प्रस्ताव पारित किया गया। बिहार की लाखों आंगनवाड़ी कार्यकर्ता अपनी चार सूत्रीय मांगों के लिए पिछले दो दिन से पटना में प्रदर्शनरत हैं। आशा, एमडीएम रसोईया, आंगनवाड़ी, सेविका, सहायिका सहित सभी योजनाकर्मियों को नियमित करने की मांग किसान मजदूर महापड़ाव की प्रमुख मांग है।

भवन निर्माण विभाग
कार्यपालक अभियंता, केन्द्रीय भवन प्रमण्डल, पटना का कार्यालय

बिहार सरकार

अल्पकालीन निविदा आमंत्रण सूचना संख्या– 77 वर्ष 2023–24

1. विज्ञापनदाता का पदनाम एवं पता : कार्यपालक अभियंता, केन्द्रीय भवन प्रमण्डल, पटना।
2. परिमाण–विपत्र बिक्री की तिथि एवं समय : दिनांक 17.11..2023 को 12:00 बजे अपराह्न तक।
3. निविदा प्राप्ति की तिथि एवं समय : दिनांक 18.11..2023 को 03:00 बजे अपराह्न तक।
4. निविदा खोलने की तिथि एवं समय : दिनांक 18.11..2023 को 03:30 बजे अपराह्न।
5. परिमाण विपत्र बिक्री का स्थान : (क) अंचल कार्यालय, दक्षिण बिहार भवन अंचल, पटना। (ख) प्रमंडल कार्यालय, केन्द्रीय भवन प्रमंडल, पटना। (ग) संबंधित अवर प्रमंडल कार्यालय।
6. निविदा प्राप्ति का स्थान : क्रमांक (5) के वर्णित स्थान (क) एवं (ख) पर।
7. कार्य का विवरणी :–

क्र०	कार्य का नाम	प्राक्कलित राशि (लाख रू० में)	अग्रधन की राशि (रू० में)	परिमाण विपत्र का मू० (रू० में) (अप्रत्यर्पणीय)	कार्य समाप्ति की अवधि
1	Renovation of Room No.- 54, 55 and 56 of Minor Irrigation Department at Vikash Bhawan, Patna for the year 2023-24.	10.32	20,700=00	2,500=00	01 माह
2	Renovation of Flooring Work and POP Ceiling Work in ACS Chamber of MWRD Dept. at Vikash Bhawan, Patna for the year 2023-24.	12.05	24,100=00	2,500=00	01 माह

8. विशेष सूचना के लिए सूचनापट्ट या बेबसाईट www.state.bihar.gov.in/prd.bihar देखें या अधोहस्ताक्षरी कार्यालय में सम्पर्क करें।

PR- 11571 (B C D) 2023-24

कार्यपालक अभियंता,
केन्द्रीय भवन प्रमण्डल, पटना।

नशे से बनानी दूरी है, क्योंकि परिवार जरूरी है

बिहार संग्रहालय में चल रहे बाल फिल्म महोत्सव का हुआ समापन

फिल्मों को प्रोत्साहित करने की दिशा में कार्य कर रही सरकार : हरजोत

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

पटना। बिहार संग्रहालय में चल रहे बाल फिल्म महोत्सव का गुरूवार को समापन हुआ। इस दौरान कला, संस्कृति एवं युवा विभाग की अपर मुख्य सचिव हरजोत कौर बम्हरा, पदमश्री सुधा वर्गीस, लोटस ब्लूम फिल्म के निर्देशक प्रतीक शर्मा, बाल कलाकार अथ शर्मा, फिल्म क्रिटिक और पटना विश्वविद्यालय के अकेडमिशियन प्रशांत रंजन उपस्थित रहे। अपर मुख्य सचिव हरजोत कौर बम्हरा ने कहा कि फिल्में सामाजिक व्यवहार को सकारात्मक रूप से प्रभावित करने का सबसे अच्छा तरीका है। किसी भी भाषा में बनी फिल्म के लिए उसके स्किप्ट का गुणवत्ता पूर्ण होना आवश्यक है। बिहार के दोनों फिल्मकरों को उनके फिल्मों के लिए प्रोत्साहित करते हुए कहा कि जरुरत है स्थानीय स्तर पर विभिन्न भाषाओं के गुणवत्तापूर्ण और फिल्मों का निर्माण किया जाए। बिहार में प्रतिभा की कमी नहीं है जरुरत है बस उसे सही ढंग से प्रोत्साहित कर उभारने और विकसित करने की और इस दिशा में बिहार राज्य फिल्म विकास एवं वित्त निगम के द्वारा कार्य किया जा रहा है। बिहार सरकार विभिन्न भाषाओं की फिल्मों को प्रोत्साहित करने की दिशा में कार्य कर रही है। लोटस ब्लूम फिल्म के प्रदर्शन के बाद परिचर्चा में निर्देशक प्रतीक शर्मा ने कहा कि क्रिएटिविटी समाज और खास कर बच्चों और युवाओं के लिए बहुत ही आवश्यक है। स्वतंत्र फिल्मकारों के लिए स्थानीय भाषाओं में फिल्मों के निर्माण के लिए बजट एक बड़ी चुनौती है। फिल्म के बारे में विस्तृत रूप से चर्चा करते हुए उन्होंने बताया की जिस प्रकार कीचड़ में से कमल खिलता है उसी को आधार मान कर इस फिल्म का नाम रखा गया था। इसकी पूरी शूटिंग जहानाबाद के पंडुई में हुई है। परिचर्चा के दौरान यह सुझाव भी दिया गया की एक बाल फिल्म डिवीजन होने चाहिए जो इस प्रकार के कार्यक्रमों का नियमित रूप से आयोजन करता रहे। महोत्सव के समापन पर आज मैथिलि में बनी और विभिन्न फिल्म फेस्टिवल में सम्मानित फिल्म लोटस ब्लूम, झट आई बसंत और चिड़ियाखाना का प्रदर्शन किया गया।

भवन निर्माण विभाग
कार्यपालक अभियंता, केन्द्रीय भवन प्रमंडल, पटना का कार्यालय

बिहार सरकार

अल्पकालीन कोटेशन आमंत्रण सूचना संख्या– 123 वर्ष 2023–24

(विशेष शर्त्त मद एवं मात्रा के लिए वेबसाईट State.bihar.gov.in/prdbihar देखें)

समुचित श्रेणी मे निबंधित संवेदको/ख्याति प्राप्त फर्मों/कम्पनियों से दिनांक **23.11.2023** के अपराह्न 12.30 बजे तक निर्देशानुसार निम्नलिखित कार्यों के लिए मुहरबंद कोटेशन अधीक्षण अभियंता, दक्षिण बिहार अंचल, पटना का कार्यालय एवं अधोहस्ताक्षरी के कार्यालय में प्राप्त किया जाएगा और उसी दिन 3.00 बजे अपराह्न मे कोटेशनदात्ताओं या उनके द्वारा प्राधिकृत प्रतिनिधियों के समक्ष खोला जायेगा।

कोटेशन का मुल्य (रुपये में) प्रत्येक कार्य क्रमांक के कोटेशन–पत्र के साथ कोटेशन मूल्य ONLINE GOVERNMENT REVENUE AND ACCOUNTING SYSTEM (O-GRAS) के माध्यम से (कार्यपालक अभियंता, केन्द्रीय भवन प्रमण्डल, पटना) के पदनाम से जमा करना अनिवार्य होगा, जो कोटेशन प्रकाशन की तिथि के बाद का होना चाहिए। कोटेशन प्रकाशन के पूर्व के निर्गत ओ–ग्रास (O-GRAS) का कम्पयूटराईज्ड प्राप्ति रसीद पर कोई विचार नहीं किया जाएगा। कोटेशन मूल्य संवेदक के द्वारा कुल कोटेड राशि के अनुसार होगा, जो निम्न प्रकार है :– रू0 0 से रू0 50,000 तक– रू0 250/–, रू0 50,001 से रू0 2,50,000 तक– रू0 500/–, रू0 2,50,001 से रू0 5,00,000 तक– रू0 750/–, रू0 5,00,001 से रू0 10,00,000 तक– रू0 1,250/–, रू0 10,00,001 से रू0 15,00,000 तक– रू0 2,500/– एवं अग्रधन की राशि– 2% (कोटेड राशि का म

संक्षिप्त खबरें

जन समस्याओं को लेकर एनटीपीसी के सीईओ से मिले पूर्व मंत्री

मुजफ्फरपुर। स्थानीय जन समस्याओं को लेकर गुरुवार को भाजपा के वरिष्ठ नेता वह पूर्व मंत्री अजीत कुमार एनटीपीसी के मुख्य कार्यकारी अधिकारी ए के मनोहर से मुलाकात की।उन्होंने सी ईओ से सी एस आर की राशि प्राथमिकता के आधार पर स्थानीय विकास कार्यों पर अधिक खर्च करने का अनुरोध किया। पूर्व मंत्री ने सीईओ से मधुबन पोखर का जीर्णोद्धार, एन एच 28 नरसंडा चौक से पकड़ी सड़क का निर्माण, छठ दीपावली के अवसर पर नगर क्षेत्र सहित आजू-बाजू के छठ घाटों पर रोशनी एवं सजावट की व्यवस्था प्राथमिकता पर करने, थर्मल पावर से हो रहे प्रदूषण को नियंत्रण करने के लिए ठोस कदम उठाने , पाइप लाइन के लिए अधिग्रहण किया जा रहे जमीन का मुआवजा माननीय उच्च न्यायालय के निर्देश के आलोक में किसानों को आवासीय दर पर करने सहित अन्य कई प्रमुख मांगे रखी। उक्त मांगों के आलोक में मुख्य कार्यकारी अधिकारी ने प्राथमिकता के आधार पर सभी कार्यों की जानकारी प्राप्त कर उसे निष्पादित कराने का आश्वासन पूर्व मंत्री को दिया। इस मौके पर सामाजिक कार्यकर्ता मुरारी झा, रमेश ठाकुर, नंदन महतो, वार्ड पार्षद विजय राम, प्रभु गुप्ता एवं एनटीपीसी के महाप्रबंधक एच आर, अपर महाप्रबंधक एवं कई सीनियर मैनेजर उपस्थित थे।

पेट्रोल पंप के मैनेजर से दिनदहाड़े ढाई लाख की लूट

बोचहा।गायघाट थाना क्षेत्र के ईस्ट वेस्ट कॉरिडोर जारंग चौक के समीप इंडियन पेट्रो पंप के मैनेजर शम्भू कुमार के साथ बेखौफ बाइक सवार अपराधियों ने पुलिस को चुनौती देते हुए दिनदहाड़े बड़ी लूट की घटना को अंजाम दिया है, लूट के शिकार मैनेजर ने बताया कि गुरुवार की दोपहर करीब 12:30 बजे जरांग चौक के समीप पेट्रोल पंप से ढाई लाख रूपए बैंक में जमा करने जरहा था तभी बेरुआ पुल के समीप दो बाइक पर सवार चार बदमाशों ने घेर लिया और बाइक की डिक्की में रखे ढाई लाख रुपए लूट लिया और मुजफ्फरपुर की ओर चले गए, घटना की सूचना स्थानीय प्रशासन को दी गई मौके पर पहुंची पुलिस ने पंप के मैनेजर से पूछताछ की और मैनेजर को पुलिस अपने साथ घटना स्थल पर ले गई वहां भी पुलिस ने मैनेजर से काफी देर तक पूछताछ की, उसके बाद पुलिस मैनेजर को लेकर पेट्रोल पंप पर पहुंची और वहां पर लगे सीसीटीवी कैमरे का फुटेज के आधार पर अपराधियों को चिन्हित करने का प्रियास किया जरहा है, पूरे मामले को लेकर गाय घाट थाना अध्यक्ष मोनू कुमार ने बताया कि सीसीटीवी फुटेज के आधार पर छापामारी की जा रही है बदमाशों को जल्द गिरफ्तार कर लिया जाए गा।

प्याज भरा हुआ ट्रक पलटा, लोगों ने मचाया लूट

कल्याणपुर, समस्तीपुर। प्याज लदा हुआ एक ट्रक फतुहा से नेपाल ले जाने के क्रम में कल्याणपुर चौक से सटे कृषि फार्म के समीप गुरुवार की सुबह पलट गया। जब तक लोग कुछ समझ पाते तब तक आस-पास के लोगों ने लगभग 40 बैग प्याज गायब कर दिया। ट्रक पलटने सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंचकर प्याज को जब्त कर लिया गया। वहीं ट्रक को जेसीबी से ट्रक को सीधा कर लिया गया। वहीं पुलिस का बताना है कि प्याज लूट के बारे में कोई सूचना नहीं मिली है। वहीं थानाध्यक्ष राजन कुमार ने बताया कि जांच पड़ताल में बाद ही कुछ कहा जा सकता है।

राजद अतिपिछड़ा प्रकोष्ठ ने तेजस्वी के 34 वें जन्मदिन पर काटा 34 किलोग्राम का केक

प्रात : किरण संवाददाता

दरभंगा। राजद अतिपिछड़ा प्रकोष्ठ ने गुरुवार को उपमुख्यमंत्री तेजस्वी प्रसाद यादव का 34 वां जन्मदिन सर्किट हाउस में प्रदेश उपाध्यक्ष डॉ कुमार गौरब के नेतृत्व में एवं जिलाध्यक्ष अवधेश सहनी के अध्यक्षता में धूमधाम से मनाया। इस अवसर पर बिहार सरकार के पूर्व मंत्री अब्दुल बारी सिद्दीकी के मौजूदगी में राजद नेताओं ने तेजस्वी यादव के 34 वें जन्मदिन के अवसर पर 34 किलोग्राम का बहुमंजिला केक काटकर एक दूसरे को खिला कर बधाई दी।मौके पर राजद के राष्ट्रीय महासचिव सह बिहार सरकार के पूर्व मंत्री अब्दुल बारी सिद्दीकी ने कहा कि देखते ही देखते आज तेजस्वी यादव 34 वर्ष के हो गए।उनके 34 वें जन्मदिन पर अतिपिछड़ा प्रकोष्ठ के द्वारा 34 किलोग्राम का केक काटा गया जो काबिले तारीफ है। आज दरभंगा में कई जगहों पर उनका जन्मदिन मनाया जा रहा है।इन 34 वर्षों में उन्होंने कई चुनौतियों का सामना करते हुए पार्टी एवं सरकार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाया है।उनके नेतृत्व में बिहार लगातार आगे बढ़ रहा है।पूर्व मंत्री ने आगे कहा कि आज उनका जन्मदिन है और इस खुशी के मौके पर वे लगातार आगे बढ़ते रहें।

इस अवसर पर राजद अतिपिछड़ा प्रकोष्ठ के प्रदेश उपाध्यक्ष डॉ कुमार गौरब ने कहा कि तेजस्वी प्रसाद यादव लगातार अतिपिछड़ों के विकास के लिए काम कर रहे हैं।आज उनका 34वां जन्मदिन है और इस अवसर पर अति पिछड़ा प्रकोष्ठ के द्वारा 34 किलोग्राम का केक काटकर उत्सवी माहौल में उनका जन्मदिन मनाया गया है।डॉ गौरव ने आगे कहा कि वे जिस प्रकार से लगातार गरीब,पिछड़ा,अति पिछड़ा,दलित एवं अल्पसंख्यकों के लिए काम कर रहे हैं आगे भी करते रहेंगे।उनके नेतृत्व में राजद एवं बिहार लगातार आगे बढ़ रहा है।डॉ गौरब ने कहा कि 34 वर्ष के उम्र में ही उन्होंने समाज के दबे कुचले लोगों को हक दिलाने के लिए जातिगत जनगणना करा ऐतिहासिक काम किया।सभी दबे कुचले समुदाय के लोगों के लिए आरक्षण का दायरा बढ़ाकर उप मुख्यमंत्री ने इतिहास रचा है।डॉ गौरव ने आगे कहा कि वे आज बिहार का नेतृत्व कर रहे हैं उनलोगों की इच्छा है आगे चलकर देश की भी बागडोर संभालेंगे।ऐसी शुभकामना देते हैं।इस मौके पर जिलाध्यक्ष उदय शंकर यादव,पूर्व प्रत्यासी आर के चौधरी,कुमार राय,प्रदेश महासचिव हनुमान ठाकुर,भोला सहनी,मिथिलेश सहनी,गोपाल लाल देव,सुजीत गौरव,बबलू सहनी,कलीमुद्दीन राही,यासमीन खातून,इंरजीत कुमार,हरेराम लाल देव,रामबाबू लाल देव,चंद्रिका लालदेव,अमरेश कुमार अमर,संजय यादव,अरुण यादव,राजारमलाल देव,उदय यादव,मोहन यादव,विनोद लाल देव,धनंजय लाल देव,रईस अहमद सिद्दीकी,प्रेमचंद यादव, राजा पासवान,गंगा मंडल,सुभाष पासवान,मो जफर,मो तमन्ना,गुलाम हुसैन चीना, विक्रांत पंजियार, मो अफजल,राम सुंदर कामत समेत सैकड़ों राजद नेता एवं कार्यकर्ता भी मौजूद थे।

ऐतिहासिक होगा यादव महासभा का शताब्दी समारोह : डॉ. गोरेलाल

प्रात : किरण संवाददाता

घैलाढ़ आगामी 27 नवंबर 2023 को रोम पोप और मधेपुरा गोप की धरती पर बी एन मंडल स्टेडियम में प्रस्तावित अखिल भारतवर्षीय यादव महासभा के शताब्दी समारोह को ऐतिहासिक बनाने की तैयारी हेतु आयोजन समिति एवं प्रबुद्ध जनों की एक दिवसीय बैठक जिला परिषद के विवाह भवन में सम्पन्न हुई। बैठक को मुख्य अतिथि के रूप में डॉक्टर गोरेलाल प्रसाद यादव सेवानिवृत्त जिला पदाधिकारी ने संबोधित करते हुए कहा कि यादवों का अतीत अत्यंत विराट है।

बीसवीं सदी के मध्य में भारत चीन के बीच हुए युद्ध में हमारे पूर्वज भारतवर्षी यादव पराक्रमी शूरवीरों ने वतन विरोधी दुश्मनों को दाँत तले चना चबवाए थे। चीनी सैनिकों का दाँत खट्टे किए थे। लेकिन दुर्भाग्य है कि अन्य वर्गों का रेजिमेंट में तो बना लेकिन आज भी अहीर रेजिमेंट की माँग संघर्ष के दौर से गुजर रहा है।

उन्होंने कहा कि हमारी आबादी राज्य व देश में सर्वाधिक है लेकिन आज भी हम अपने वाजिब हक और अधिकार से वंचित हैं इस तरह के कई वाजिब सवालात हैं जो सामाजिक न्याय विरोधी ताकतों के लिए प्रश्न चिह्न बना हुआ है।

उसी के मद्देनजर अखिल भारतवर्षीय यादव महासभा के शताब्दी समारोह को ऐतिहासिक रूप से मनाने का कार्यक्रम तय हुआ है। यादव कुल के सभी लोगों को व्यक्तिगत सम्मान से ऊपर उठकर अपने समाज की लड़ाई के लिए इस कार्यक्रम में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करना समय की माँग है। बैठक की अध्यक्षता अखिल भारतवर्षीय यादव महासभा के जिला अध्यक्ष अरविंद कुमार यादव ने किया। संचालन अरविंद कुमार (कोषाध्यक्ष पूर्व मुखिया) ने किया। बैठक में पूर्व प्रमुख व राजद जिलाध्यक्ष जयकांत यादव, जिला परिषद अध्यक्ष श्रीमति मंजू देवी, मुखिया परमेश्वरी प्रसाद यादव, प्राचार्य डॉ. अशोक यादव, डॉ. (प्रो.) रामचंद्र यादव, डॉ (प्रो.) अरूण यादव, मुकेश कुमार व प्रमुख, डॉक्टर राजेश रतन मुन्ना, श्वेतकमल बौआ यादव, अरविंद अकेला, उमेश यादव पूर्व मुखिया, पंकज यादव, प्रिंस गौतम, अशोक यादव पूर्व प्रमुख, अजिर बिहारी पूर्व मुखिया, संजीव कुमार युवा नेता, सोनू यादव छात्र नेता, जापानी यादव, निशांत यादव, भूषण यादव, केडी यादव, पृथ्वीराज यदुवंशी, किशोर यादव, उमेश यादव, प्रकाश कुमार पिंटु, अरुण कुमार, मंजेश यादव, विकास विवेक, रविशंकर कुमार, परमानन्द यादव, ललन यादव, अमलेश कुमार यादव, माधव कुमार, निखिल कुमार, राहुल यादव, विवेक यादव, कुणाल किशोर, तरूण यादव, प्रिंस कुमार, विक्रम कुमार, बेचन यादव आदि उपस्थित थे।

बंधन बैंक कर्मी से लूट मामले का हुआ खुलासा

समस्तीपुर, प्रात : किरण संवाददाता

पुलिस ने पूसा थाना क्षेत्र के भुसकौल हरपुर वार्ड नंबर एक में बीते 31 अक्टूबर को बंधन बैंक कर्मी से 68 हजार 410 रुपए की हुई लूट की घटना में चार अपराधियों को गिरफ्तार किया है। उनके पास से पुलिस ने लूटी गई राशि का 11 हजार 500 रुपए, लूटा गया बैग व अन्य कागजात, घटना में प्रयुक्त एक बाइक और चार मोबाइल बरामद किया है। गिरफ्तार अपराधियों की पहचान मुजफ्फरपुर जिले के सकरा थाना क्षेत्र के बसंतपुर बखरी वार्ड नंबर 14 निवासी कौशल पाण्डेय के पुत्र आदित्य कुमार एवं मो० मुस्तफा के पुत्र मो० सज्जाद उर्फ छोटू और पूसा थाना के मलिकौर निवासी अमोद राय उर्फ प्रियतोष कुमार के पुत्र राजदीप कुमार उर्फ मिट्ठू व संतोष कुमार राय के पुत्र संगम कुमार के रूप में हुई है। सदर एसडीपीओ कार्यालय में गुरुवार को आयोजित प्रेस वार्ता में सदर डीएसपी संजय कुमार पाण्डेय ने मामले का खुलासा किया। सदर डीएसपी संजय कुमार पाण्डेय ने बताया कि लूट की घटना के बाद एसपी के निर्देश पर घटना के उद्भेदन के लिए एक विशेष टीम बनायी गई थी। विशेष टीम के द्वारा तकनीकी अनुसंधान एवं मानवीय आसूचना संकलन के आधार पर कांड के मुख्य साजिशकर्त्ता संगम कुमार एवं अपराधी राजदीप कुमार उर्फ मिठू को गिरफ्तार किया गया। विस्तृत पूछताछ में उन्होंने पुलिस को अपने अन्य साथियों का नाम बताया। जिसमें कांड के मुख्य लाइनर आदित्य कुमार एवं मो० सज्जाद उर्फ छोटू को पुलिस ने छापेमारी कर गिरफ्तार कर लिया। सदर डीएसपी संजय कुमार पाण्डेय ने बताया कि अपराधी संगम कुमार पूर्व में भी लूट कांड में जेल जा चुका है। वहीं राजदीप उर्फ मिट्ठू 2022 में पंजाबी कॉलोनी में एक शिक्षक पर गोली चलाने के मामले में जेल जा चुका है। पुलिस की छापेमारी टीम में सदर डीएसपी संजय कुमार पाण्डेय, पूसा थानाध्यक्ष चंदकात गौरी, डीआईयू शाखा प्रभारी मुकेश कुमार, पीएसआई प्रियरंजन कुमार एवं पीएसआई श्रेया कुमारी व पुलिस बल के अन्य जवान शामिल थे।

पिस्टल के बल पर सीएसपी से दो लाख 10 हजार की लूट

समस्तीपुर, प्रात : किरण संवाददाता

जिले में सीएसपी संचालक से लूट की हो रही ताबड़तोड़ घटनाओं पर लगाम लगाने में पुलिस विफल साबित हो रही है। अपराधियों ने एक के बाद एक लूट की कई घटनाओं को अंजाम देकर पुलिस की सुरक्षा व्यवस्था के दावों की हवा निकाल दी है। गुरुवार को बाइक सवार बेखौफ हथियारबंद तीन अपराधियों ने कपूर्रीग्राम थाना क्षेत्र के शंभूपट्टी में एक सीएसपी संचालक से दो लाख 10 हजार रुपए लूट लिया और फरार हो गए। घटना की सूचना मिलने के बाद पुलिस मामले की छानबीन में जुट गई थी। घटना के सम्बन्ध में कपूर्रीग्राम थानाध्यक्ष संजय कुमार सिंह ने घटना की पुष्टि करते हुए बताया कि शंभूपट्टी गांव में संचालित हो रहे सीएसपी से अपराधियों ने लूट की घटना की है। गुरुवार की दोपहर घटना के समय सीएसपी पर कई ग्राहक भी मौजूद थे। लेकिन अपराधियों के हाथ में पिस्टल रहने के कारण सभी डर गए थे। बताया गया कि दो लाख रुपए की लूटपाट करने के बाद तीनों अपराधी हथियार लहराते हुए फरार हो गए। कपूर्रीग्राम थानाध्यक्ष संजय कुमार सिंह ने कहा कि पुलिस मामले की जांच में जुटी है, जल्द ही पुलिस घटना में संलिप्त अपराधियों को गिरफ्तार कर मामले का खुलासा कर देगी। इस लूट की घटना के बाद क्षेत्र में हड़कंप मच गया है। स्थानीय लोगों के अनुसार सभी अपराधी लूट के बाद डढ़िया बेलार गांव के रास्ते गंगापुर ओर बाइक से फरार हो गए। हालांकि लोगों ने काफी दूर तक अपराधियों का पीछा किया लेकिन अपराधियों ने उन्हें पिस्टल से फायर करने का इशारा कर डरा दिया और तेजी से भाग निकले। घटना की सूचना मिलने के बाद कपूर्रीग्राम थानाध्यक्ष संजय कुमार सिंह, नगर थानाध्यक्ष विक्रम आचार्य एवं डीआईयू की टीम ने घटनास्थल का जायजा लिया। इसके बाद पुलिस टीम आसपास के सीसीटीवी कैमरों को खंगालने में जुट गई। इस संबंध में सीएसपी संचालक संजय राम ने बताया कि गुरुवार की दोपहर एक बजे करीब वह अपने सीएसपी में ग्राहकों के साथ लेन-देन कर रहे थे। इसी दौरान एक बाइक से आए तीन अपराधी पिस्टल के साथ उनके सीएसपी में घुस गए और पिस्टल के बल पर दो लाख 10 हजार रुपए भरा हुआ बैग लूट लिया और फरार हो गए।

जीविका की बदौलत परिवर्तित बिहार की खूबसूरत यादों के साथ विदा हुई अधिकारियों की टीम

प्रात : किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर।हरियाणा, राजस्थान और दिल्ली के प्रतिभागियों ने फिल्मों में देखी थी अलग छवि, हकीकत से रूबरू होने के बाद उनमें खुशियों का अलग एहसास हुआ। बिहार आने से पहले बिहार के बारे में बहुत गलत छवि थी, जब मैं बिहार के मुजफ्फरपुर पहुंचा तो यहां विकास के नए आयाम गढ़ते जीविका दीदियों को देखकर काफी खुशी हुई। लगभग इसी तरह की बातें बिहार से बाहर रहने वाले सभी प्रतिभागियों ने कही।विदित हो कि एसएससी द्वारा आयोजित सीजीएल की परीक्षा पास करने के बाद देश के कई राज्यों से प्रशिक्षण के लिए पिछले पांच दिनों तक 36 एएसओ की टीम मुजफ्फरपुर में जीविका के प्रशिक्षण कार्यक्रम में शामिल होने आई थी।दिल्ली के दुष्यंत तोमर ने कहा कि अपने घर वालों को जव बिहार के विकास के बारे में बताया तो उन्हें आश्चर्य हुआ। बिहार में इतनी तेजी से महिलाओं की बदौलत विकास हो रहा है। सड़क और बिजली पानी के साथ शानदार होटल और यहाँ के लोगों का आतिथ्य देखकर सब अचरज में पड़ गये। जी हां कुछ ऐसी ही मीठी यादों को सँजो कर विपार्ड द्वारा आयोजित सहायक अनुभाग अधिकारियों की टीम अपने प्रशिक्षण के आखिरी दिन मुजफ्फरपुर से गया के लिए रवाना हुई। पहली बार बिहार के मुजफ्फरपुर पहुंचे प्रशिक्षु जो पंजाब हरियाणा और दिल्ली के रहने वाले थे उन्होंने कुछ ऐसी ही बातें अपनी डीब्रीफिंग सेशन में जीविका के अधिकारियों के सामने रखी।गांव में घूम-घूम कर जीविका की गतिविधियों के साथ ही सरकार की अन्य योजनाओं की जमीनी हकीकत से रूबरू होने के बाद सभी अधिकारी काफी खुश दिखे। वही बागपत से आए विजय कुमार और मुजफ्फरनगर के विवेक चौधरी ने भी बिहार की बदलती छवि के बारे में लोगों से चर्चा की। हिमांशु जिंदल जो हरियाणा से आए थे उन्होंने कहा कि बिहार को मजदूर सप्लाई के लिए ही बाहर में लोग जानते थे लेकिन यहां आकर जाना कि क्यों हर शहर से आईएएस और आईपीएस में बिहारी छात्रों का चयन ज्यादा होता है।स्कूल में बच्चों से मिलने के बाद उनके आत्मविश्वास को देखकर दिल को काफी तसल्ली हुई। बनारस की रहने वाली तमन्ना अग्रवाल ने कहा कि बनारस में रहकर बिहार को जानती तो थी लेकिन गांव में इस कदर विकास हो रहा है यह देखकर बिहार की एक अलग छवि लेकर लौट रही हूँ। गुरुवार को प्रशिक्षण सत्र के आखिरी दिन जीविका की तरफ से डीब्रीफिंग सेशन में सभी को गिफ्ट के साथ विदाई दी गई। सभी प्रतिभागियों ने जीविका और जिला प्रशासन को धन्यवाद दिया।

चोरी के सामान के साथ दो अभियुक्तों को पुलिस ने गिरफ्तार किया

प्रात : किरण संवाददाता

मधुबनी रहिका थाना पुलिस ने गुप्त सुचना के आधार पर कांड मे फरार चल रहे अभियुक्त को खजौली थाना क्षेत्र से गिरफ्तार कर लिया गया. बताते चले की दिंनाक 23.08.23 को रात्रि में रामविलास पासवान के घर से सोना एवं मोबाइल के साथ अन्य सामान की चोरी मामले को लेकर रहिका थाना मे प्राथमिकी दर्ज की गई थी जिसमें अभियुक्त फरार चल रहा था.उक्त अभियुक्त को सोना,दो मोबाइल के साथ खजौली से गिरफ्तार कर लिया गया.गिरफ्तार चोर की पहचान मोहम्मद गुलाब पिता मोहम्मद रियासत ग्राम भकुवा थाना खजौली वहीं दूसरा कन्हैया कुमार साह पिता महेंद्र साह ग्राम कसमा मरार थाना खजौली को गिरफ्तार कर लिया गया.पुलिस निरीक्षक सह थानाध्यक्ष राजकिशोर कुमार ने बताया की गिरफ्तार अभियुक्त के विरुद्ध पूर्व मे डकैती, आर्म्स एक्ट जैसे कई आपराधिक मामला रहा है जिसमें खजौली थाना कांड संख्या 15/20, बाबूबरही थाना कांड संख्या 15/20, खजौली थाना कांड संख्या 152/22 मामला को लेकर प्राथमिक की दर्ज किया गया था.और इस मामले मे जेल भी जा चुका है.उक्त दोनों अभियुक्त को चोरी के सामान के साथ गिरफ्तार कर लिया गया है. गिरफ्तार दोनों अभियुक्त को न्यायिक हिरासत में लेने हेतु व्यवहार न्यायालय मधुबनी भेजा गया।

पीसी हाई स्कूल पटसा में हुआ बाल उत्सव का आयोजन

हसनपुर, प्रात : किरण संवाददाता

हसनपुर प्रखंड के पीसी हाई स्कूल पटसा में विगत वर्षों के भांति इस वर्ष भी बाल उत्सव का आयोजन किया गया। यूं तो यह कार्यक्रम बाल दिवस के अवसर पर किया जाता था, लेकिन त्यौहार सीजन के कारण यह दीपावली से पूर्व आयोजित की गई। कार्यक्रम का उद्घाटन विद्यालय के निदेशक राम किशोर राय तथा प्राचार्य संजीत कुमार सिंह ने दीप प्रज्वलित करके किया। निदेशक ने इस अवसर पर बच्चों को संबोधित करते हुए बताया की खेल स्वस्थ शरीर और स्वस्थ मन के लिए बहुत ही जरूरी चीज है। स्वस्थ रहकर ही हम अच्छी पढ़ाई भी कर सकते हैं। इस अवसर पर विद्यालय में विभिन्न तरह के कार्यक्रमों का आयोजन किया गया है ताकि सभी तरह के बच्चे इस बाल उत्सव में भाग ले सके। बाल उत्सव में प्रथम दिन छात्राओं के लिए सुई धागा रेस तथा चक्का फेंक रखा गया था, वहीं बालकों के लिए गोला फेक था। जिसमें बड़ी संख्या में छात्र-छात्राओं में भाग लेकर प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय स्थान प्राप्त किया। सभी सफलतम छात्रों को कार्यक्रम के समापन दिवस पर प्रशस्ति पत्र तथा मेडल से सम्मानित किया जाएगा। त्योहार के कारण कुछ कार्यक्रम दीपावली से पूर्व तथा शेष सभी कार्यक्रम छठ पूजा के बाद आयोजित की गई है। बच्चे बड़े उत्साहित होकर इस कार्यक्रम में भाग ले रहे हैं। बाल उत्सव लगभग 10 दिनों तक चलेगी, जिसमें सभी तरह के खेल लंम्बी कूद, ऊंची कूद, दौड़, क्रिकेट, वालीबाल, रंगोली, पेंटिंग तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम होंगे। मौके पर उदय चंद्र मिश्रा, जगन्नाथ झा, योगानंद मिश्रा, चंद्रशेखर झा, नीरज कुमार, शिवम कुमार, शशिकांत प्रसाद, ताराकांत मिश्रा सहित सभी शिक्षक और पहेली कुमारी, लाडो, सृष्टि, दिव्या सिंह, अंकिता कुमारी, रिया कुमारी सहित सैकड़ों छात्र उपस्थित थे।

टोटो चालक को नशा खिलाकर लूटा

सरायरंजन, प्रात : किरण संवाददाता

मुसरीघरारी थाने के रुदौली चौक के पास बुधवार शाम एक टोटो चालक बेहोशी की स्थिति में मिला है। जबकि उसका टोटो गायब है। माना जा रहा है कि कोई बदमाश उसे नशीली दवा खिलाकर उसका टोटो लेकर फरार हो गया है। बेहोश टोटो चालक जिले के उजियारपुर थाने के चकनिजाम गांव का मो० अनवर बताया है। सूचना पर पहुंचे परिवार वालों ने सदर अस्पताल में भर्ती कराया गया है। जहां उसका उपचार चल रहा है। टोटो चालक का पुत्र मो० अयूब ने बताया कि रोजना की तरह सुबह उनके पिता सवारी ढोने के लिए टोटो से घर से निकले थे। वह अपना टोटो खरीद रखा है। इसी दौरान शाम में सूचना मिली कि उनके पिता मुसरीघरारी थाने के रुदौली चौक के पास सड़क किनोर बेहोश मिले है। उनके पास मिले फोन के आधार पर पुलिस ने सूचना दी। जब वह रुदौली चौक पर पहुंचा तो उनके पिता बेहोशी की स्थिति में थे। लेकिन उनका टोटो गायब था। उन्होंने शक जाहिर किया है कि बदमाशों ने नशीली दवा देकर उन्हें बेहोश कर दिया है और उनका टोटो लेकर फरार हो गया है। टोटो के बारे में कोई जानकारी नहीं मिली है। बाद में आसपास के लोगों के सहयोग से उन्हें सदर अस्पताल लाया। जहां चालक का उपचार चल रहा है। मुसरीघरारी थानाध्यक्ष पंकज कुमार ने बताया कि चालक के बेहोशी की स्थिति में रहने के कारण अभी उनका बयान नहीं लिया जा सका है। जिससे यह जानकारी नहीं मिल पाई है। कि टोटो चालक को नशीली दवा देने वाला उन्हें कहा नशा खिलाया है। मामले की जांच की जा रही है।

रोग व्याधि नाशनी के नाम से प्रसिद्ध है कल्याणपुर मां काली की महिमा

विभूतिपुर, प्रात : किरण संवाददाता, रंजीत कुमार

विभूतिपुर प्रखंड के कल्याणपुर उतर पंचायत स्थित माँ काली की महिमा अपरंपार है। इनकी प्रसिद्धि रोग व्याधि नाशनी के रूप में बर्षो से है। ऐसे असाध्य रोग जो कहीं ठीक नहीं होता उसपर दवाई भी काम नहीं करता है तो थक हारकर जो रोगी माँ की शरण में आता है तो माँ की दुआ लगते ही दवा भी काम करने लगता है और माँ की दुआ और दवा से रोगी ठीक हो जाता है। रोग ठीक होते ही कल्याणपुर की काली मंदिर में प्रसाद चढ़ाने दूर-दूर से लोग आते हैं। इस मंदिर का इतिहास बहुत ही पुराना है। बर्ष 1893 से होती है यहाँ पूजा होती है। पहले थी बलि प्रथा परंतु अब बंद हो चुका है। स्थायी रूप से बनी है मंदिर में माँ की प्रतिमा जहाँ प्रति दिन सुबह शाम पूजा होती है। काली पूजा के दिन यानी 12 नवम्बर को प्रति बर्ष होने वाली विशेष पूजा ज तैयारी है शुरू है। ऐसी चर्चा है कि सन 1893 में कल्याणपुर गाँव के स्व० उमन पासवान को माँ सपना दी की उक्त स्थल पर मेरा पूजा अर्चना से गाँव खुशहाल एवं रोग मुक्त होगा। उस वक्त बराबर हैजा, फलेग, चेचक आदि रोग से बहुत से लोग मर रहे थे। तब वे यहाँ माँ की पूजा शुरू किए। झोपड़ी बनी और उसमें माँ की पिण्डी का पूजा अर्चना शुरू हुआ। जब बर्ष 1934 के भूकम्प में चारों तरफ क्षति हुआ। परन्तु चर्चा है कि भगत जी के ध्यान लगाने यहाँ सभी सुरक्षित रहे। पुनः 1941 में भी हैजा, प्लेग से लोग मरने लगे, सर्पदंश का प्रकोप बढ गया। तब भगत रहे धनी पासवान के ध्यान लगाने से माँ की कृपा से निदान हुआ। बालो पासवान, चेतन पासवान आदि को सर्पदंश से छुटकारा का ज्ञान प्राप्त माता की कृपा से हुआ। बाद में 1975 में ईट-खपरैल का गहवर छितन पंडित के द्वारा व पिण्डी निर्माण चेतन पासवान के सहयोग से हुआ। उस समय संतान की प्राप्ति होने पर और रोगमुक्त होने पर बलि प्रथा थी। जो आषाढ पूजा के चढ़ता था। बर्ष 1991 में प्रबुद्ध समाज सेवी को बैठक में कुशेश्वर पंडित अध्यक्ष, रामस्वार्थ पासवान कोषाध्यक्ष के नेतृत्व में माता का मूर्ति एवं मंदिर निर्माण शुरू हुआ और 1996 में फलाहारी बाबा पटना हनुमान मंदिर के पुजारी, रामविनय राय, रामस्वार्थ पासवान, कुशेश्वर पंडित, महेंद्र पंडित, योगेंद्र साह, शुकदेव चौधरी आदि लोगो के सहयोग से प्रधान पुजारी जगदीशजी के द्वारा प्राण प्रतिष्ठा, सम्पन हुआ। उस दिन से ही बलि प्रथा बंद है। इसके बदले अब प्रसाद चढ़ाया जाता है। बताया जाता है कि किसी भी प्रकार को टोका-टोटका भूत, प्रेत, गंभीर बीमारी से ग्रसित लोगों को मंदिर कैम्पस में प्रवेश से ही सुधार होने लगता है बाढ़ में माँ की कृपा से ठीक हो जाता है। सन 2006 में युवा रणवीर कुमार विनोद के नेतृत्व में विकास कार्य को गति देने के लिए क्षेत्र के विद्वान, साहित्यकार, चित्रकार, पत्रकार मनोरंजन प्रसाद मिश्र, सामाजिक कार्यकर्ता रामविलास ठाकुर प्रवासी, नागेश्वर सिंह ह्यशशिन्द्रह्ल रामचन्द्र सिंह प्रभाकर, उपेन्द्र नारायण चौधरी मधुप, शिक्षाविद राम नाथ झा, कुशेश्वर पंडित, मनोरंजन मिश्र, परमानंद झा आदि कवियों के सहयोग से उक्त स्थल पर बुद्धिजीवी विकास संसद का गठन कर गति प्रदान किया गया। इसके बाद इसी परिसर में बाबा भोलेनाथ के मंदिर का निर्माण हुआ। यहाँ भी कलाकार, छायाकार, भजन कीर्तन करने वाले, नेता से राजनेता माता के आशीर्वाद लेने आये और प्रदेश से लेकर राष्ट्र तक परचम लहराये है।

डीएम ने जनसंवाद कार्यक्रम को ले योजनाओं की दी जानकारी

कल्याणपुर, प्रात : किरण संवाददाता

डीएम योगेंद्र सिंह ने गुरुवार को प्रखंड के सिमरिया भिंडी व गोराई पंचायत में जनसंवाद कार्यक्रम में उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं के बारे में जानकारी दिया। वहीं सिमरिया भिंडी पंचायत में जन संवाद कार्यक्रम के दौरान संबोधन के क्रम में उन्होंने बताया कि सरकार की कल्याणकारी योजनाओं के लिए ऑनलाइन करना आवश्यक कर दिया गया है। इसके लिए मुफ्त ऑनलाइन की व्यवस्था भी की गई है। सभी लोगों से अपील की योजनाओं का लाभ लेने के लिए ऑनलाइन करना आवश्यक हो गया है। वहीं योजनाओं में 1979 के बाद जन्म लेने वाले लोगों को अपना जन्म प्रमाण पत्र भी पंजीकरण कराने के लिए कहीं। इसके लिए सभी को जागरूक होना भी आवश्यक है। वहीं भारतमाला कार्यक्रम भारतमाला एक्सप्रेसवे के निर्माण होने से क्षेत्र के विकास होने की बात कही। मौके पर सिमरिया भिंडी के लोगों की सराहना करते हुए बताया कि अधिकांश भूमि अधिग्रहण कर लिया गया है। वहीं रतवारा में भी गाना की खेती से लोगों में उन्नति की बात करते रतवारा के लोगों से भी भारत माला में सहयोग की बात कही। मुक्तापुर फ्रैंक पुल का निर्माण के लिए सरकार स्तर पर पहल जारी है। जल्द ही निर्माण होने की बात बताई। इसके निर्माण होने से आवागम में जाम से निपटारा मिलने की बात कही। जिन में कल्याणपुर धुंगामा, रतवारा, रामभद्रपुर के साथ सिमरिया भिंडी भी शामिल है। मौके पर डीएम योगेंद्र सिंह के अलावा एडीएम अजय कुमार तिवारी, एसडीओ दिलीप कुमार, प्रभारी बीडीओ विकास वैभव, सीओ कमलेश कुमार, सहित सभी अधिकारी एवं ग्रामीण भी मौजूद थे।

5 लाख 21 हजार का बोनस बस्तरी दुग्ध उत्पादक सहयोग समिति ने 862 किसानों के बीच हुआ वितरण

विभूतिपुर, प्रात : किरण संवाददाता

विभूतिपुर प्रखंड के चैता दक्षणी पंचायत अंतर्गत बस्तरी दुग्ध उत्पादक सहयोग समिति के तत्वावधान में गुरुवार को 862 किसानों के बीच 5 लाख 21 हजार 690 रुपए बतौर बोनस वितरण किया गया। इस दौरान मरणोपरांत दुग्ध उत्पादक स्व पुनीत दास के परिजन को 1 लाख रुपये देकर सहयोग किया। पंचायत के पूर्व मुखिया कमल कांत राय के मंच संचालन में आरंभ हुआ कार्यक्रम में बताया गया कि कार्यक्रम बर्ष 17, 18 तथा 20 व 21 के काल में समिति के दुग्ध उत्पादक किसानों द्वारा बिक्रय किया गया 1 लाख 50 हजार लीटर दूध के एबज में 4 करोड़ 82 लाख रुपया प्राप्त कर ला

संक्षिप्त खबरें

11 नवंबर को जयप्रकाश विश्वविद्यालय में अवकाश पर कुलपति की सहमति

छपरा कार्यालय। जयप्रकाश विश्वविद्यालय स्नातकोत्तर शिक्षक संघ अपने पाँच सूत्रीय मांग को लेकर कुलपति प्रो के.एन.सिन्हा से मिला जिसमे दिनाँक 11 नवम्बर को अवकाश, महंगाई भत्ता अंतर अक्टूबर एवं नवंबर माह का वेतन निर्गत, पी एफ का पैसा पी एफ एकाउंट में जमा करना तथा सामुहिक बीमा की धनराशि ब्याज सहित वापस करने की मांग रखी। कुलपति ने अधिकतर मांग को स्वीकार कर लिया या सहमति जतायी। शिक्षक संघ के प्रतिनिधिमंडल में शिक्षक संघ के अध्यक्ष प्रो. सिद्धार्थ शंकर, सचिव प्रो. महेंद्र सिंह, उपाध्यक्ष प्रो. अजीत तिवारी संयुक्त सचिव प्रो दिव्यांशु कुमार सम्मिलित थे।

नगर पंचायत बोर्ड की बैठक सम्पन्न

परसा ।नगर पंचायत परसा बाजार कार्यालय परिसर में मुख्य पार्षद ऐशा खातून की अध्यक्षता में सामान्य बोर्ड की बैठक किया गया ।बैठक में दीपावली के पूर्व लाइट लगाने,नल जल की जलमीनार निर्माण के लिए स्वीकृति प्रदान कराने, कबीर अंत्योष्टि योजना की राशि,सड़क निर्माण कार्य,छठ घाट की साफ सफाई,प्रधानमंत्री आवास योजना समेत दस मुद्दों पर चर्चा किया गया ।वार्ड पार्षदों द्वारा उठाया गया मुद्दा पर कार्यपालक पदाधिकारी ओसामा इब्न मंसूरी ने गंभीरता से संज्ञान लिया ।बैठक के दौरान कार्यपालक पदाधिकारी ने बताया कि सामान्य बोर्ड की बैठक में कुल दस मुद्दों पर चर्चा किया गया है ।जिसमे सबसे महत्वपूर्ण लाइट लगाने,छठ घाट की साफ सफाई कराने मुख्य थे ।बाकी अन्य मुद्दों को गंभीरता से लेने और जल्द पहल करने की बातें कही ।बैठक में मुख्य पार्षद ऐशा खातून,उप मुख्य पार्षद नेहा कुमारी,वार्ड पार्षद अमीर यादव,करमुल्लाह ,चन्दन कुमार,मुरारी प्रसाद सिंह,सुधांशु कुमार,लालबाबू खिलाफ,सूरज कुमार,मुन्ना प्रसाद गुप्ता,कुंती देवी,लक्ष्मी देवी,आरती देवी,सुनील कुमारयादव,सनोजकुमार,अजीमुल्लह अंसारी,रुक्मणि देवी,कलावती देवी,लक्ष्मी देवी आदि ने भाग लिया।

इसुआपुर सीएचसी में टी बी जांच यूनिट की हुई शुरूआत

इसुआपुर। सिविल सर्जन सारण के निदेर्शानुसार सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र इसुआपुर में गुरुवार को टी बी यूनिट की शुरूआत हुई ।अब इसुआपुर के इस सरकारी अस्पताल में टी बी से संबंधित सभी प्रकार के मरीज देखे जाएंगे ।यह यूनिट शुरू होने से पहले टी बी के मरीजों को अतिरिक्त स्वास्थ्य केंद्र गंगोई में जांच कर इलाज किया जाता था। वहां मरीजों को अस्पताल आने-जाने में काफी असुविधा होती थी। अब सीएचसी इसुआपुर में ही टी बी मरीजों की जांच के साथ आवश्यकता अनुसार दवा डॉक्टर की देखरेख में दिया जाएगा। उक्त जानकारी स्वास्थ प्रबंधक नवाब अख्तर जिलानी ने दिया।

पूर्व मंत्री ने छात्रों के बीच किया पुरस्कार वितरण

मुजफ्फरपुर ।भाजपा के वरिष्ठ नेता व पूर्व मंत्री अजीत कुमार ने गुरुवार को रौतनिया स्थित एसआरटी स्कूल के वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता समारोह समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में शामिल होकर खेलकूद में सफल छात्र-छात्राओं के बीच मेडल एवं प्रशस्ति पत्र वितरण किया। इससे पूर्व उन्होंने दीप जलाकर इस कार्यक्रम का विधिवत उद्घाटन किया। श्री कुमार ने इस मौके पर उपस्थित बच्चों को संबोधित करते हुए उनके उज्जवल भविष्य का कामना किया। साथ ही उन्होंने रौतनिया चौर जैसे निर्जन स्थान में एस आर टी जैसा प्रतिष्ठित विद्यालय का स्थापना कर स्थानीय बच्चों को बेहतर शिक्षा प्रदान करने के लिए स्कूल के निदेशक डॉक्टर आर ठाकुर के प्रति आभार व्यक्त करते हुए उन्हें बधाई दिया। विद्यालय परिसर में महात्मा बुद्ध का भव्य प्रतिमा एवं अन्य महापुरुषों के कृति को प्रदर्शित करने के लिए श्री कुमार ने विद्यालय परिवार को धन्यवाद दिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता विद्यालय के निदेशक डॉक्टर आर ठाकुर ने किया। इस मौके पर विद्यालय के बच्चों ने अपने संगीत के माध्यम से आगत अतिथियों का स्वागत किया एवं उन्हें पुष्प गुछ भेंट किया ।इस अवसर पर कार्यक्रम में स्थानीय सामाजिक कार्यकर्ता मोहम्मद शमीम, मोहम्मद सगीर, अंकेश कुमार ओझा, पूर्व सरपंच मनोज कुमार सिंह, दिनेश पासवान, जय किशन कुमार चौहान, अरुण यादव सहित कई प्रमुख लोग उपस्थित थे।

दूसरे राज्यों से लौट रहे परिवार के बच्चों को पोलियो की दवा पिलाने को विशेष अभियान होगा संचालित

आज से शुरू होने वाले पल्स पोलियो अभियान में 204 टीम की प्रतिनियुक्ति

दीपावली व छठ के अवसर पर देश के विभिन्न हिस्सों और प्रदेशों से आने-जाने बच्चों की निगरानी को लेकर टीम गठित

प्रात : किरण संवाददाता

छपरा कार्यालय। दीपोत्सव के पर्व दीपावली एवं लोक आस्था के महापर्व छठ में बड़ी संख्या में बिहार के अन्य राज्यों में नौकरीपेशा या अन्य रोजगार करने वाले लोगों का प्रदेश आगमन होता है। लिहाजा जिला सहित राज्य के अन्य हिस्सों में विशेष रूप से एहतियात के तौर पर सतर्कता बरती जा रही है। सिविल सर्जन डॉ सागर दुलाल ने बताया कि बाहरी राज्यों से लौट रहे परिवार के बच्चों को पोलियो की दवा पिलाने के उद्देश्य से जिले में विशेष अभियान संचालित किया जाएगा। इसके तहत दीपावली व छठ के अवसर पर देश के विभिन्न हिस्सों और प्रदेशों से आने-जाने वाले 0 से 05 वर्ष तक के सभी बच्चों को पोलियो संक्रमण के खिलाफ जिले के रेलवे स्टेशनों और बस स्टैंड पर दवा पिलाई जाएगी। पल्स पोलियो अभियान की शत-प्रतिशत सफलता को लेकर पांच वर्ष तक के बच्चों को अनिवार्य रूप से पोलियो का सेवन सुनिश्चित कराना होगा। ताकि पोलियो संक्रमण के खतरे से बच्चों का भविष्य सुरक्षित कराया जा सके। जिससे परिवार के सभी सदस्य पूरी तरह सुरक्षित माहौल में दीपावली और छठ पूजा मना सकें।

सिविल सर्जन डॉ सागर दुलाल ने बताया कि पड़ोसी देशों में पोलियो संक्रमण का मामला सामने आने के बाद पूरे देश में इसको लेकर विशेष रूप से चौकसी बरती जा रही है। हालांकि वर्ष 2014 में ही बिहार को पोलियोमुक्त राज्य घोषित किया जा चुका है। इसके बावजूद दुनिया में कहीं भी पोलियो का वायरस मिलने के बाद बिहार सहित देश के अन्य राज्यों में प्रसार का खतरा बरकरार होने की स्थिति में स्वास्थ्य विभाग को अलर्ट कर दिया जाता है। जिसको लेकर पल्स पोलियो अभियान के तहत वैसे चिह्नित स्थान जहां से बच्चे जिला, प्रखंड व संबंधित गांव में प्रवेश करेंगे वैसे स्थानों पर बच्चों को पोलियो की खुराक पिलाने के लिए दो सदस्यीय ट्रांजिट टीम प्रतिनियुक्त की गई है। आज से यानी 10 से आगामी 20 नवंबर तक चिह्नित स्थानों पर इनकी प्रतिनियुक्ति की गयी है।

पल्स पोलियो अभियान के दौरान एक भी बच्चा छूटे नहीं इसका विशेष रूप से रखना होगा ध्यानः डीआईओ

जिला प्रतिरक्षण पदाधिकारी डॉ चंदेश्वर सिंह ने बताया कि पल्स पोलियो अभियान की सफलता को लेकर सारण जिला मुख्यालय स्थित शहरी क्षेत्र के रेलवे जंक्शन और बस स्टैंड के प्रवेश एवं निकास द्वार सहित रेलवे स्टेशन के सभी प्लेटफार्म पर दो सदस्यीय टीम बहाल की गयी है। जहां पर आने वाले अभिभावकों के साथ बच्चों को पोलियो की खुराक पिलाई जाएगी। पल्स अभियान के दौरान एक भी बच्चा छूटे नहीं इसका विशेष रूप से ध्यान रखा जाना चाहिए। इसके लिए प्रशिक्षित स्वास्थ्यकर्मियों सहित टीम के अन्य कर्मियों को सख्त हिदायत दी गई है। पल्स पोलियो कार्यक्रम का पर्यवेक्षण संबंधित एमओआईसी, बीएचएम, बीसीएम के अलावा डब्ल्यूएचओ के एसएमओ डॉ रंजितेश, यूनिसेफ की एसएमसी आरती त्रिपाठी और यूएनडीपी के वीसीसीएम अंशुमान पांडेय के द्वारा किया जाएगा।

जिला प्रतिरक्षण पदाधिकारी डॉ चंदेश्वर सिंह ने बताया कि 10 से 20 नवंबर तक आयोजित होने वाले पल्स पोलियो अभियान में छपरा जंक्शन पर 20 जबकि सोनपुर स्टेशन पर 14 टीम की प्रतिनियुक्ति की गई है। वहीं बस स्टैंड में 7 टीम को लगाया गया है। जिसमें शहरी क्षेत्र स्थित सरकारी बस स्टैंड के 4 जबकि ग्रामीण क्षेत्र के साढा ढाला स्थित बस स्टैंड में 3 टीम शामिल हैं। ग्रामीण क्षेत्रों की बात की जाए तो जिले के विभिन्न क्षेत्रों में पल्स पोलियो अभियान के तहत दवा पिलाने के लिए 163 टीम की प्रतिनियुक्ति की गई है। इन क्षेत्रों में प्रतिनियुक्त एएनएम और आशा कार्यकर्ता को पहले ही प्रशिक्षित किया जा चुका है।

अंतर महाविद्यालय कबड्डी महिला प्रतियोगिता में गया कॉलेज बना ओवरऑल चैंपियन

प्रात : किरण संवाददाता

गया ।मगध विश्वविद्यालय अंतर महाविद्यालय खेलकूद प्रतियोगिता के अंतर्गत आज गया कॉलेज गया में दो विधाओं का आयोजन किया गया है ।जिसका शुभारंभ बतौर मुख्य अतिथि पीएम साहू एडिशनल एसपी गया एवं उपेंद्र कुमार. परीक्षा नियंत्रक मुख्य कुल अनुसरसक. एवं विभाग अध्यक्ष भूगोल विभाग.डाक्टर सुदर्शन राय वह अन्य शिक्षकों ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर किया है ।अपने संबोधन में साहू ने कहा कि. विद्यार्थी. को पढ़ाई लिखाई के साथ-साथ खेलकूद की भी नितांत आवश्यकता है क्योंकि एक. स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का निवास होता है। युवा प्रतिभागियों से कहना चाहता हूं कि वह खेल को खेल की भावना से खेले हार जीत की भावना से ना खेलें। अपने संबोधन में डॉक्टर उपेंद्र कुमार ने कहा कि. महाविद्यालय में लगभग प्रत्येक खेल के लिए. व्यवस्था की गई है और विद्यार्थियों को खेल से संबंधित हर सुविधा एवं सहायता प्रदान करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा करता हूं कि ऐसे अवसरों पर विद्यार्थी अपने प्रतिभा का प्रदर्शन कर अपने-अपने महाविद्यालय का नाम रोशन करेंगे। एवं इस प्रतिभा को. राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्थापित करने में भी सफल होंगे ।डाक्टर सुदर्शन राय खेलकूद प्रभारी मगध विश्वविद्यालय ने अपने संबोधन में कहा कि आज का युग खेल का योग है और जिस प्रकार से जीवन के विविध विधाओं में विद्यार्थी अच्छा कर किसी भी ऊंचाई को छू सकते हैं इस तरह से खेल कूद में भी विद्यार्थी. अपने प्रयास से जीवन की नई ऊंचाइयों को छू सकते हैं ।इस अवसर पर डॉ वीरेंद्र कुमार विभाग अध्यक्ष रसायन शास्त्र विभाग. डॉ शशि सिंह विभाग अध्यक्ष. दर्शनशास्त्र विभाग. डॉ रेशमा यासमीन विभाग अध्यक्ष जंतु विज्ञान विभाग. सहित विभिन्न विभागों के विभाग अध्यक्ष शिक्षण एवं शिक्षक क्षेत्र कर्मचारी तथा छात्र-छात्राएं उपस्थित थे ।इस समस्त कार्यक्रम का आयोजन गया कॉलेज गया खेल प्रभारी अंजनी कुमार सिंह की देखरेख में संपन्न हुआ है ।खिलाड़ी इस प्रकार से हैं सृष्टि राज लक्ष्मी कुमारी इंदु कुमारी निक्की यादव ललिता कुमारी सुरुचि पांडे विद्या लक्ष्मी श्रुथि राज मुस्कान कुमारी सोनल वर्मा निर्णायक मंडली के रूप में रोहित कुमार सिंह अजीत कुमार गौरव कुमार दीपक कुमार आदि उपस्थित थे।

छपरा नगर निगम के निरंकुशता का मामला गूंजा सदन में

प्रात : किरण संवाददाता

छपरा नगर निगम के बदहाली का मुद्दा बिहार विधानसभा के प्रश्नकाल के दौरान छपरा विधायक डॉङ्क सी एन गुप्ता ने सदन में उठाया.प्रश्नकाल के दौरान सरकार से विधायक की नोंकझोक भी हुई. ।इस दौरान छपरा विधायक डॉङ्क सी एन गुप्ता ने सरकार के नगर विकास एवं आवास मंत्री से यह पूछा कि क्या वह बतलाने की कृपा करेंगे कि सारण जिला अंतर्गत छपरा नगर निगम के सभी प्रमुख सड़को,गलियों पर नमामि गंगे योजना एवं सात निश्चय योजना से सड़क के बीच में किए गए गड्ढे को मिट्टी से ढक दिया जाता है जिसे बरसात के दिनों में भारी दिक्कत का सामना किया गया है और अभी भी यह समस्या बनी हुई है जगह-जगह गड्ढे में गाड़ियां धंस जा रही है जाम की समस्या बन रही है लोगों को चलने के लिए सही तरीके से सड़क की स्थिति नहीं मिल रही है. सरकार इसे ठीक कराने की कब तक मंशा रखती है अगर नहीं तो क्यों?

इस दौरान विधायक ने पंकज सिनेमा रोड,गुदरी बाजार समेत भगवान बाजार थाना रोड राजेंद्र कॉलेज मोड़,दलदली बाजार समेत शहर के कई ऐसे गलियों मुख्य सड़कों के बारे में पूछा कि वहां लग रही जल जमाव की समस्या एवं सड़क बदहाली से कबतक निजात मिलेगा ।इस दौरान विधायक से सरकार की कई मुद्दों पर जमकर नोक झोक भी हुई और विधायक ने अपनी क्षेत्र की समस्याओं को विस्तार पूर्वक सदन में रखा।

विधायक डॉ सी एन गुप्ता ने कहा कि देखना अब यह है कि सरकार इस पर अपना क्या जवाब देती है और आने वाले दिनों में छपरा की बेहतरीन के लिए क्या कदम उठाती है. मैं कार्य को बिना शोर शराबे के धरातल पर करने का प्रयास करता हूं.जरुरत हुई तो सरकार समस्या को हल करने में देरी करती है तो जनहीत में सदन से सड़क तक ये मामला आएगा।

छात्र संघ आर एस ए के नेताओं ने कुलपति को सौंपा मांग पत्र

प्रात : किरण संवाददाता

छपरा सदर : गुरुवार को आर एस ए के छात्र नेताओं के द्वारा जेपियू के कुलपति प्रो के सी सिन्हा का घेराव करते हुए छात्र -हित में मांग पत्र दिया गया। जिसे कुलपति ने सभी मांगों को स्वीकार करते हुए मांगों पर कार्रवाई करने का आश्वासन दिया। घेराव कार्यक्रम में मुख्य रूप से आर एस ए के संरक्षक मनीष पांडे मिंटू, अमरेश सिंह राजपूत, विवेक कुमार विजय,उज्वल कुमार, आशीष यादव , पीयूष राठौड़ समेत संगठन के अन्य नेता मौजूद थे। छात्र नेताओं के मांगों में मुख्यरूप से पैट 2023 का परीक्षा प्रपत्र भरने का तिथि विस्तार, साथ ही अपीयरिंग कैंडिडेट को भी परीक्षा प्रपत्र भरने का मौका, पैट 2022 पीएचडी कोर्स वर्क नामांकन हेतु इंटरव्यू हुआ था। प्रथम मेघा सूची का नामांकन खत्म हो गया। इतिहास, पॉलिटिकल साइंस विषय में जीतना निश्चित सीट था उससे कम छात्रों का नाम निकला गया। छात्र नामांकन के लिए इस विषय में भटक रहे हैं। बचे हुए सीटों पर नामांकन की मांग की गई। वही स्नात्तकोत्तर प्रथम सेमेस्टर सत्र 2022-24 में नामांकन के लिए अप्लाई प्रारंभ करने, स्नातक प्रथम खंड सत्र 22- 25 का परीक्षा प्रपत्र भरने का नोटिफिकेशन जारी करने डिग्री एवं प्रोविजनल सर्टिफिकेट बनाने में लगे बेल्ट्रॉन कर्मचारियों को तुरंत हटानेआदि की मांग शामिल है।

नाराज ग्रामीणों ने कार्य को कराया स्थगित

परसा। परसा नगर पंचायत परसा बाजार के वार्ड 14 में नल जल योजना के तहत निर्माणधीन जल मीनार में घटिया सामग्री लगाने से नाराज ग्रामीणों ने संवेदक के खिलाफ नाराजी ब्यक्त करते हुए कार्य को स्थगित करा दिया ।और जांच के लिए वरीय पदाधिकारी को मौके पर बुलाने की मांग करने लगे ।ग्रामीण सुजीत राय,मुन्ना कुमार ने आरोप लगाया कि जल मीनार निर्माण में घटिया ईंट,सिमेंट उजला बालू का प्रयोग करने,ढलाई में लगने वाले मटेरियल में कटौती करने समेत कई आरोप लगाया ।ग्रामीणों का कहना है कि ठीकेदार घटिया निर्माण करा कर चला जायेगा ।आने वाले समय में जनता को इसका खामियाजा भुगतना पड़ेगा ।घटिया निर्माण को लेकर ग्रामीणों ने स्थानीय वार्ड पार्षद आरती देवी को जनकारी दिया ।जानकारी मिलते ही वार्ड पार्षद पहुँच मामले की जानकारी लिया।

प्रधानमंत्री ग्रामीण तैराकी प्रतियोगिता 11 नवम्बर को, सांसद मनोज तिवारी होंगे मुख्य अतिथि

प्रात : किरण संवाददाता

छपरा कार्यालय।। ग्रामीण क्षेत्रों की तैराकी प्रतिभाओं को निखारने और उनको प्रतिस्पर्धा के लिए उचित मंच दिलाने के उदेश्य से प्रधानमंत्री ग्रामीण तैराकी प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। अमनौर स्थित पर्यटक स्थल बड़ा पोखरा में शनिवार को इसका आयोजन पूर्व केंद्रीय मंत्री और सारण के सांसद राजीव प्रताप रुडी द्वारा किया जा रहा है।

इस संदर्भ में सांसद ने बताया कि प्रधानमंत्री की महत्वाकांक्षी योजनाओं में तमाम भारतीयों को स्वस्थ्य और सबल बनाने के उद्देश्य से खेलो इंडिया की परियोजना भी जारी है। इसके अंतर्गत परंपरागत खेलों के अलावा गाँव-गाँव में खेले जाने वाले खेलों को भी शामिल किया गया है। खेल से न केवल स्वास्थ्य सबल और सुदृढ़ होता है बल्कि मन को भी शांति मिलती है, यानी मानसिक और शारीरिक दोनों लाभ खेलने कूदने से होते हैं। जन-जन को इस लाभ से अवगत कराने के उदेश्य से खेलो इंडिया अभियान के तहत ही सारण में भी ग्रामीण स्तर पर खेल प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है।

सांसद रुडी ने बताया कि 11 नवम्बर को आयोजित यह प्रतियोगिता अमनौर अमृत सरोवर पर होगी। बतौर मुख्य अतिथि जाने माने लोक गायक, अभिनेता और सांसद मनोज तिवारी आमंत्रित किए गए हैं, जबकि पूर्व मंत्री और भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष सम्राट चौधरी की भी विशिष्ट उपस्थिति रहेगी। इसके अलावा खेलों से जुड़े हुए खेल विशेषज्ञ और खिलाड़ियों को भी आमंत्रित किया गया है ताकि वे युवा खिलाड़ियों को न केवल स्वास्थ्य तक खेल को सीमित रख सकें बल्कि इसे अपना पैशन और करियर भी बना सके, इस तरीके से उनको उत्प्रेरित करने के लिए खेल स्टार की भी उपस्थिति होगी।

पूर्व केंद्रीय मंत्री रुडी ने बताया कि खेलो इंडिया के तहत बड़े स्तर पर प्रधानमंत्री ग्रामीण तैराकी प्रतियोगिता का आयोजन युवाओं में खेलकूद के प्रतिस्पर्धा को जागृत करेगी। प्रतिस्पर्धा में खेलकूद से जुड़ाव रखने वाले सारण संसदीय क्षेत्र सहित जिला के सभी वर्ग के युवा व युवतियां भाग लेकर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर प्रतियोगिता में जीत दर्ज करायेंगे। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री ग्रामीण तैराकी प्रतियोगिता - ग्रामीण क्षेत्रों के लिए बिहार में पहली ऐसी प्रतियोगिता आयोजित हो रही है जिस में मछुआरे या नदी किनारे रहनेवाले, नदी-तालाब में तैरनेवाले हैं। यह शहरी स्विमिंग पुल नहीं है। प्रतियोगिता में 500 से अधिक प्रतिभागी भाग लेंगे।

धनतेरस के लिए सज गई दुकाने, ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र में शुरू हुए चहल-पहल

प्रात : किरण संवाददाता

छपरा सदर : वैसे तो धनतेरस शुक्रवार को है लेकिन गुरुवार से ही सारण जिले के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में दुकानदार अपनी-अपनी दुकानों को सजाधजा कर ग्राहकों के इंतजार में बैठ गए हैं। सनातन धर्म के मान्यता के अनुसार धनतेरस के दिन सोने, चांदी के गहने,पीतल,तांबा के बर्तन, झाड़ू इत्यादि सामानों की खरीदारी से घर में लक्ष्मी एवं धन कुबेर का वास होता है और इसके लिए शहर एवं ग्रामीण क्षेत्र के सभी दुकानदार अपनी-अपनी दुकानों को सजा करके तैयार बैठे हुए हैं तथा धनतेरस की एक दिन पहले से ही बाजारों में चहल-पहल दिखाई देने शुरू हो गए हैं। छपरा शहर के श्रीप्रकाश ऑनामेंट्स,अशोक अलंकार ज्वेलर्स ,तनिष्क, सुमन ज्वेलर्स,वैष्णवी ज्वेलर्स सहित अन्य आभूषण के दुकानो को दुल्हन की तरह सजाया संवारा गया है। इस त्यौहार के मौसम में स्थायी दुकानों के साथ-साथ सैकड़ो से ज्यादा की संख्या में अस्थाई फुटपाथी दुकान भी दुकानदारों के द्वारा लगाया जाता है। जिसमें मुख्य रूप से लक्ष्मी गणेश की मूर्ति, सजावट की सामानों के साथ-साथ फुटपाथ पर ही स्टील, तांबे तथा पीतल इत्यादि के बर्तनों की दुकान भी सजाई जा चुकी है। वही दीपावली के मौसम को देखते हुए मिट्टी के खिलौने दीए इत्यादि स्थानीय कुंभकारों के द्वारा बिक्री के लिए लगा दिए गए हैं। क्योंकि धनतेरस की खरीदारी के साथ-साथ लोग दीपावली की खरीदारी भी कर लेते हैं जिसमें मिट्टी के बने दीपक मुख्य रूप से खरीदे जाते हैं ताकि दीपावली के दिन लोग अपने घरों को इन दीपों से सजा सके। दुकानदारों को आज सुबह से ही अपने ग्राहकों का इंतजार शुरू हो जाता है। क्योंकि शायद ही कोई ऐसा घर हो जिसके घर में आज के दिन कोई ना कोई नई वस्तु को खरीद के नहीं लाया जाए।

सीएमएस एम ए के तहत गर्भवती महिलाओं की हुई जांच

इसुआपुर ।सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र इसुआपुर में गुरुवार को प्रधानमंत्री सुरक्षित मातृत्व अभियान के तहत सैकड़ों गर्भवती महिलाओं की जांच हुई। जांच कराने आई महिलाओं में पुरसौली गांव की सबीना खातून, विष्णुपुरा की गुड़िया देवी, रामपुर की नीतू कुमारी, लौआं की प्रिया देवी, डोईला गांव की शहीमा खातून व अन्य थीं। सभी महिलाओं का हीमोग्लोबिन, एचआईवी, एचबीएस, एजी,यूरीन प्रोटीन के साथ सेफलीस कीं जांच हुई । वहीं आवश्यकतानुसार महिलाओं को कैल्शियम और आयरन की दवाइयों के साथ टेडभेक का इंजेक्शन भी लगाया गया। जांच करने वालो में डॉक्टर मनीष कुमार ,एलटी एकता कुमारी, रवि कुमार के साथ स्वास्थ्य प्रबंधक नवाब अख्तर जिलानी, स्वास्थ्य प्रशिक्षक अनिल मांझी, एएनएम प्रियंवदा कुमारी ,प्रीति कुमारी, पिंकी कुमारी व सतीश कुमार पिरामल व अन्य थे।

छठ पर्व को लेकर चलेगी विशेष ट्रेन

प्रात : किरण संवाददाता

छपरा कार्यालय। रेलवे प्रशासन द्वारा आगामी त्यौहारों पर होने वाली यात्रियों की अतिरिक्त भीड़ को ध्यान में रखते हुये यात्री जनता की सुविधा हेतु 05071/05072 गोमतीनगर-नई दिल्ली-छपरा विशेष गाड़ी का संचलन 09 एवं 16 नवम्बर,2023 दिन वृहस्पतिवार को गोमतीनगर से एवं 10 एवं 17 नवम्बर,2023 दिन शुक्रवार को नई दिल्ली से दो फेरों के लिए किया जायेगा । इसमें यात्रा करने वाले यात्रियों को कोविड-19 के सम्बन्ध में समय-समय पर जारी सभी मानको का पालन करना होगा ।

05071 गोमतीनगर-नई दिल्ली विशेष गाड़ी 09 एवं 16 नवम्बर,2023 दिन वृहस्पतिवार को गोमतीनगर से 23.00 बजे प्रस्थान कर दूसरे दिन ऐशबाग से 00.05 बजे, कानपुर सेण्ट्रल से 01.55 बजे तथा गाजियाबाद से 07.32 बजे छूटकर नई दिल्ली 08.15 बजे पहुंचेगी ।

वापसी यात्रा में 05072 नई दिल्ली-छपरा विशेष गाड़ी 10 एवं 17 नवम्बर,2023 दिन शुक्रवार को नई दिल्ली से 10.00 बजे प्रस्थान कर गाजियाबाद से 10.42 बजे, कानपुर सेण्ट्रल से 16.52 बजे, ऐशबाग से 19.12 बजे, गोमतीनगर से 20.02 बजे, गोण्डा से 22.15 बजे, बस्ती से 23.35 बजे, दूसरे दिन खलीलाबाद से 00.07 बजे, गोरखपुर से 00.45 बजे, देवरिया सदर से 01.37 बजे तथा सीवान से 02.57 बजे छूटकर छपरा 04.15 बजे पहुंचेगी ।

इस गाड़ी में जनरेटर सह लगेज यान का 01, एल.एस.एल.आर.डी. का 01, साधारण द्वितीय श्रेणी के 04, शयनयान श्रेणी के 06, वातानुकूलित तृतीय श्रेणी के 08 तथा वातानुकूलित द्वितीय श्रेणी के 02 कोचों सहित कुल 22 कोच लगाये जायेंगे।

पिला बालू ट्रक का पासिंग कराते हुए चार युवक गिरफ्तार

मकेर (,सारण) थाना क्षेत्र के गौरी टोला गांव के समीप से पुलिस ने चार युवकों को पिला बालू लदे ट्रक को पासिंग कराते हुए गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है ।घटना के सम्बंध में थाना अध्यक्ष लक्ष्मी कुमारी ने बताया कि उच्चपथ संख्या 722 बाईपास गौरी टोला गांव के समीप बालू लदे ट्रक से पासिंग कराने के नाम पर ट्रक चालक से जबरन वसूली कर रहे थे जिसकी सूचना मिलते ही उक्त स्थल पर पहुँच देखा कि दो बाइक पर चार युवक राशि की वसूली कर रहे थे जहाँ उनलोगों को थाना लाकर पूछताछ करने पर अपनी संलिप्तता बताया ,सभी युवको के पास से मोबाइल और बाइक जप्त कर उनके बिरुद्ध प्राथमिकी दर्ज कर उन्हें जेल भेज दिया गया ।पकड़े गए युवकों के नाम है संदेश राय, अजीत कुमार दिलीप राय एवम नवल राय है ।पुलिस दल का नेतृत्व थाना अध्यक्ष लक्ष्मी कुमारी सिपाही राजेन्द्र सिंह यादव राजू कुमार एवम विनय कुमार सिंह थे ।मालूम हो कि नव पदास्थापित थाना अध्यक्ष लक्ष्मी कुमारी के योगदान के बाद से लगातार ट्रक एवम ट्रैक्टर पर लदे वाहनों को जप्त कर रही है।

शिक्षक अब मात्र किताबी शिक्षा के आलावा विज्ञान विषय को प्रायोग कर शिक्षा देंगे

प्रात : किरण संवाददाता

बनियापुर (सारण) प्रखंड के बी आर सी भवन पर सभी प्रखंड के सभी 161विद्यलयो के विज्ञान शिक्षकों की बैठक सरकार द्वारा विज्ञान विषय पर प्रोजेक्ट बेस्ट लर्निंग के प्रशिक्षित दक्ष शिक्षकों की उपस्थिति मे बी ई ओ रामनाथ बैठा की अध्यक्षता में एक दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन किया गया ।

जहा प्रखंड शिक्षा पदाधिकारी ने शामिल सभी शिक्षकों को संबोधित कर बताया कि शिक्षा का अब पैटर्न बदल रहा है,विद्यालयों मे एक एक विषय को छात्र छात्रों को नई नई नवाचार के माध्यम से पढ़ाना है,वही प्रशिक्षक शिक्षक प्रदीप कुमार प्रमोद पंडित सुनील कुमार ठाकुर आदि ने प्रशिक्षण मे सभी विज्ञान शिक्षकों को बताया कि अब मात्र विज्ञान किताबी शिक्षा तक पढ़ा देने से काम नही चलेगा,छात्र छात्राओं को चाहे जिस पाठ को पढ़ाई प्रोजेक्ट और प्रायोगिक विधि से कर के सिखाएं ऐसा करने बच्चो उस विषय के प्रति सम्पूर्ण ज्ञान,समझ विकसित हो सकेगा ।बच्चे जब आपके मार्ग दर्शन मे किसी विषय बिंदु हो खुद प्रयोग कर सिखेंगे तब उनके मनो मस्तिष्क पर अमीट होगा ।मौके पर कई शिक्षकों के आलावा आसमोहम्मद बी आप पी सदन प्रसाद आदि शामिल थे।

इंटर स्टेट स्टेट जूनियर रेड क्रॉस प्रतियोगिता में औरंगाबाद के छात्र-छात्र भाग लेंगे

औरंगाबाद। भारतीय रेड क्रॉस सोसाइटी चंडीगढ़ भारतीय रेड क्रॉस सोसाइटी बिहार राज्य शाखा पटना तथा जिला पदाधिकारी औरंगाबाद के निदेर्शानुसार इंटर स्टेट स्टेट जूनियर रेड क्रॉस प्रतियोगिता में औरंगाबाद के छात्र-छात्र भाग लेंगे जिला कार्यक्रम पदाधिकारी स्थापना एवं माध्यमिक शिक्षा दयाशंकर सिंह ने बताया कि जिलाधिकारी द्वारा प्राप्त निर्देश के आलोक में इस राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में औरंगाबाद के छात्र-छात्र भाग लेंगे इस प्रतियोगिता का आयोजन 24 से 30 दिसंबर 2023 को कुरूक्षेत्र हरियाणा में किया जाना है इस प्रतियोगिता में देश के सभी राज्यों से प्रतिभागी भाग लेंगे इस प्रतियोगिता में समूह गान एकल गान एकल गान समूह नृत्य एकल नृत्य भाषण क्विज एक्सटेम्पोर प्रदर्शनी प्रतियोगिता का आयोजन किया जाएगा जिला कार्यक्रम पदाधिकारी स्थापना एवं माध्यमिक शिक्षा दयाशंकर सिंह ने बताया कि इसके लिए स्क्रीनिंग का आयोजन भारतीय रेड क्रॉस सोसाईटी के सभा कक्ष में 11 नवंबर 2023 को पूर्वाह्न 11:00 से किया गया है दयाशंकर सिंह ने बताया कि प्रतिभागियों के चयन के लिए प्रखंड शिक्षा पदाधिकारी कुटुंबा गोह एवं दाउदनगर को स्क्रीनिंग समिति का सदस्य मनोनीत किया गया है।

विधिक सेवा दिवस पर भव्य रैली का आयोजन

प्रात : किरण संवाददाता

औरंगाबाद। जिला विधिक सेवा प्राधिकार के तत्वावधान में विधिक सेवा दिवस के अवसर पर आज व्यवहार न्यायालय, परिसर औरंगाबाद से जिला एवं सत्र न्यायाधीश सह जिला विधिक सेवा प्राधिकार के अध्यक्ष सम्पूर्णानन्द तिवारी, प्रधान न्यायाधीश पुनीत कुमार गर्ग, अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश तृतीय प्रणव शंकर तथा जिला विधिक सेवा प्राधिकार के सचिव, सुकुल राम तथा अन्य कई न्यायिक पदाधिकारियों द्वारा द्वारा विधिक सेवा सदन से हरि झण्डी दिखाकर भव्य रैली को रवाना किया गया।

इस जागरूकता रैली में जिला विधिक सेवा प्राधिकार के अर्द्धविधिक स्वयं सेवकों एन0सी0सी0 के छात्र छात्राऐं तथा स्काउट एण्ड गाईड के छात्रों की उपस्थिति काफी संख्या में रही। यह भव्य रैली व्यवहार न्यायालय परिसर से निकलकर नगर परिषद द्वारा स्थापित पार्क तक न्याय सबके लिए संदेश देते हुए गयी और पुनः वापस व्यवहार न्यायालय आकर समाप्

सम्पादकीय

त्योहारों की वेला में महंगाई का सितम

अनुज आचार्य

आजकल भारत में प्याज की बढ़ती कीमतों ने गृहणियों की आंखों में आंसू ला रखे हैं। इससे पहले टमाटर लाल पीला हो रखा था। भारत में कुल प्याज उत्पादन का लगभग 30 फीसदी महाराष्ट्र राज्य में पैदा होता है। महाराष्ट्र में भी सबसे ज्यादा प्याज पैदा करने वाले तीन जिले नासिक, अहमदनगर और पुणे हैं। इस राज्य का लाल प्याज अपने स्वाद और तेज गंध के लिए प्रसिद्ध है। त्योहारी सीजन से पहले टमाटर के दामों में राहत मिले अभी कुछ ही दिन हुए थे कि अब प्याज की कीमतें भी लगातार बढ़ रही हैं। पिछले 20 दिनों में प्याज के दामों में जबरदस्त इजाफा हुआ है और यह मूल्य वृद्धि लोगों की जेब पर भारी पड़ रही है। प्याज की बढ़ती हुई कीमतों पर सब्जी विक्रेताओं का कहना है कि बढ़ती कीमतों के पीछे बाजार में प्याज की कमी है और जब प्याज की पर्याप्त आपूर्ति बढ़ेगी तो कीमतें नियंत्रण में आ जाएंगी। लेकिन फिलहाल तो आशंका है कि प्याज की कीमतें 100 रुपए प्रति किलो तक पहुंच सकती हैं। तब तक व्यापारियों के वारे न्यारे हो चुके होंगे और आम आदमी की जेबें खूब ढीली हो गई होंगी। कहीं कहीं सरकार द्वारा 25 रुपए किलो की दर से प्याज उपलब्ध करवाया जा रहा है, लेकिन इससे पूरे देश-प्रदेश के नागरिकों को तो राहत नहीं मिल रही है। इस बात से भी सभी भली-भांति परिचित ही हैं कि आम आदमी तक खाद्य सामग्री पहुंचने से पहले दलालों, बिचौलियों और आढ़तियों की जेबें गर्म हो चुकी होती हैं, जबकि किसानों को कभी भी उनके उत्पादों के सही दाम नहीं मिलते हैं। उल्टे खून पसीना बहाने वाले इन किसानों की कमर कर्ज की मार से झुकी रहती है। रिटेल बाजार में खाद्य पदार्थों और सब्जियों के दाम चाहे कितने भी क्यों न बढ़ जाएं, लेकिन किसान वर्ग को इसका फायदा कभी भी नहीं मिलता है। इसके विपरीत जमाखोरों-स्टोरियों द्वारा जमकर खाद्य वस्तुओं की जमाखोरी की जाती है और बाजार में वस्तुओं का कृत्रिम अभाव पैदा कर महंगाई को बढ़ाकर चोखा मुनाफा कमाया जाता है। हिमाचल प्रदेश के सरकारी आंकड़ों में पिछले कुछ दशकों से घरेलू सब्जी उत्पादन एवं अनाज की पैदावार में बढ़ोतरी दर्ज की गई है तो वहीं दूसरी तरफ बंदरों के उत्पाद और बेसहारा पशुओं की टोलियों के चलते अधिकतर जगहों पर कृषि कार्यों में आ रही परेशानियों के चर्चे भी अक्सर सुनने को मिलते रहते हैं। जो छोटे किसान अपनी मेहनत के बलबूते थोड़ा बहुत अन्न एवं सब्जी उत्पादन कर भी रहे हैं तो उनकी सबसे बड़ी समस्या अपनी वस्तुओं की बिक्री को लेकर है। ऐसा प्रतीत हो रहा है कि प्रशासन को यह पता ही नहीं है कि बाजारों में सब्जियों के दामों और अन्य खाद्य वस्तुओं का क्या हाल है और अधिकारी वर्ग अपनी कुर्सियों तक सीमित होकर रह गए हैं। आज से 30-35 वर्ष पूर्व जब कभी भी महंगाई का जिन्न अपना सिर उठाता था तो विपक्षी दलों द्वारा जरूर धरना प्रदर्शन और विरोध प्रदर्शन की खबरें देखने सुनने को मिलती थीं। लेकिन अब जैसे राजनीतिक दलों को आम जनता को होने वाली परेशानियों से कोई लेना देना ही नहीं है। हिमाचल प्रदेश में नवम्बर महीने की शुरूआत तक सब्जियों की पैदावार बढे के साथ ही इनके दाम नीचे आ जाते थे, लेकिन इस बार ऐसा होता दिखाई नहीं पड़ रहा है। बाजार में टमाटर 40, तो हरा मटर 140 रुपए पार बिक रहा है। अदरक 160 रुपए तो बाकी सब्जियों के मूल्य भी लगभग 60 रुपए पार ही हैं और खुदरा दुकानदार मोटा मुनाफा कूटने में जुटे हुए हैं। मूल्य सूची तो शायद ही कोई दुकानदार लगाता होगा, बिल देना तो दूर की कौड़ी समझिए। बाजारवाद की लूट में अधिकांश व्यापारियों की मौज लगी हुई है और वस्तुओं के मूल्यों पर सरकारी नियंत्रण कहीं नहीं दिखलाई पड़ रहा है। आम ग्राहक सरेआम लुट रहा है। आखिर कितने दुकानदार या व्यापारी आयकर चुकता कर रहे हैं, इनके द्वारा जमीनों की खरीद, गलों में लटकी मोटी सोने की चेनें, इनकी महंगी गाडिों और आलीशान भवनों को देखकर साफ झलकता है कि इनको मोटी कमाई हो रही है। क्या आयकर विभाग ऐसे विक्रेताओं की कमाई तथा टैक्स देयता की भी जांच पड़ताल करेगा? प्रश्न यह भी उठता है कि जब देश में जीवनोपयोगी वस्तुओं की बहुलता है तो फिर मूल्य वृद्धि क्यों और किसान गरीब क्यों? यह सही है कि जनसंख्या में वृद्धि हो रही है, लेकिन वैश्विक सहयोग और कई अन्य उपायों से वस्तुओं की उपलब्धता में भी उसी अनुपात में बढ़ोतरी हो रही है तो भी चीजें इतनी महंगी क्यों बिक रही हैं और महंगाई का बोलबाला क्यों है? अच्छे मानसून और बेहतर पैदावार के बावजूद खाद्य वस्तुओं का कृत्रिम अभाव कौन पैदा कर रहा है, क्यों सरकारें इन पर लगाम नहीं लगा पा रही हैं? लोकतंत्र में राजनीतिक दलों को भी तो अंततः जनता जनार्दन की कृपा से ही सरकारें बनाने का सुफल मिलता है, तो फिर क्यों वे आम जनता के हितों को नजरअंदाज करते हैं? आशा है कि केंद्र एवं राज्य सरकारें उत्पादों का निर्माण करने वाले निमार्ताओं और खुदरा कारोबारियों से उपभोक्ताओं को बेरहमी से लुटने से बचाने के लिए एमआरपी यानी अधिकतम खुदरा मूल्य तय करने के लिए एक तंत्र विकसित करेंगी और सख्ती से इस नीति के अंतर्गत नियम कानूनों का अनुपालन भी करवाया जाएगा, ताकि ग्राहकों को उचित मूल्य पर सामग्री/वस्तुएं मिलती रहें। अंततः सवाल उठता है कि क्या अफसरशाही के पास इस लूटपाट को अंजाम देने वाले जमाखोरों, मुनाफाखोरों और कालाबाजारी करने वालों के खिलाफ किसी प्रकार की कोई कार्रवाई करने का जीवट है?

भाजपा भी जात राजनीति के खेल में

अजीत द्विवेदी

भारतीय जनता पार्टी व्यापक रूप से जाति की राजनीति को हिंदुत्व की राजनीति का विरोधी मानती रही है। तभी वह जातीय समीकरण बनाने, सोशल इंजीनियरिंग करने और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की जाति बता कर वोट मांगने के बावजूद एक बड़ा नैरेटिव हिंदुत्व का बना कर रखती है। उसके दायरे में ही वह जाति की राजनीति करती है। कह सकते हैं कि उसकी बारीक राजनीति जाति के प्रबंधन वाली होती है और बड़ी राजनीति हिंदुत्व की होती है। परंतु अब कांग्रेस और उसके गठबंधन की पार्टियों द्वारा जाति के मुद्दे को राजनीति का केंद्रीय मुद्दा बना देने के बाद लगता है कि भाजपा भी खुल कर यह राजनीति करेगी। तभी यह राजनीति का बिल्कुल नया और बहुत दिलचस्प दौर होगा, जिसमें मंडल और कमंडल की राजनीति का टकराव नहीं होगा, बल्कि मंडल की राजनीति का स्पेस लेने के लिए विपक्षी गठबंधन इंडियाइ और भाजपा गठबंधन एनडीए के बीच टकराव होगा। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के हाल के दो भाषणों से इसका बहुत स्पष्ट संकेत मिला है। उन्होंने पहले छत्तीसगढ़ की एक रैली में कहा कि भाजपा जाति गणना की विरोधी नहीं है। इसके बाद वे बिहार में भाजपा की एक रैली को संबोधित करने गए तो बहुत खुल कर जाति की राजनीति पर बोले। उन्होंने कहा कि बिहार में जाति गणना का फैसला हुआ तो भाजपा भी राज्य सरकार का हिस्सा थी और इस वजह से यह फैसला भाजपा का था। यह बात पहले बिहार प्रदेश के भाजपा के नेता कह रहे थे। पहली बार अमित शाह ने खुल कर जाति गणना की बात की और उसका श्रेय भाजपा को दिया। सो, छत्तीसगढ़ और उसके बाद बिहार में उनके भाषण से यह अंदाजा हो रहा है कि भाजपा अगले लोकसभा चुनाव से पहले विपक्षी गठबंधन का मुकाबला करने के लिए उसकी पिच पर जाकर खेलने की तैयारी कर रही है। ध्यान रहे अमित शाह केंद्रीय गृह मंत्री हैं और जनगणना का मुद्दा उनके मंत्रालय के तहत आता है। उन्होंने कहा हुआ है कि 2021 की जनगणना 2024 के लोकसभा चुनाव के तुरंत बाद होगी। सवाल है कि क्या वे लोकसभा चुनाव से पहले यह घोषणा कर सकते हैं कि अगली जनगणना में जातियों की गिनती होगी? अगर वे इसकी घोषणा करते हैं तो यह गेमचेंजर साबित हो सकता है। राष्ट्रीय स्तर पर जनगणना में अगर जातियों की गिनती होती है तो राज्यवार हो रही जाति गणना स्थगित हो जाएगी। राज्यवार जातियों की गणना का ऐलान करके पार्टियां अपने अपने समर्थक समुदाय को साधने की राजनीति कर रही हैं। जनगणना में जाति गिनने की घोषणा इस राजनीति पर विराम लगा देगी। अयोध्या में राम जन्मभूमि मंदिर में रामलला की प्रतिमा की प्राण प्रतिष्ठा और हिंदुत्व के दूसरे मुद्दों के साथ साथ अगर भाजपा पिछड़ी व अन्य पिछड़ी जातियों की राजनीति को ध्यान में रखते हुए जाति गणना की घोषणा करती है तो वह विपक्षी गठबंधन को उसकी राजनीति के मैदान में घुस कर चुनौती दे सकती है। ऐसा लग रहा है कि भाजपा ने इसकी तैयारी शुरू कर दी है। जनगणना में जातियों की घोषणा चुनाव से पहले होगी या उसके बाद में होगी यह तो आने वाले समय में पता चलेगा लेकिन जिस अंदाज में भाजपा को ओबीसी का हितैषी बताने का अभियान चल रहा है उससे लग रहा है

पर्यावरण-अनुकूल हरित कृषि के लिए अभिनव नैनो-उर्वरक

इसके अलावा, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर)- कृषि विज्ञान केन्द्रों (केवीके), कृषि प्रौद्योगिकी प्रबंधन एजेंसी (एटीएमए) और राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (एनआरएलएम) एवं किसान फील्ड स्कूल (एफएफएस) आदि के तहत आने वाले स्वयं सहायता समूहों जैसे मौजूदा संस्थागत संरचनाओं का लाभ उठाते हुए बड़े पैमाने पर जागरूकता अभियान और किसान संपर्क कार्यक्रम शुरू किए गए हैं। जागरूकता में वृद्धि, ड्रोन से छिड़काव के सुविकसित इकोसिस्टम और फसल आधारित उत्कृष्ट अनुप्रयोगों से लैस अन्य स्प्रेयर के साथ थोक रासायनिक उर्वरकों की खपत में सहवर्ती कमी और उनके तर्कसंगत उपयोग से आने वाले समय में नैनो उर्वरकों का उपयोग बढ़ने की उम्मीद है। नैनो यूरिया एवं अन्य नैनो उर्वरकों को व्यापक रूप से अपनाए जाने से किसानों की लाभप्रदता में वृद्धि होगी और संयुक्त राष्ट्र द्वारा निर्धारित सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) को हासिल किया जा सकेगा। अब समय आ गया है कि स्वदेशी रूप से विकसित नैनो उर्वरकों के समग्र प्रभाव को सभी हितधारकों द्वारा एकजुट होकर समझा व प्रोत्साहित किया जाए। किसानों द्वारा फसलों उत्पादन की रणनीतियों में नैनो उर्वरकों को शामिल किए जाने से ह्लस्वस्थ और फिट भारतह्व के लिए पर्यावरण के अनुकूल हरित कृषि के साथ-साथ खाद्य एवं पोषण सुरक्षा के लक्ष्यों को हासिल करने में मदद मिलेगी।

डॉ. मनसुख मांडविया
लेखक

हमारे देश की 1.4 बिलियन आबादी के लिए अनाज की उपलब्धता हो, इसके लिए खाद्यान्न उत्पादन में वृद्धि करने की आवश्यकता है। उर्वरक, कृषि उत्पादन को बढ़ाने के महत्वपूर्ण इनपुट में से एक है। पिछले 9 वर्षों में, हमारे प्रयासों के फलस्वरूप यूरिया की उत्पादन क्षमता में वृद्धि हुई है, जो नाइट्रोजन (एन) स्रोत का एक प्रमुख उर्वरक है। यूरिया उत्पादन बढ़कर 283.74 एलएमटी/वर्ष हो गया है, जो 2013-14 के 207.54 एलएमटी/वर्ष की तुलना में बड़ी छलांग है। इसी प्रकार, उर्वरक उद्योग (सार्वजनिक, सहकारी और निजी कंपनियों समेत) भी फॉस्फेट (पी) और पोटाश (के) आधारित उर्वरकों के अन्य प्रमुख पोषक तत्वों को सक्रिय रूप से बढ़ावा दे रहा है। सतत कृषि के लिए एनपीके उर्वरकों का संतुलित उपयोग आवश्यक है। हालांकि, फसल उत्पादकता बढ़ाने और लगातार बढ़ती आबादी को खाद्यान्न उपलब्ध कराने की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए, उर्वरकों के अधिक और असंतुलित उपयोग के कारण मिट्टी की उर्वरता तथा मिट्टी और जल संरक्षण के महत्वपूर्ण पहलू को अक्सर नजरअंदाज कर दिया जाता है। परिणामस्वरूप मिट्टी में पोषक तत्वों और पानी की कमी हो गई है, जो उनकी उर्वरता स्थिति में दिखायी पड़ती है।

इसकी वजह से उर्वरक उपयोग दक्षता (एफयूई) को बढ़ाने और मिट्टी व पर्यावरण को संरक्षित करने के लिए एक अभिनव तकनीक की आवश्यकता हुई। इस समस्या को हल करने और उर्वरक के कम उपयोग द्वारा ही अधिक उत्पादन करने संबंधी समाधान के रूप में नए युग की नैनो तकनीक सामने आयी है, यानी इनपुट उपयोग की दक्षता बढ़ाने के साथ पर्यावरण फुटप्रिंट में कमी करना।

मेक इन इंडिया के बारे में हमारे माननीय प्रधानमंत्री के आह्वान से प्रेरणा लेते हुए, भारतीय वैज्ञानिकों और इंजीनियरों ने नैनो यूरिया (तरल) विकसित किया है, जो स्वदेशी रूप से विकसित पहला नैनो उर्वरक है। जैव प्रौद्योगिकी विभाग के ह्लनैनो कृषि-इनपुट पर दिशानिर्देशह्व के अनुरूप व्यापक क्षेत्र परीक्षणों और सख्त जैव-प्रभाव व जैव-सुरक्षा परीक्षण प्रोटोकॉल पूरा करने के बाद नैनो यूरिया को 2021 में उर्वरक नियंत्रण आदेश (एफसीओ) के तहत अधिसूचित किया गया। यह राष्ट्र की खाद्य और पोषण सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए अमृत काल के दौरान ह्यआत्मनिर्भर कृषिह्व और ह्यआत्मनिर्भर भारतह्व के तहत की गई पहल का एक आदर्श उदाहरण है। अब तक, गुजरात के कलोल तथा उत्तर प्रदेश के फूलपुर और ओनला में 17 करोड़ बोतलों की क्षमता वाले नैनो यूरिया संयंत्र स्थापित किए गए हैं। 2025 तक, नांगल, ट्रॉम्बे, बेंगलुरु, देवगढ़, गुवाहाटी समेत कई स्थानों पर अन्य नैनो संयंत्र तैयार हो जाएंगे, जिससे नैनो यूरिया उत्पादन क्षमता 44 करोड़ बोतल/वर्ष से अधिक हो जाएगी, जो पारंपरिक यूरिया के लगभग 195 एलएमटी के बराबर होगी।

नैनो यूरिया की कीमत यूरिया के एक बैग की कीमत से 16 प्रतिशत कम है और किसान इसे आसानी से अपने खेतों तक ले जा सकते हैं, जिससे नैनो यूरिया की बोतलों की बिक्री में वृद्धि हुई है। अधिकांश युवा किसानों ने इस सुविधा की सराहना की है। लॉजिस्टिक्स और भंडारण लागत के मामले में भी नैनो यूरिया के लाभ देखे जा सकते हैं। एक पारंपरिक उर्वरक रेक (बीसीएनएचएल) में पारंपरिक यूरिया के 69,600 बैग की ढुलाई की जा सकती है, जबकि ऐसा ही अन्य रेक नैनो यूरिया की 29 लाख बोतलें ले जा सकता है। इसी तरह, 533 बैग यूरिया ले जाने वाला एक 24 मीट्रिक टन ट्रक नैनो यूरिया की 30,000 बोतलें ले जा सकता है। पूंजीगत व्यय, ऊर्जा खपत और कार्बन डाइऑक्साइड के कम उत्सर्जन के मामले में भी पारंपरिक यूरिया संयंत्र की तुलना में नैनो यूरिया संयंत्र लाभप्रद हैं। नैनो यूरिया- एनयू (तरल) पोषक तत्व उपयोग की उच्च दक्षता (एनयूई) प्रदर्शित करता है और इसे अपनाने से कृषि उत्पादकता, उपज की गुणवत्ता, किसानों के लिए लाभ में वृद्धि होती है, जबकि मिट्टी, जल और वायु प्रदूषण, लॉजिस्टिक्स एवं भंडारण लागत में कमी आती है। खरीफ 2021 में धान, मक्का, रागी, बाजरा, अदरक पर 20 स्थानों पर आईसीएआर द्वारा नैनो यूरिया के क्षेत्रीय प्रयोगों में कृषि-उपज में 3- 8 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गयी और किसानों के लिए 25-50% की बचत का संकेत मिला।

पिछले तीन सीजन के दौरान, 192 लाख किसानों ने 150 लाख हेक्टेयर भूमि पर यूरिया की खुराकों के संभावित विकल्प के रूप में नैनो यूरिया लिक्विड की 6.5 करोड़ बोतलें (500 मिलीलीटर प्रत्येक) का उपभोग किया है। किसानों के खेतों के स्तर पर भी, नैनो यूरिया के उपयोग के बेहद उत्साहजनक परिणाम मिल रहे हैं। वर्ष 2021-22 की तुलना में 2022-23 के दौरान नैनो यूरिया की बिक्री में जहां 55 प्रतिशत की वृद्धि हुई, वहीं पारंपरिक यूरिया की बिक्री में महज चार प्रतिशत की मामूली वृद्धि ही दर्ज की गई। वर्ष 2022-23 के दौरान, पंजाब, केरल, तमिलनाडु, जम्मू एवं कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, झारखंड और असम जैसे राज्यों में जहां पारंपरिक यूरिया की खपत में कमी देखी गई है, वहीं आनुपातिक रूप से इन राज्यों में नैनो यूरिया की खपत में वृद्धि हुई है। उदाहरण के लिए, 2021-22 की तुलना में 2022-23 में पंजाब में नैनो यूरिया की खपत 27 प्रतिशत, केरल में 20 प्रतिशत, उत्तराखंड में 67 प्रतिशत, जम्मू एवं कश्मीर में 49.6 प्रतिशत बढ़ी है। इसी प्रकार, 2022 के पिछले खरीफ मौसम की तुलना में 2023 के खरीफ मौसम में जहां नैनो यूरिया की बिक्री में वृद्धि हुई, वहीं हिमाचल प्रदेश और जम्मू एवं कश्मीर में एनसीयू की बिक्री कम हो गई। वर्ष 2021-22 की तुलना में वर्ष 2022-23 के दौरान कुल 189 जिलों में पारंपरिक यूरिया की खपत में कमी देखी गई। इनमें से 16 राज्यों के 130 जिलों में जहां पारंपरिक यूरिया की खपत में औसतन 12 प्रतिशत की कमी दर्ज की गई, वहीं नैनो यूरिया की खपत में 76 प्रतिशत की वृद्धि देखी गई। वर्ष 2022 के खरीफ मौसम की तुलना में 2023 के खरीफ मौसम के दौरान 113 जिलों में नैनो यूरिया के उपयोग के कारण पारंपरिक यूरिया की बिक्री में कमी देखी गई।

नैनो डीएपी, जोकि हाल ही में आया एक नैनो उर्वरक है, फसलों के पोषण के मामले में एक और उपलब्धि है। यह पारंपरिक की खपत को कम कर सकता है, जिससे डीएपी के आयात में अंततः कमी आएगी। उर्वरकों के क्षेत्र में नैनो एनपीके, नैनो जिंक, नैनो कॉपर, नैनो बोरोन, नैनो सल्फर आदि के विकास की दिशा में हो रहे आगे के शोध से निश्चित रूप से भविष्य में पर्यावरण के अनुकूल टिकाऊ कृषि को बढ़ावा मिलेगा। नैनो उर्वरकों के उपयोग से वैकल्पिक एवं रासायनिक उर्वरकों के संतुलित उपयोग को बढ़ावा देने की दृष्टि से शुरू किए गए धरती माता के उन्नयन, जागरूकता, पोषण एवं उन्नति से संबंधित प्रधानमंत्री के कार्यक्रम (पीएम प्रणाम) के उद्देश्यों को आगे बढ़ाने में भी मदद मिलेगी। ग्रीनहाउस गैसों (जीएचजी) के उत्सर्जन में कमी, लोगों की सब्सिडी, परिवहन और अन्य विविध लागतों की बचत के रूप में मिलने वाले लाभ कई गुना बढ़ जायेंगे, जो अंततः राष्ट्र निर्माण में योगदान देंगे।

आधुनिक बिहार के निमार्ता थे डॉ. सच्चिदानंद सिन्हा

बदले में कुछेक हजार नियुक्ति पत्र बांटने का काम अब प्रधानमंत्री कर रहे हैं। कई सार्वजनिक निकायों को घाटे का रोना रोते हुए निजी हाथों में सौंपा गया है और उनमें भी अधिकतर पर एक ही औद्योगिक समूह का मालिकाना हक है। बेरोजगारों के लिए हर चुनाव में घोषणाएं और भत्ते देने का ऐलान हो रहा है, लेकिन विदेशी कंपनियों को सलाह के नाम पर सैकड़ों करोड़ बांटे जा रहे हैं। सरकार करोड़ों का ये खर्च भी जनता के टैक्स से ही उठा रही है। यानी जनता दोनों तरफ से घाटे में है। उसे कमाने के अवसर नहीं मिल रहे और जो थोड़ी बहुत कमाई है, वो आउटसोर्सिंग की भेंट चढ़ रही है। जो काम दो कार्यकाल में नहीं हो सका, उसे तीसरे कार्यकाल में करने के दावे का आधार क्या है, ये पता नहीं। ये सरकार ऐसी ही निराधार बातों पर चल रही है और देश की जड़ें कमजोर हो रही हैं।

मुरली मनोहर श्रीवास्तव
लेखक

धीरे-धीरे यूं ही उनकी कीर्तियां, धूमिल पड़ जाती हैं क्या, जो गढ़ते हैं इतिहास, उन्हें लोग कभी याद करते हैं क्या?....मुरली वर्षों बीत गए, मगर उस घर में आज तक कोई दीप नहीं जल सका. कोई उसे सुरक्षित करना भी मुनासिब नहीं समझा. लोग आते गए, शब्दों से नवाजते गए. इसे विडंबना नहीं तो और क्या कहेंगे जिस व्यक्तित्व को पूरी दुनिया अविभाजित आधुनिक बिहार के निमार्ता के रुप में जानती है वो अपने ही में घर बेगाने हैं. हम बात कर रहे हैं संविधान सभा के प्रथम अस्थायी अध्यक्ष डॉ. सच्चिदानंद सिन्हा की.

बिहार को उंचा उठाना ही इनके जीवन की एकमात्र प्रबल अभिलाषा थी. इन्होंने बिहार टाइम्स नामक पत्र के संचालन में तथा इलाहाबाद की कायस्थ पाठशाला को सर्वांगीण विकास में अपना पूरा सहयोग दिया था. सिन्हा साहब ने ही हिन्दुस्तान रिव्यू तथा इंडियन पिपुल नामक पत्रों को निकाला. सिन्हा साहब का जन्म बिहार के बक्सर जिले के डुमरांव अनुमंडल के मुरार गांव के एक कायस्थ कुल में 10 नवंबर 1871 को हुआ था. इनके पितामह बख्शी शिवप्रसाद सिन्हा डुमरांव अनुमंडल के तहसीलदार थे. इनके पिता बख्शी रामयाद सिन्हा एक उच्चकोटि के वकील थे तथा ये स्वभाव से ही परोपकारी एवं उदार थे.

बाल्यकालमें बड़े लाड़-प्यारसे सिन्हा साहब का लालन-पालनहुआ. इनकी प्रारंभिक शिक्षा आरा जिला स्कूल में हुई थी. ये बचपन से ही बड़े कुशाग्र बुद्धि के थे. अपने सहपाठियों में ये सदा सर्वोत्तम हुआ करते थे तथा उनके सरदार बने रहतेथे. इस कारण डॉ. सिन्हा की कुछ क्षति भी हुई, परंतु इन्होंने सभी कठिनाइयों पर विजय प्राप्त की होनहार वीरवान के होत चिकने पात वाली कहावत इन पर ठीक लागू होती थी. आरा जिला स्कूल से मैट्रिक पास कर आगे की पढ़ाई के लिए ये कोलकाता चले गए. इन्हें विदेश जाने की प्रबल इच्छा थी. अतः बिहार से विदेश जाने वाले प्रथम व्यक्ति डॉ. सच्चिदानंद सिन्हा ही थे, जो 18 वर्ष की अवस्था में ही सिन्हा साहब कट्टर सनातनियों के घोर विरोध की कुछ भी परवाह न कर विलायत चले गए, इस प्रकार इन्होंने बिहार के हिन्दुओं को विलायत जाने का मार्ग निष्कंटक बना दिया तीन वर्ष तक रहकर बैरिस्ट्री पास की और पुनः वर्ष 1893 में भारत लौट आए. इन्होंने सर्वप्रथम इलाहाबाद के हाईकोर्ट में अपनी बैरिस्ट्री आरंभ की थी, फिर 10 वर्ष के बाद ये पटना लौट आए थे. डॉ. सिन्हा ने अपनी शादी पंजाब के कायस्थ परिवार में की थी, मगर गांव के विरादरीवालों ने इसका विरोध किया, पर डॉ. सिन्हा ने इसकी कुछ भी परवाह न की बिहार और बंगाल को अलग करने के लिए आंदोलन किया शुरू था, इन्होंने उसी पर एक छोटी सी पुस्तक लिखी थी. इन्हीं के संघर्षरत जीजिविषा के कारण बंगाल से बिहार पृथक हो गया, यही कारण है कि डॉ. सिन्हा आधुनिक बिहार के पिता कहे जाते हैं. मुरार गांव शिक्षा के ख्याल से बहुत प्राचीन काल से ही शाहाबाद जिले के अंतर्गत (वर्तमान बक्सर जिला) अपना एक विशिष्ट स्थान रखता था. यहां सन् 1868 ई. में एक मिडिल इंगलिश स्कूल अत्यंत सुव्यवस्थित रुप में चलाया जा रहा था. ये स्कूल उस प्राचीनकाल में अपने जमाने का प्रथम स्कूल माना जाता है. इनकी ख्याति अनेक दूर-दूरगांव में विख्यात थी. जबकिसन्1941 में यह मि. ई.स्कूलको वर्तमान हाई स्कूल के साथ मिला दिया गया अपने जीवन में हर बार एक नई इबारत लिखने वाले डॉ.सिन्हाको बड़े लाट साहब व्यवस्थापिका सभा के सदस्य भी चुना गया. बिहार में एक हाईकोर्ट और विश्वविद्यालय स्थापित करने के लिए इन्हें सदा लड़ना पड़ा था. बिहार नामक दैनिक भी इन्हीं की उत्कंठा का परिणाम रहा. दान में भी कभी पीछे नहीं हटनेवाले डॉ. सिन्हा ने पटना में पुराना सचिवालय की भूमि को दान में दिया, तो पटना का सिन्हा लाईब्रेरी को भी स्थापित करने का श्रेय जाता है. मगर मुरार गांवमें उनकी जन्मभूमि आज विरान पड़ी है. अब तो कुछ लोगों द्वारा उसे अतिक्रमित भी किया गया है. सरकारें बदलती रहीं मगर नहीं बदली तो उनके पैतृक गांव की स्थिति, वह सिर्फ एक कहानी बनकर रह गई है. सन् 1921 ई. में डॉ.सिन्हा अर्थ सचिव और कानून मंत्री 5 वर्ष के लिए बनाए गए थे. तत्-पश्चात ये पटना विश्वविद्यालय के उपकुलपति पद पर नियुक्त हुए थे. इनके समय में शिक्षा एवं न्याय के क्षेत्र में उन्नति हुई थी. प्रदेश से लगायत उस अंग्रेजी शासन के शीर्ष पर बैठे प्रत्येक शासक, बुद्धिजीवी वर्ग इनकी सहृदयता, विद्वता एवं लक्ष्य के प्रति दक्ष तरीके से परिणाम तक पहुंचने की कला का लोहा मानता था.

डॉ. सिन्हा आरंभ से ही कांग्रेस के सदस्य थे और आजीवन सदस्य बने रहे. वर्ष 1912 ई. के इंडियन नेशनल कांग्रेस के अधिवेशन के जेनरल सेक्रेटरी भी थे. ये नरम दल के नेताओं में एक थे. महात्मा गांधी की मृत्यु के बाद सिन्हा साहब ही कांग्रेस के वयोवृद्ध नेताथे. इसी कारण उन्हें स्थायी कांग्रेस के सदस्य बना दिए गए. इनकी शारीरिक अवस्था ढ़ल जाने के कारण ही सन् 1946 ई. में डॉ. सच्चिदानंद सिन्हा को संविधान सभा के अस्थायी सदस्य बनाए गए. विद्यासे सिन्हा साहब को काफी अनुराग था. इनकी विद्यानुरागिता का सबसे बड़ा कीर्ति स्तंभ पटना का सिन्हा पुस्तकालय है. यह नगर का सबसे बड़ा पुस्तकालय है. इस पुस्तकालय में जितनी पुस्तकें उस वक्त थी डॉ. सिन्हा साहब की पढ़ी हुई थी. 06 मार्च 1950 को डॉ.सिन्हा दुनिया से कूच कर गए पर हमारे हृदय में आज भी अमर हैं. ये मुरार और बिहार के ही नहीं बल्कि भारत के सर्वश्रेष्ठ नेताओं में से एक दूरदर्शी नेता थे. कलम के पुजारी सरस्वती एवं न्याय की देवी के उपासक रहे हैं. कि किसने किस सलाहकार कंपनी की सेवाएं लीं, किस आधार पर लीं, और कब तक के लिए ली हैं। अब पाठक खुद विचार करें कि एक ओर केंद्र सरकार लाखों रिक्त पदों को भर नहीं रही है। यानी हमारे देश के योग्य युवाओं को रोजगार नहीं मिल रहा।

धनतेरस : यमराज की पूजा का पर्व है धनतेरस

रमेश सर्राफ धमोरा

धनतेरस का त्योहार लोगों के जीवन में समृद्धि और स्वास्थ्य लाने के लिए मनाया जाता है। दीपावली का प्रारम्भ धनतेरस से हो जाता है। धनतेरस पूजा को धनत्रयोदशी के नाम से भी जाना जाता है। धनतेरस के दिन नई वस्तुएं खरीदना शुभ माना जाता है। धनतेरस के दिन चांदी खरीदने की भी प्रथा है। अगर सम्भव न हो तो कोई बर्तन खरीदें। इसके पीछे यह कारण माना जाता है कि यह चन्द्रमा का प्रतीक है जो शीतलता प्रदान करता है और मन में सन्तोष रूपी धन का वास होता है। हिंदू पौराणिक कथाओं के अनुसार ऐसा माना जाता है कि धनतेरस के दौरान अपने घर पर 13 दीये जलाना चाहिए और अच्छे स्वास्थ्य और समृद्धि के लिए प्रार्थना करनी चाहिए। जिसमें से सबसे पहले दक्षिण दिशा में यम देवता के लिए और दूसरा धन की देवी मां लक्ष्मी के लिए जलाना चाहिए। इसी तरह दो दीये अपने घर के मुख्य द्वार पर एक दीया तुलसी महारानी के लिए एक दीया घर की छत पर और बाकी दीये घर के अलग-अलग कोने में रख देने चाहिए। माना जाता है कि यह 13 दीये नकारात्मक ऊर्जा और बुरी आत्माओं से रक्षा करते हैं। धार्मिक और ऐतिहासिक दृष्टि से भी इस दिन का विशेष महत्व है। शास्त्रों में कहा है कि जिन परिवारों में धनतेरस के दिन यमराज के निमित्त दीपदान किया जाता है, वहां अकाल मृत्यु नहीं होती। घरों में दीपावली की सजावट भी इसी दिन से प्रारम्भ होती है। इस दिन घरों को लीप-पोतकर, चौक, रंगोली बना सायंकाल के समय दीपक जलाकर लक्ष्मी जी का आह्वान किया जाता है। इस दिन पुराने बर्तनों को बदलना व नए बर्तन खरीदना शुभ माना गया है। धनतेरस को चांदी के बर्तन खरीदने से तो अत्यधिक पुण्य लाभ होता है। इस दिन कार्तिक स्नान करके प्रदोष काल में घाट, गौशाला, कुआं, बावड़ी, मंदिर आदि स्थानों पर तीन दिन तक दीपक जलाना चाहिए। धनतेरस को धन्वन्तरी त्रयोदशी या धन्वन्तरि जयन्ती भी होती है। धनतेरस को आयुर्वेद के देवता का जन्म दिवस के रूप में भी मनाया जाता है। इस दिन गणेश-लक्ष्मी की मूर्ति घर लाई जाती हैं। इस दिन लक्ष्मी और कुबेर की पूजा के साथ-साथ यमराज की भी पूजा की जाती है। पूरे वर्ष में एक मात्र यही वह दिन है जब मृत्यु के देवता यमराज की पूजा की जाती है। यह पूजा दिन में नहीं की जाती अपितु रात्रि होते समय यमराज के निमित्त एक दीपक जलाया जाता है। धनतेरस के दिन यमराज को प्रसन्न करने के लिए यमुना स्नान भी किया जाता है अथवा यदि यमुना स्नान सम्भव न हो तो स्नान करते समय यमुना जी का स्मरण मात्र कर लेने से भी यमराज प्रसन्न होते हैं। हिन्दू धर्म में ऐसी मान्यता है कि यमराज और देवी यमुना दोनों ही सूर्य की सन्तान होने से आपस में भाई-बहन हैं और दोनों में बड़ा प्रेम है। इसलिए यमराज यमुना का स्नान करके दीपदान करने वालों से बहुत ही ज्यादा प्रसन्न होते और उन्हें अकाल मृत्यु के दोष से मुक्त कर देते हैं। धनतेरस के दिन यम के लिए आटे का दीपक बनाकर घर के मुख्य द्वार पर रखा जाता है। इस दीप को यमदीवा अर्थात यमराज का दीपक कहा जाता है। रात को घर की स्त्रियां दीपक में तेल डालकर नई रुई की बत्ती बनाकर, चार बत्तियां जलाती हैं। दीपक की बत्ती दक्षिण दिशा की ओर रखनी चाहिए। जल, रोली, फूल, चावल, गुड़, नैवेद्य आदि सहित दीपक जलाकर स्त्रियां यम का पूजन करती हैं। चूंकि यह दीपक मृत्यु के नियन्त्रक देव यमराज के निमित्त जलाया जाता है, अतः दीप जलाते समय पूर्ण श्रद्धा से उन्हें नमन तो करे हीं, साथ ही यह भी प्रार्थना कर

संक्षिप्त खबरें

बीडीओ के अध्यक्षता में बीएलटीएफ की बैठक आयोजित

मधुबनी खाजौली प्रखंड कार्यालय में गुरुवार को बीडीओ लवली कुमारी के अध्यक्षता में बीएलटीएफ की बैठक का आयोजन किया गया. इस बैठक के दौरान उपस्थित सीएचसी खाजौली के चिकित्सा पदाधिकारी डा. साहिद एकवाल,हेल्थ मैनेजर अर्चना भट्ट,बीसीएम शंम्भू कुमार,डब्लूएचओ रविंद्र ठाकुर सहित अन्य कर्मियों को कहा कि आगामी दस दिसंबर से पोलियो व्रक की मिशन को गुनवक्ता पूर्ण सुचारू रूप से चलाने का निर्देश दिया गया.उन्होंने कहा कि पोलियो व्रक अभियान पूर्व सभी दलकर्मियो को प्रशिक्षण देने का निर्देश दिया गया.वही बीडीओ ने कहा कि पोलियों व्रक से पूर्व आईस पैक की गुनवक्ता की जांच करने का निर्देश दिया गया.वही आगामी बीएलटीएफ को लेकर सभी कर्मियों द्वारा अपना अपना माइक्रो प्लान तैयार कर रिपोर्ट जमा करने का निर्देश दिया गया. वही बीडीओ लवली कुमारी ने उपस्थित स्वास्थ कर्मियो कहा कि आगामी पोलियों व्रक को लेकर सभी कर्मी एव पदाधिकारी अपने अपने कार्य मे जुट कर आगामी प्लस पोलियों व्रक बेहत्तर प्रदर्शन करने का निर्देश दिया.इस मौके पर बाल विकास के महिला पर्यवेक्षक पूजा कुमारी, स्वास्थ कर्मी उपेंद्र यादव सहित अन्य कर्मी मौजूद थे।

कपड़ा व्यवसाय के घर हुए डकैती, फरार आरोपी गिरफ्तार

दो जिंदा कारतूस एक देसी कट्टा भी बरामद

मधुबनी मधवापुर प्रखंड क्षेत्र अंतर्गत साहरघाट थाना पुलिस ने वाहन चेकिंग के दौरान एक किलो गांजा एक देसी पिस्टल एवं दो जिंदा कारतूस के साथ एक आरोपी को गिरफ्तार किया है इस संबंध में सहारघाट थाना परिसर में प्रेस को संबोधित करते हुए बेनीपट्टी एसडीपीओ नेहा कुमारी ने जानकारी देते हुए बताया कि बुधवार की शाम वाहन चेकिंग के दौरान एक वहान पर तीन लोग आता दिखाई पड़ा वहीं पुलिस को देख बाइक पर बैठे दो लोग भागने में कामयाब रहे जबकि वाहन चला रहे आरोपी को गिरफ्तार कर लिया गया गिरफ्तार आरोपी की पहचान सीतामढ़ी जिले के बेलसंड थाना क्षेत्र अंतर्गत जाफरपुर गांव के मोर सलीम का पुत्र मोहम्मद समी अलम के रूप में किया गया है पुलिस पूछताछ में दवा व्यवसाय के घर हुए भीषण डकैती मामले में उसने अपनी संलिप्त स्वीकार की है वही डकैती कांड के अन्य फरार आरोपी के गिरफ्तारी के लिए पुलिस नेपाल सुरक्षा बलों के संपर्क में रहने की जानकारी दी गई है।

एक बार फिर दो नाबालिग लड़कियों को किया गया रेस्क्यू

- चार आर्केस्ट्रा संचालकों को किया गिरफ्तार

प्रात : किरण संवाददाता

रक्सौल। एनसीपीसीआर दिल्ली के निर्देश में आर्केस्ट्रा पर मानव तस्करी रोधी इकाई क्षेत्रक मुख्यालय एसएसबी बेतिया कार्यालय 47वीं वाहिनी सशस्त्र सीमा बल रक्सौल, मिशन मुक्ति फाउंडेशन, रेस्क्यू फाउंडेशन, प्रयास जुबेनाइल एड सेंटर, चाइल्ड हेल्प लाइन रेस्क्यू एंड रिलीफ फाउंडेशन नौतन पुलिस थाना, महिला पुलिस थाना बेतिया के द्वारा छापा मारा गया। जिसमे नौतन थाना क्षेत्र के शिवराजपुर गांव में संचालित पूजा आर्केस्ट्रा से दो नाबालिग लड़कियों को आर्केस्ट्रा से मुक्त कराया गया और चार आर्केस्ट्रा संचालकों को गिरफ्तार किया गया, जिनमें आरोपी जिनके नाम मिठु, आफताब उर्फ आकाश, मदुकांत और एक नाबालिग लड़की है। एसएसबी एएचटीयू क्षेत्रक मुख्यालय बेतिया कार्यालय 47 वीं वाहिनी रक्सौल के मनोज कुमार शर्मा ने बताया कि मानव तस्करी रोकथाम और आर्केस्ट्रा में नाबालिग लड़कियों के शोषण की रोकथाम के लिए ह्लनिर्भया सुरक्षितह्व के नाम से एक अभियान चलाया गया। काउंसिलिंग में पीड़िताओं ने बताया कि नाबालिग लड़की अंजलि(काल्पनिक नाम) जो कि आर्केस्ट्रा संचालक है, बंगाल से दो अन्य लड़कियों को बहला फुसला कर ले कर आई थी। फिर इन लड़कियों से मिठु, आफताब उर्फ आकाश और मदुकांत अश्लिल डांस करवाते थे। काउंसिलिंग में एक लड़की सीमा (बदला हुआ नाम) ने बताया कि वो 8 वीं तक पढ़ी है। नाबालिग आर्केस्ट्रा संचालक अंजलि और उसका मामा फतेह उसको बहला फुसलाकर कर पैसों का लालच देकर बिहार लेकर आए और यहाँ पूजा आर्केस्ट्रा में संचालक को सौंप दिया। सीमा घर पर झगड़ा करके आई थी। उसके बाद यहां का माहौल देखकर उसने घर पर बात की घर वालों ने उसे ये काम करने से मना किया और वापस घर बुलाया, पर संचालक मिठू और नाबालिग लड़की संचालक ने उसे घर नही जाने दिया। लेकिन पीड़ित लड़की एक बार यहां से भाग भी गई, पर दुर्भाग्यवस उसको नौतन के पास से ही पकड़ लिया और सोनाली (काल्पनिक नाम) के ऊपर एक बोंड भी लिखा की तुम जब यहां से भागी थी 50000/- रुपए भी ले गई थी और उसको धमकी दी की पहले 30000/- रुपए दो या फिर अपने बदले किसी और लड़की को लेकर आए तभी जाने दिया जाएगा।

इसलिए वो वापस नही जा सकी। उसने बताया कि एक लड़की को यहां से पैसे लेकर वापस भेज दिया, पर इसको लालच दिया की एक बार लगन होने पर एक लाख रुपए मिल जायेंगे। नाबालिग लड़की संचालक अंजलि और मिठु नाम का व्यक्ति उसके साथ मारपीट करते, गालियां देते और उससे पूरा काम कराते, अंजलि पीड़ित लड़की से कहती थी कि मेरे अलावा किसी से बात नही करोगी। दूसरी पीड़ित लड़की सीमा जो कि सोनारपुर पश्चिम बंगाल की रहने वाली है। सीमा ने बताया की उसको यहां आने का प्रलोभन भी अंजलि ने ही दिया था, जिसके बाद सानिया ने अपने घर पर झूठ बोला की वह अपने दोस्तों के साथ असम घूमने जा रही है और झूठ बोलकर वह अंजलि के मामा फतेह और अपने बॉयफ्रेंड आफताब के साथ बिहार आई और फतेह ने उसको अंजलि के पास उसके आर्केस्ट्रा में छोड़ कर चले गए, आफताब वहीं सीमा के साथ रुक गया। सीमा ने बताया की वह और आफताब ने उस शादी का झांसा दिया है। यहाँ पर उसको एक शादी में डांस करने के मेहनताने पर उसको 2000 रूपए दिए जाने का वादा किया गया था, पर अभी तक उसको सिर्फ 300 या 400 रुपए ही दिए जाते है और खुद के खर्च के लिए कोई भी पैसे नही मिलते है। वही नाबालिग आर्केस्ट्रा संचालक अंजलि ने बताया की उसके पापा ने दूसरी शादी कर रखी है एल, इसलिए वो पहले अपनी मौसी और मम्मी के साथ मिसरौली आई थीं, जहाँ पर उसे मिठू नाम का एक व्यक्ति मिला। मिसराउली में अंजलि की मम्मी ने भी एक महीने तक आर्केस्ट्रा में काम किया था, उसके बाद उसकी मम्मी वापस उसको लेकर बंगाल चली गई, लेकिन अंजलि के पुरुष मित्र मिठू ने उसे वापस बिहार बुला कर अपने भाई अशोक के आर्केस्ट्रा में काम दिलवा दिया, बस फिर उसने इसे ही जीवन मान लिया और अपराध की दुनिया मे कदम रख दिया। दोनों पीड़ित लड़िकयों का मेडिकल करा कर चारों ऑर्केस्ट्रा संचालको पर एफआईआर दर्ज किया गया और पीडिता लड़कियों को आश्रय गृह भेजा गया। इस रेस्क्यू टीम में इंस्पेक्टर मनोज कुमार शर्मा, कांस्टेबल ड्रावर राहुल भीमराव चार्टसे, कांस्टेबल चकमा कांस्टेबल पम्मी मिश्रा, कांस्टेबल कल्पना बाजपेई, कांस्टेबल इग्निशियस लेपचा। बेतिया पुलिस थाना इंस्पेक्टर एससी माधव व महिला थाना बेतिया से सब इंस्पेक्टर सुधा कुमारी व अन्य पुलिस बल, मिशन मुक्ति फॉउंडेशन से डाइरेक्टर वीरेंद्र कुमार, दिलीप कुमार, रेस्क्यू फॉउंडेशन से त्रिवेणी आचार्य फाउंडर, अक्षय पांडे जाँच पदाधिकारी प्रयास जुवेनाइल से पवन कुमार अमित कुमार, अनुप्रिया विलियम, सोनू कुमार, थाना नौतन से एसआई अमरजीत भारद्वाज व पुलिस बल आदि शामिल थे।

धूमधाम से की जाएगी भगवान चित्रगुप्त की पूजा अर्चना

प्रात : किरण संवाददाता

मुरलीगंज प्रखंड क्षेत्र के रामपुर वार्ड आठ में कायस्थ समाज द्वारा भगवान चित्रगुप्त की वार्षिक पूजा को ले कर बैठक आयोजित की गई। बैठक में प्रति वर्ष दीपावली के दूसरे दिन होने वाली इस पूजा को ले तैयारी पर विचार विमर्श किया गया। कायस्थ समाज के सदस्यों ने बताया कि दिपावली के दूसरे दिन कृष्ण पक्ष के द्वितीया तिथि को कायस्थ समाज अपने अराध्य की भगवान चित्रगुप्त महाराज की पूजा-अर्चना करते हैं। इस बार पूजा का आयोजन रामपुर वार्ड आठ में राजेन्द्र लाल दास के दरवाजे पर धूम धाम से की जाएगी। पूजा को लेकर जोर शोर से तैयारी की जा रही है। पूजा अर्चना के बाद भजन संध्या कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया है। जो शाम 07 बजे से मध्य रात्रि तक आयोजित होगा।

श्रद्धालुओं को पूजा अर्चना में किसी प्रकार की दिक्कत ना हो इसके लिए पूजा पंडाल में विशेष व्यवस्था की जाएगी। बताया गया कि धर्म शास्त्रों के अनुसार भगवान चित्रगुप्त यमराज के सहायक है जो स्वर्गलोक का लेखा जोखा रखते हैं। वैसे जो लोग भी लिखते पढ़ते हैं और इस धर्म के प्रति आस्था रखते हैं, उन्हें भी भगवान चित्रगुप्त की पूजा करनी चाहिए। बैठक में मुख्य रूप से नरेश लाल दास, अमरेंद्र प्रसाद वर्मा, नरेन्द्र लाल दास, प्रमोद वर्मा, बिनोद वर्मा, धीरज वर्मा, ज्योतिष वर्मा, मानस वर्मा, सुशांत वर्मा, रिप्पू वर्मा, मिक्कू वर्मा, आनंद वर्मा सहित कई लोग उपस्थित रहे।

सऊदी में दुर्घटना से मृत्यु के बाद शव को मंगाकर परिजनों को सौंपा गया

प्रात : किरण संवाददाता

रक्सौल। स्व. मुमताज अंसारी के पार्थिव शरीर को उनके घर खोड़ी पाकर तकिया, प्रखंड हरसिद्धि में शाम 7:40 अपराहन में सौपा गया। पूर्व से मुमताज अंसारी सऊदी अरब में काम कर रहे थे। इस दौरान उनकी मृत्यु दुर्घटना से सऊदी अरब में ही हो गई। घटना की सूचना माह सितंबर-2023 में श्रम अधीक्षक, पूर्वी चंपारण, मोतिहारी को जिलाधिकारी, पूर्वी चंपारण, मोतिहारी के माध्यम से प्राप्त हुआ।

उक्त आवेदन पत्र कार्रवाई करते हुए श्रम अधीक्षक, पूर्वी चंपारण, मोतिहारी द्वारा बिहार राज्य प्रवासी मजदूर दुर्घटना अनुदान योजना-2008 के अंतर्गत रु.1 लाख मात्र का अनुदान स्वीकृत करते हुए भुगतान दो दिनों के अंदर मृतक के निकटतम आश्रित गुलनाज नेशा को भुगतान कर देने की बात कही गई। फिर मृतक के पिता समीर अंसारी द्वारा अपने पुत्र की पार्थिव शरीर को घर मंगवाने हेतु जिलाधिकारी एवं श्रम अधीक्षक,पूर्वी चंपारण, मोतिहारी से अनुरोध किया गया। श्रम अधीक्षक द्वारा निरंतर प्रयास करते हुए मृतक के पार्थिव शरीर को सऊदी अरब से पटना तक निःशुल्क मंगाया गया। पुनः दिनांक-07 नवंबर को मृतक के पिता को सूचना मिली कि आपके पुत्र की पार्थिव शरीर विमान द्वारा पटना आ रहा है। मृतक पिता समीद अंसारी द्वारा श्रम अधीक्षक, पूर्वी चंपारण से अनुरोध किया गया कि मेरे आर्थिक स्थिति काफी दयनीय है, कृपया कर मेरे पुत्र का पार्थिव शरीर को पटना से घर मंगाया जाये। फिर श्रम अधीक्षक, पूर्वी चंपारण द्वारा जिला प्रशासन पूर्वी चंपारण की मदद से उनके पार्थिव शरीर को उनके घर सौपा गया। उक्त मौके पर श्रम संसाधन विभाग के सभी पदाधिकारी एवं कर्मी गण उपस्थित थे।

घर से बरामद हथियार एवं गोली समेत 5 हिरासत में

प्रात : किरण संवाददाता

रक्सौल। पड़ोसी देश नेपाल के बारा जिला सिमरौन गढ़ में एक घर में रखे अवैध हथियार समेत 5 लोगों को पुलिस ने हिरासत में लिया है। पुलिस ने बताया की ऐसी सूचना मिली कि सिमरौनगढ़ के वार्ड नंबर 11 भगवानपुर निवासी रूलाल पटेल के 40 वर्षीय पुत्र उपेंद्र पटेल अपने घर में हथियार छुपा कर रखा हुआ है। उसके बाद स्थानीय पुलिस ने उस घर की तलाशी ली, जिसके बाद वहां से एक पॉलीथिन झोला के भीतर एक कपड़ा में लपेट कर रखे हथियार को बरामद किया गया, जिसमें 1 रिभाल्वर, 1 नालकटूवा एवं 10 राउंड गोली बरामद हुआ। जिसके बाद वहां से 5 लोगों को हिरासत में लिया गया, जिनमें 40 वर्षीय उपेंद्र पटेल, 27 वर्षीय धीरेंद्र पटेल, 62 वर्षीय रूपलाल पटेल, 44 वर्षीय राजमंगल पटेल एवं 80 वर्षीय शोभा राऊत शामिल है।

धान चक्की में फंसकर सिर के भीतर से उखड़ गए सारे बाल, एसआरपी ने बचाई जिंदगी

पीड़िता को देख कांप जाएगी रूह, 6 घंटे में हुआ सफल ऑपरेशन

प्रात : किरण संवाददाता

रक्सौल। भारत-नेपाल सीमा स्थित रक्सौल में जब से एसआरपी मेमोरियल हॉस्पिटल संचालित है, तब से एक से बढ़कर एक ऑपरेशन हॉस्पिटल द्वारा करके मरीजों की जिंदगी बचाई गई है। अब एक बार फिर रक्सौल के लक्ष्मीपुर स्थित एसआरपी मेमोरियल हॉस्पिटल के निदेशक डॉ. सुजीत कुमार ने एक ऐसा सफल ऑपरेशन किया है, जिसकी जितनी प्रशंसा की जाए, वो कम है। उन्होंने एक 16 वर्षीया लड़की की जिंदगी बचाई है, जो अंतिम स्टेज में हॉस्पिटल में लाई गई। पूरी जानकारी देते हुए बता दें की बीते दिन एक ऐसी 16 वर्षीया बच्ची लाई गई, जो धान चक्की मशीन के पट्टे के चपेट में आ गई और उसके सारे बाल सिर के भीतर जड़ से उखड़ गई, जिसके बाद बच्ची तो जिंदा थी, परंतु ये कल्पना करने वाली बात है की जब एक बाल उखड़ने पर कितना दर्द होता है तो सारे बाल एकसाथ उखड़ने पर कितना दर्द हुआ होगा। आगे आनन-फानन में उक्त बच्ची को एसआरपी लाया गया, जहां भगवान के दूसरे रूप कहे जाने वाले डॉ. सुजीत कुमार ने लगभग 6 घंटे तक उसका सफल ऑपरेशन कर उसकी जिंदगी दुबारा लौटाई। मेडिकल भाषा में इस स्कैल्प एवल्शन कहा जाता है, जिसमें बाल पूरी तरह से चमड़ी से बाहर आ गया था। खैर ये जानने और सुनने वालों में करोड़ों लोग ऐसी कल्पना नहीं किए होंगे, परंतु डॉ. सुजीत कुमार ने बताया की उनके कार्यकाल का ये चौथा मामला है। इस तरह के दो मामले भरतपुर, एक मामला काठमांडू और एक अब रक्सौल में आया था, सबका उन्होंने सफल ऑपरेशन किया है। गौर करने वाली बात है कि ये निश्चित तौर पर एक अद्भुत ऑपरेशन है और मामला है।

रक्तदान और कॉपी कलम बाटकर तेजस्वी का मनाया जन्मदिवस

प्रात : किरण संवाददाता

मधेपुरा राजद महिला प्रदेश उपाध्यक्ष कुमारी विनीता भारती ने मधेपुरा सदर अस्पताल में रक्तदान करके व रक्तदान शिविर लगवाई, सदर अस्पताल में मरीजों के बीच फल वितरण की साथ ही साथ महादलित बस्ती में बच्चों के बीच कॉपी - कलम किताब का वितरण करके बिहार के उपमुख्यमंत्री तेजस्वी यादव का 34वा जन्मदिन मनाई। मौके पर मौजूद कुमारी विनीता भारती ने कहा कि समाज के अंतिम व्यक्ति तक शिक्षा की अलख जगाने के लिए महादलित बस्ती में बच्चों के बीच कॉपी - कलम का वितरण किया गया। उन्होंने जन्मदिवस के मौके पर खुद रक्तदान करके खुद को शोभाग्यशाली व गर्व महसूस की। रक्तदान शिविर में अंकित आनंद, ओम यदुवंशी, पुष्पक कुमार, सुसब कुमार, शैलेन्द्र कुमार, दीपक कुमार, मुरारी कुमार यादव, विकास कुमार, सुशील कुमार, विवेक कुमार सहित दर्जनों रक्तवीर ने रक्तदान किया।

बालिकाओं को आत्मनिर्भर बनाने को ले 2 दिवसीय मार्शल आर्ट का प्रशिक्षण

प्रात : किरण संवाददाता

मधेपुरा महिला एवं बाल विकास निगम बिहार के निदेशानुसार जिला प्रशासन, मधेपुरा द्वारा गुरुवार को राजकीय केशव कन्या उच्च विद्यालय में बालिकाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए 2 दिवसीय मार्शल आर्ट का प्रशिक्षण आयोजित की गई। जिसका शुभारंभ अपर समाहर्ता अरुण कुमार सिंह, जिला प्रोग्राम पदाधिकारी सह नोडल पदाधिकारी श्रीमती रश्मि कुमारी, जिला सूचना एवं जनसंपर्क पदाधिकारी, कुंदन कुमार सिंह, जिला शिक्षा पदाधिकारी सुश्री यशस्वी, सहायक निदेशक, सामाजिक सुरक्षा कोषांग एवं डॉ शांति यादव, अध्यक्ष, स्थानीय शिकायत समिति, मधेपुरा ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर किया। कार्यक्रम में उपस्थित अतिथियों का स्वागत केशव कन्या विद्यालय की छात्राएं एवं सृजन दर्पण के कलाकारों द्वारा स्वागत गान से किया गया। कार्यक्रम के दौरान निगम द्वारा संचालित विभिन्न योजनाएं यथा- वन स्टॉप सेंटर, जिला हब फॉर एंपावरमेंट ऑफ वीमेन, बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना के बारे में छात्राओं को विस्तृत रूप से बताया गया। कार्यक्रम में कन्या जन्म को प्रोत्साहित करने के लिए मदनपुर पंचायत के दो शिशु कन्या तृष्णा तन्वी एवं जिया कुमारी सहित इनके माता-पिता को कन्या जन्म बधाई संदेश देते हुए सम्मानित किया गया तथा केशव कन्या विद्यालय में कक्षा-9 में वार्षिक परीक्षा में प्रथम संगम कुमारी, द्वितीय भाव्या कुमारी, तृतीय आद्रिका कश्यप एवं कक्षा-11 में प्रथम दीपम कुमारी, द्वितीय स्वाति कुमारी, तृतीय स्थान प्राप्त करने वाली आँचल कुमारी तथा कबड्डी प्रतियोगिता में बेहतर प्रदर्शन करने वाली आयुषी, राखी, निभा कुमारी को जिला प्रसाशन द्वारा सम्मानित किया गया। कार्यक्रम कार्यक्रम को संबोधित करते हुए अपर समाहर्ता श्री सिंह ने कहा कि अब बालिकाओं को घबराने की जरूरत नहीं है महिला एवं बाल विकास निगम द्वारा बेटियों के उत्थान के लिए कई कल्याणकारी योजनाएं जिला प्रशासन के सौजन्य से संचालित किए जा रहे हैं जिसके माध्यम से छात्राओं की सुरक्षा, संरक्षा एवं सशक्तिकरण का ध्यान रखा जा रहा है। मार्शल आर्ट का प्रशिक्षण छात्राओं के आत्मरक्षा के लिए अहम भूमिका निभाएगी। वहीं जिला प्रोग्राम पदाधिकारी-सह-नोडल पदाधिकारी श्रीमती रश्मि कुमारी ने कहा कि जिला समाहरणालय परिसर में वन स्टॉप सेंटर एवं जिला हब फॉर एंपावरमेंट ऑफ वीमेन कार्यालय संचालित है। जिसके माध्यम से घरेलू हिंसा, लैंगिक उत्पीड़न के साथ-साथ महिलाओं से संबंधित सभी तरह के समस्याओं का समाधान एक छत के नीचे किया जा रहा है। इसके अलावा घर बैठे 181 के माध्यम से भी महिलाएं एवं छात्राएं अपनी शिकायत दर्ज करा सकती है।, महिला थाना के दीपमाला कुमारी द्वारा आपातकालीन हेल्पलाइन नम्बर-112 के बारे में विस्तृत रूप से बताया गया। डी.आर.सी.सी संतोष कुमार के द्वारा कौशल युवा कार्यक्रम के बारे में छात्रों को जानकारी दी गई। कार्यक्रम में स्कूल की प्रधानाध्यापिका अंशु कुमारी, स्थानीय शिकायत समिति के सदस्य, अर्चना कुमारी, अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी सह मार्शल आर्ट प्रशिक्षक सुश्री सोनी राज, जिला मिशन समन्वक मो. इमरान आलम, केंद्र प्रशासक कुमारी शालिनी, लैंगिक विशेषज्ञ राजेश कुमार, सृजन दर्पण के सभी कलाकार, एमटीएस दीपक कुमार मल्लिक, स्कूल की छात्राएं विद्या, खुशी, चाँदनी, अंजली, कश्मीरा, नेहा, सृष्टि, पायल के साथ-साथ कई स्कूल की छात्राएं मौजूद थी।

पॉलिटेक्निक मधेपुरा में खेलकूद कार्यक्रम के तहत स्पर्धा -2.0 का सफल आयोजन

प्रात : किरण संवाददाता

मधेपुरा जिले के चौसा प्रखंड के कलासन स्थित राजकीय पॉलिटेक्निक मधेपुरा में विभिन्न प्रकार के खेलकूद कार्यक्रम के तहत स्पर्धा -2.0 का सफल आयोजन किया गया जिसमें छात्र-छात्राओं ने बढ़ चढ़कर भाग लेकर अपनी प्रतिभा का खुलकर प्रदर्शन किया। जिसका उद्घाटन महाविद्यालय के प्राचार्य अजय कुमार सिंह ने किया। प्रतिभागियों द्वारा माशाल के साथ संस्थान परिसर में भ्रमण किया गया तथा स्पर्धा के द्वितीय संस्करण का आगाज किया।जिसमें शतरंज, कबड्डी, वॉलीबॉल, बैडमिंटन,कैरमबोर्ड,ऊंची कूद, भाला फेंक, रस्सी खींच,गोला फेंक, 200 एवं 4060 मी दौड़ एवं रंगोली जैसे विभिन्न प्रकार के खेलों में छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए प्राचार्य अजय कुमार सिंह ने कहा कि इस तरह के आयोजनों से छात्र-छात्राओं की सहभागिता और समन्वय की भावना का विकास होता है। जीवन में शिक्षा के साथ-साथ मानसिक एवं शारीरिक विकास के लिए खेल भी आवश्यक है।खेल और योग न केवल तंदुरुस्त रखता है बल्कि एकाग्रता का स्तर भी सुधारता है।उन्होंने कहा कि स्कूलों और कॉलेजों में खेल को अनिवार्य विषय बनाना खेल संस्कृति को आगे बढ़ाने का सबसे अच्छा तरीका है। खेलों में भाग लेने के तमाम फायदे समझाते हुए श्रीसिंह ने कहा कि किसी भी प्रकार का शारीरिक व्यायाम न केवल युवाओं को तंदुरुस्त रखता है बल्कि उनके एकाग्रता के स्तर को भी सुधारता है।खेल युवाओं में सामाजिक लगाव, टीम भावना और आत्म-विश्वास की भावना पैदा करते हैं। स्पर्धा 2.0 में शामिल प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पर आए प्रतिभागियों को पुरस्कृत एवं सहभागिता प्रमाण पत्र भी दिया जाएगा। कार्यक्रम के सफल आयोजन में खेल प्रभारी किसलय कुमार केशव, बिंदेश्वर पारित,मनीष कुमार दास, गोपाल कुमार,अमित कुमार,श्याम कुमार साफी, रवि रंजन, मंजीदा खातून, संजीदा खातून, रवि कुमार गाड़ा,परमानंद कुमार, राकेश कुमार,अमित कुमार गुप्ता आदि की भूमिका सराहनीय रही।

गुप्त सूचना के आधार पर सशस्त्र सीमा बल के जवानों ने नशीले पदार्थ को किया जब्त

प्रात : किरण संवाददाता

मधुबनी सशस्त्र सीमा बल 48वीं वाहिनी जयनगर के कार्यक्षेत्र भारत नेपाल सीमा चौकी बैथौन्हा के जिम्मेवारी के इलाके में सशस्त्र सीमा बल के जवानों को एक बड़ी कामयाबी मिली है। गुप्त सूचना के आधार पर गोविंद सिंह भंडारी कमांडेंट 48वीं वाहिनी सशस्त्र सीमा बल जयनगर के निदेर्शानुसार त्वरित कार्यवाही करते हुए निरीक्षक लो केन्द्र कुमार समवाय प्रभारी कमला की अगुवाई में सशस्त्र सीमा बल के जवानों और स्थानीय पुलिस जयनगर के साथ की गयी संयुक्त कार्यवाही में भारतीय-नेपाल सीमा स्तम्भ संख्या 268/17 से 650 मी भारतीय क्षेत्र में लाल बाबु सिंह उम्र 39 वर्ष पुत्र स्वर्गीय राम स्वरूप सिंह वार्ड 08 बैथौन्हा पुलिस स्टेशन जयनगर जिला मधुबनी को उसके निजी घर में अवैध रूप से रखे हुए प्रतिबंधित नशीले पदार्थ ब्राउन सुगर 175 ग्राम देशी कट्टा 01 नग, एक मोटरसाईकिल के साथ गिरफ्तार किया। जब्त किए गए सामान को अग्रिम कार्यवाही हेतु जयनगर थाने के सुपुर्द कर दिया गया है । भारत नेपाल सीमा पर तस्करी रोकने के लिए सशस्त्र सीमा बल और बिहार पुलिस लगातार अभियान चला रही है। आने वाले समय में भी इसी प्रकार अभियान चलाकर सीमा पर होने वाली अवैध गतिविधियों को रोका जाएगा । गोविंद सिंह भंडारी कमांडेंट 48वीं वाहिनी जयनगर ने बताया कि भारत नेपाल सीमा पर होने वाली तस्करी और अन्य अपराधों की रोकथाम के लिये विशेष अभियानों के माध्यम से निरन्तर प्रयासरत है और अवैध गतिविधियों को रोका जा रहा है। भारत-नेपाल सीमा पर 48वीं वाहिनी सशस्त्र सीमा बल जयनगर के द्वारा सतर्कता बढ़ा दी गई है। ताकि इस प्रकार की गतिविधियों पर पूर्णरूप से प्रतिबंधित लगाया जा सके ।

रक्तदान कर बचाई 85 वर्षीय वृद्ध की जान

प्रात : किरण संवाददाता

मधेपुरा सार्वजनिक बड़ी दुर्गा स्थान के सदस्य कुंदन विक्रम के माध्यम से संकल्प मैत्री फाउन्डेशन के संस्थापक सुनीत साना को पता चलने पर की भूपेंद्र नारायण मंडल विश्वविद्यालय के केमिस्ट्री विभाग नरेश कुमार के परिचित मनहरा सुखासन मधेपुरा निवासी 85 वर्षीय सचिंद्र प्रसाद यादव को बी पॉजिटिव रक्त की आवश्यकता है। तो उन्होंने पेशेंट का सारा डिटेल लेकर संस्था के व्हाट्सएप ग्रुप एवं फेसबुक पेज पर पोस्ट कर रक्त देने की अपील रक्तवीरों से की। जहां शहर के जयपाल पट्टी वार्ड नंबर 14 निवासी रंजीत सिंह के पुत्र ऋषिराज सिंह ने ऋषिराज सिंह ने अपने सारे कामों को विराम लगाते हुए सदर अस्पताल स्थित ब्लड बैंक पहुंच रक्तदान कर मानवता का परिचय दिया। साथ ही उन्होंने आम जनों से अपील करते हुए कहा कि आप भी किसी शुभ अवसर या अन्य दिन रक्तदान कर किसी जरूरतमंद की जिंदगी बचा सकते हैं।

मंजौरा पुलिस कैंप प्रांगण में शांति समिति की बैठक आयोजित

प्रात : किरण संवाददाता

उदाकिशुनगंज अनुमंडल क्षेत्र के बिहारीगंज थाना अंतर्गत मंजौरा पुलिस कैंप प्रांगण में गुरुवार को शांति समिति की बैठक अनुमंडल पदाधिकारी एस जेड हसन की अध्यक्षता में आयोजित की गई। जिसमें आगामी होने वाले पर्व दीपावली एवं छठ पूजा को लेकर विशेष चर्चा किया गया। बैठक के दौरान श्री हसन ने लोगों से दीपावली के मौके पर पटाखे एवं आतिशबाजी से दूर रहने की अपील की। उन्होंने छठ पर्व को लेकर छठ घाट की साफ सफाई का निर्देश दिया। उन्होंने कहा कि पर्व के अवसर पर जगह-जगह मजिस्ट्रेट की कड़ी निगरानी रहेगी ताकि किसी भी असामाजिक तत्व के द्वारा भड़काऊ पोस्ट व्हाट्सएप एवं सोशल मीडिया के द्वारा डालने पर ऐसे व्यक्ति को चिन्हित कर दंडात्मक कार्रवाई की जाएगी। मौके पर पुलिस निरीक्षक सुरेश प्रसाद सिंह, अंचल अधिकारी हरिनाथ राम, एस आई अमित रंजन, मंजूर पुलिस कैंप प्रभारी विनोद कुमार, ग्रामीण पुलिस संतोष कुमार, ललन कुमार, जिला परिषद प्रतिनिधि अजय शंकर सिंह, उप प्रमुख राजेश कुमार रंजन, मुखिया प्रतिनिधि सिकंदर अंसारी, समिति प्रतिनिधि विपिन मंडल, पैक्स प्रतिनिधि अरशद अंसारी, सरपंच प्रतिनिधि समसुल अंसारी, ललन शाह, उपेंद्र मेहता, आजाद अंसारी, मिथिलेश राम, चंदन सिंह, अजीत कुमार सिंह, राकेश कुमार सिंह, जय चंद यादव सहित अन्य गणमान्य ग्रामीण मौजूद थे।

संक्षिप्त खबरें

राजद कार्यकर्ताओं ने तेजस्वी यादव का 34 वा जन्मदिन केक काट कर मनाया

शेरघाटी।बिहार के उपमुख्यमंत्री तेजस्वी यादव का गुरुवार को राजद कार्यकताओं ने केक काट कर 34वां जन्मदिन मनाया। इसको लेकर राजद के समर्थकों के बीच काफी उत्साह देखा गया। इस दौरान कार्यकताओं ने उनके राजनीतिक तरक्की के लिए प्रार्थना किया एवं ईश्वर से दीघार्यु होने की कामना किया। इस मौके पर प्रखंड अध्यक्ष जितेंद्र यादव, रामचंद्र प्रसाद यादव, कृष्णानंद कुमार, टुनटुन अग्रवाल, कामदेव यादव सहित अन्य कार्यकताओं ने केक काटा।इस मौके पर कार्यकताओं ने तेजस्वी यादव को बिहार के भावी मुख्यमंत्री बताया। उन्होंने कहा कि लालूप्रसाद यादव ने गरीबों को आवाज दी, तो तेजस्वी ने बेरोजगारों को रोजगार दिया। उन्होंने कहा कि बड़े उत्साह से आज उनका 34वां जन्म दिवस मनाया जा रहा है।इस अवसर पर सैकड़ो कार्यकताओं ने तेजस्वी यादव जिंदाबाद के नारे लगाए।

एसडीओ ने जनता दरबार लगाकर मामलो का किया सुनवाई

शेरघाटी।अनुमंडल पदाधिकारी अनुग्रह नारायण सिंह ने गुरुवार को अनुमंडल कार्यालय सभागार भवन में भूमि विवाद से संबंधित मामलों का जनता दरबार लगाकर सुनवाई किया गया।बातचीत के दौरान एसडीओ ने बताया कि भूमि विवाद मामले अनुमंडल क्षेत्र के विभिन्न प्रखंडों में लंबित पड़े हुए हैं।इसको लेकर प्रत्येक गुरुवार को जनता दरबार लगाया जाता है जिसमें दूरदराज से आने वाले लोगों को जल्दी सुनवाई कर उसे निपटारा किया जाता है।वही गुरुवार को आधा दर्जन मामलों का ऑन द स्पॉट निष्पादन किया गया एसडीओ ने बताया कि प्रत्येक गुरुवार को जनता दरबार लगाया जाता है।

पंचायत में स्थानीय सांसद का शिलापट्ट पर नाम अंकित नहीं होने पर आक्रोष

कैमूर।रामगढ़ थाना प्रखंड क्षेत्र के बंदीपुर गांव निवासी स्वर्गीय सूरज तिवारी के पुत्र अभय तिवारी ने नगर कार्यपालक पदाधिकारी रामगढ़ को आवेदन देकर कहा है कि बक्सर लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र के सांसद अश्विनी कुमार चौबे का नाम नगर पंचायत में शिलापट्ट पर अंकित नहीं होता। उन्होंने कहा कि रामगढ़ नगर पंचायत में विभिन्न योजनाओं में स्थानीय विधायक, एमएलसी का नाम अंकित होता है लेकिन संसद का नाम नहीं होता है दूसरी तरफ उन्होंने कहा है कि नगर पंचायत में नवनियुक्त मुख्य पार्षद, उपमुख्य पार्षद, वार्ड पार्षद, कार्यपालक पदाधिकारी एवं कनीय अभियंता का नामांकित किया जाए। उन्होंने प्रेस विज्ञप्ति जारी करते हुए कहा कि अगर नगर पंचायत में नामांकित नहीं होता है तो कोर्ट के शरण में जाने के लिए बाध्य होंगे।

युवा राजद द्वारा मनाया गया उप मुख्यमंत्री का जन्मदिन

गया।बिहार के उप मुख्यमंत्री तेजस्वी प्रसाद यादव के 34वां जन्मदिन के अवसर पर युवा राजद गया द्वारा ओटीए ग्राउंड में वृक्षारोपण कर पूरे हर्षोल्लाह के साथ मनाया गया है। इस मौके पर युवा राजद प्रदेश उपाध्यक्ष विश्वनाथ यादव, प्रधान महासचिव पवन वर्मा, महासचिव विरेन्द्र कुमार गोप,जिला उपाध्यक्ष दिव्यांश कुमार, रविंद्र यादव दिलीप कुमार ब्रजेश कुमार तारकेश्वर यादव जितेंद्र यादव प्रभात रंजन आमिर सोहेल देवी यादव चंदन वर्मा शंभू कुमार हैप्पी यदुवंशी बजरंगी यादव शैलेश कुमार बालेसर यादव मौजूद रहे।

जिला पदाधिकारी ने कल्याणकारी योजनाओं के बारे में जनता को दी जानकारी

औरंगाबाद। जिला पदाधिकारी श्रीकांत शास्त्री की अध्यक्षता में कुटुंबा प्रखंड के ग्राम पंचायत- परता में जन संवाद कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर सरकार की कल्याणकारी योजनाओं के बारे में जनता को जानकारी दी गई। सर्वप्रथम जिला पदाधिकारी, अपर समाहर्ता, उप विकास आयुक्त, अनुमंडल पदाधिकारी एवं अन्य वरीय पदाधिकारियों द्वारा द्वीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। उक्त कार्यक्रम में उपस्थित जनता को संबोधित करते हुए कई महत्वपुर्ण बातों को जनता के साथ साझा किया गया। साथ ही आम जनता द्वारा सरकार द्वारा क्रियान्वित किये जा रहे कल्याणकारी योजनाओं से किस प्रकार उन्हें लाभ पहुँच रहा है, इसके बारे में विस्तार से बताया गया। जिला पदाधिकारी, औरंगाबाद द्वारा जनसंवाद कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य बताते हुए सरकार के महत्वपुर्ण योजनाओं के संबंध में विस्तृत रूप से जानकारी जनता के समक्ष रखा गया।

मतदाता पुनरीक्षण को ले एडीएम की अध्यक्षता में सभी दल के कार्यकर्ताओं के साथ बैठक आयोजित

प्रात : किरण संवाददाता

सहरसा। निर्वाचक निबंधन पदाधिकारी 77 महिषी विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र सह अपर समाहर्ता की अध्यक्षता में गुरुवार को सभी मान्यता प्राप्त दलों की प्रतिनिधियों के साथ विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण तिथि 1 जनवरी 24 साथ ही आगामी चुनाव 24 से संबंधित महत्वपूर्ण बिंदुओं पर बैठक आयोजित की गई। जिसके अंतर्गत फोटो निर्वाचक सूची के संबंध में बताया गया कि दिनांक 27 अक्टूबर को मान्यता सूची का प्रारूप प्रकाशन किया जाना है। जिसके आलोक में दिनांक 27 अक्टूबर से 9 दिसंबर तक दावा आपत्ति प्राप्त किया जाना है।

इस संबंध में उपस्थित सदस्यों से अनुरोध किया गया कि निर्धारित समय अवधि में अधिक से अधिक योग्य मतदाताओं एवं युवा मतदाताओं के मतदाता सूची में पंजीकरण हेतु अपेक्षित सहयोग प्रदान करेंगे। उपस्थित सदस्यों को उपमुख्य निर्वाचन पदाधिकारी बिहार पटना द्वारा सहित दिशा निर्देश के आलोक में सूचित किया गया की मान्यता प्राप्त राजनीतिक दल प्रत्येक मतदान केंद्र के लिए एक बीएलए नियुक्त करेंगे। जो की प्रोडक्शन अवधि में बीएलओ के सीधे जुड़े रहेंगे।सभी मान्यता प्राप्त राजनीतिक दलों के बी एल ए के साथ प्रारूप निर्वाचक नामावली को देखेंगे और सुधार को चिन्हित करेंगे। यहां यह महत्वपूर्ण है की मान्यता प्राप्त राजनीतिक दलों द्वारा नियुक्त बीएलए एक बार नियुक्त होने पर लगातार काम करेंगे।जब तक कि उनकी नियुक्ति संबंधित राजनीतिक दल द्वारा रद्द नहीं की जाती है। उपस्थित सदस्यों को यह भी जानकारी दी गई कि आयोग द्वारा मान्यता प्राप्त राजनीतिक दलों को यह अनुमति दी गई है कि उनके द्वारा अधिकृत बी एल ए थोक में आवेदन जमा कर सकता है। इस के साथ कि वह 1 दिन में एक बार बीएलओ को 10 आवेदन से ज्यादा जमा नहीं करेगा। यदि बी एल ए दावे आपत्तियों को दायर करने की संपूर्ण अवधि में 30 आवेदनों से ज्यादा जमा करता है तो तब निर्वाचक निबंधन प्राधिकारी सहायक निर्वाचन निर्वाचक निबंधन पदाधिकारी स्वयं इसका सत्यापन करेंगे। इसके अतिरिक्त आवेदन पत्रों की सूची इस के अतिरिक्त बी एल ए बी आवेदन पत्रों की सूची इस घोषणा के साथ जमा करेगा कि उसने सभी आवेदन पत्रों की जानकारी की जांच स्वयं की है। और इस बात से संतुष्ट हैं कि आवेदन में दी गई जानकारी सही है। कमजोर एवं वंचित समुदाय क्षेत्र में अधिक से अधिक निर्वाचन पंजीकरण हेतु नगर पंचायत क्षेत्र के आरक्षित क्षेत्र में जिला स्तर से प्रचार मेकिंग आदि व्यवस्था की जा रही है। वर्तमान में संबंधित लोक केट बीएलओ को पुनः उसे क्षेत्र में हाउस टू हाउस सर्वेक्षण करने एवं नाम पंजीकरण हेतु आवश्यक कार्रवाई करने का निर्देश दिया जा रहा है। इस संबंध में इसी सप्ताह संबंधित क्षेत्र का बैठक आयोजित कर उन्हें आवश्यक जानकारी प्रदान की जाएगी।इस अवसर पर विभिन्न राजनीतिक दल के कार्यकर्ता मौजूद थें।

एसडीओ ने बीएलओ के साथ बैठक कर दिया अहम जानकारी

प्रात : किरण संवाददाता

शेरघाटी।वोटर आईडी कार्ड में नाम सुधारने एवं नाम जोड़ने से संबंधित मामलों को लेकर अनुमंडल पदाधिकारी अनुग्रह नारायण सिंह ने बीएलओ के साथ बैठक आयोजित कर दिया हम जानकारी, उक्त बैठक के दौरान शेरघाटी अनुमंडल क्षेत्र के शेरघाटी प्रखंड के बीएलओ, डोभी बीएलओ, आमस बीएलओ भी शामिल हुए, उक्त दौरान यह जानकारी दिया गया कि वोटर लिस्ट में नाम वैसे व्यक्ति को काट देना है व्यक्ति जो इस दुनिया में नहीं है,साथ ही जिनका नाम गलत है उसका सुधार करना चाहते है तो प्रपत्र ख भर उसका नाम सुधार किया जा सकता है। वैसे लोगो का नाम हटा देना है जिसका शादी हो गई और व कहि और रहते है उनका नाम काट दिया जाना है, साथ ही 18 वर्ष उम्र वाले सभी लोगों का नाम जोड़ देना है, जो पहली बार अपना मतदान कर सकें साथ ही जिनका नाम सुधारना है उनका नाम सुधर जाए वह उन चीजों के सुधार करने को लेकर प्रपत्र आदि भरने का नियम भी उन्होंने बतलाया। उक्त दौरान शेरघाटी वीडियो स्नेहिल आनंद एवं आमस वीडियो डॉक्टर अवत्युल कुमार आर्य शामिल हुए। साथी डोभी आमस व शेरघाटी के सैकड़ो बीएलओ भी शामिल थे।

सहार के गुलजारपुर मे जन संवाद आयोजित

प्रात : किरण संवाददाता

सहारः भोजपुर जिला अंतर्गत सहार प्रखंड के गुलजारपुर पंचायत के इनुरुखी गोवर्धन पहाड़ के परिसर में प्रखंड स्तरीय जनप्रतिनिधि तथा पदाधिकारियों के द्वारा जन संवाद कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसकी अध्यक्षता प्रखंड विकास पदाधिकारी अर्चना कुमारी एवं संचालन जदयू नेता सह गुलजारपुर मुखिया प्रतिनिधि गुड्डू प्रसाद ने किया। कार्यक्रम मे स्थानीय मुखिया श्रीमती अनिता देवी तथा जदयू नेता सह गुलजारपुर मुखिया प्रतिनिधि गुड्डू प्रसाद के द्वारा उपस्थित सभी पदाधिकारी को अंग वस्त्र तथा फूलमाला के साथ सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में बीडीओ अर्चना कुमारी, सीओ दयाशंकर झा, प्रभारी बीडीओ प्रशांत कुमार, बीपीआरओ सुमन कुमार, प्रखंड कृषि पदाधिकारी अनिल कुमार, प्रखंड परियोजना पधाधिकारी अमरेंद्र कुमार सहार थाना दरोगा अनिल कुमार सहित अन्य पदाधिकारियों ने आम लोगों के बीच सरकार द्वारा चलाई जा रही जनकल्याणकारी योजनाओं को बताया और उनकी समस्याओं के बारे में जानकारी ले समस्याओं का निदान का आश्वासन दिया। इस दौरान ,आवास योजना, राशन कार्ड बिजली बिल तथा तार लगाने राशन कार्ड पेंशन योजना सहित अन्य योजनाओं के संबंध में लिखित आवेदन ग्रामीणों के द्वारा दिया गया तथा स्वक्षता कार्य को ग्रामीणों ने सराहनीय बताया। जन संवाद कार्यक्रम शांतिपूर्ण तरीके से संपन्न हुआ। मौके पर मुखिया अनिता देवी जदयू नेता सह गुलजारपुर मुखिया प्रतिनिधि गुड्डू प्रसाद पंचायत सचिव आदित्य कुमार पेरहाप मुखिया महेंद्र प्रसाद युवा नेता उज्जवल राय सहित पंचायत के सभी वार्ड सदस्य तथा पांच सदस्य के साथ सैकड़ो ग्रामीण जनता कार्यक्रम में मौजूद रहे।

विराट शिव गुरु महोत्सव में उत्कृष्ट कार्य के लिए सम्मानित हुए दर्जन भर कार्यकर्ता

प्रात : किरण संवाददाता

सहरसा। विराट शिव गुरु महोत्सव के सफलता के बाद पटेल मैदान स्थित शिव शिष्य हरीन्द्रानन्द फाउंडेशन के तत्वावधान में गुरुवार को उत्कृष्ट कार्य करने के लिए कार्यकताओं एवं बुजुर्गो के सम्मान में समारोह का आयोजन किया गया।उत्कृष्ट सम्मान समारोह को सम्बोधित करते भाई परमेश्वर ने कहा कि साहब श्री हरीन्द्रानन्द जी ने देश भर में बुजुर्गो को सम्मान मिले इसके लिए व्यापक पैमाने पर बुजुर्गो को सम्मानित करने का प्रचलन चलाया जिसके तहत सहरसा की धरती पर भी फाउंडेशन के सदस्यों ने पिछले 10 बर्षो से इस कार्य को करते रहे है।उन्होंने कहा कि विराट शिव गुरु महोत्सव में मैदान पर फैले गंदगी को जिस प्रकार शिव शिष्यो ने अपने हाथ से मल मुत्र की साफ सफाई की,वह आम जनो के लिए प्रेरणाश्रोत बना।उन्होंने कहा कि कार्यक्रम के दौरान जिन बुजुर्गो ने फाउंडेशन के कार्यालय में पहुंचकर अपना बिचार देते रहे आज उन सभी लोगों को कार्यकताओं की ओर से पाग चादर देकर सम्मानित किया गया।अच्छे कार्य करने पर सम्मानित हुए कार्यकताओं ने कहा कि भगवान शिव की शिष्यता पर आधारित विराट शिव गुरु महोत्सव में श्रमदान करने पर जो सम्मान उन लोगों को दिया गया इससे भविष्य में नेक काम की और उत्साह बढी है।मौके पर बुजुर्ग डोमी राम,मोहन मिश्र,जटेश्वर राय,जितेन्द्र सिंह,विद्यापति चेतना समिति के जयराम झा,सुरेश प्रसाद साह,कृष्ण रजक,अरविन्द यादव,सत्यप्रकाश राय,मणिकांत,संजीत कुमार,संजय जी,लत्तर जी,अजय मिश्र,आदि दर्जनों लोगों को सम्मानित किया गया।

श्री श्री 108 विष्णु महायज्ञ की तैयारी जोरो पर

प्रात : किरण संवाददाता

सौरबाजार/ सहरसा- प्रखंड क्षेत्र के चन्दौर पुर्वी पंचायत स्थित रामजानकी ठाकुरबाड़ी हनुमान नगर में श्री श्री108 विष्णु महायज्ञ की तैयारी जोरो पर हैं। कार्यक्रम को सफल बनाने हेतू कमेटी का गठन किया गया। बैठक में सर्वसम्मति को आयोजन समिति के अध्यक्ष ठाकुरबाड़ी के महंथ हनुमान दास त्यागी ,सचिव अधिवक्ता अनिल कुमार, कोषाध्यक्ष राजवल्लभ यादव, उपाध्यक्ष मुखिया प्रतिनीधी यादव, संयुक्त सचिव समिती प्रतिनिधि सुनील शर्मा एवं पुर्व मुखिया अवधेश यादव को मनोनीत किया गया हैं। आयोजन समिती के अध्यक्ष महंथ हनुमान दास त्यागी ने बताया कि यज्ञ स्थल आकर्षक रोशनी से जगमग करेगा। इसकी व्यवस्था जारी की जाएगी।यज्ञ के दौरान श्रद्धालुओं के मनोरंजन के लिए मेला का आयोजन होगा। अंत में समिति गठन होने के बाद सभी सदस्यों ने ठाकुरबाड़ी परिसर में अपने कर्तव्य को निभाने का संकल्प लिया। बैठक में भाग ले रहे सभी सदस्यों ने एक साथ मिलकर यज्ञ को सफल बनाने का आश्वासन दिया। इस बैठक में यज्ञ समिति का सभी सदस्य उपस्थित हुएऔर सभी बिंदुओं अर्थात विष्णु यज्ञ में आने वाले श्रद्धालुओ के सेवार्थ गर्मी को देखते हुए शुद्ध ठंडा शुद्ध पेयजल, प्रकाश, साफ सफाई, सड़कों की सफाई तथा पानी का छिड़काव, आवासन स्थल की व्यवस्था तथा सुवस्थित तरीके से उसका संचालन पर चर्चा की गई।

महाप्रबंधक पहुंचे बेला रेल पहिया कारखाना

दरियापुर। रेल पहिया कारखाना बैंगलोर के महाप्रबंधक राजगोपाल आर गुरुवार को आधिकारिक यात्रा पर रेल पहिया कारखाना बेला पहुंचे। जहां उनका भव्य स्वागत किया गया।यात्रा के दौरान महाप्रबंधक ने स्थानीय मुख्य प्रशासनिक अधिकारी अतुल्य सिन्हा के साथ पहिया उत्पादन और संभावित साझेदारी के अवसरों से संबंधित विषय तथा पहिया उत्पादन क्षमता को बढ़ाने के लिए शक्तियों के समायोजन को लेकर भी कई सार्थक चचाएं की।वही महाप्रबंधक की इस यात्रा ने संभावित तालमेल,साझा लक्ष्यों पर चर्चा करने और उन तरीको का पता लगाने का अवसर भी प्रदान किया।जिसमे दोनो संगठन पारस्परिक सफलता प्राप्त करने के लिए एक साथ मिलकर काम कर सकते है।

खैरा में जिलाधिकारी तो नगरा में डीडीसी जनसंवाद में लोगों से हुए रूबरू

प्रात : किरण संवाददाता

नगरा (सारण) सरकार आपके द्वार कार्यक्रम के तहत जिले में आमजनों से जिले के विभिन्न विभागों के वरिय पदाधिकारीओं से रूबरू होने के कार्यक्रम लगातार जारी है इसके अंतर्गत गुरुवार को प्रखंड के खैरा पंचायत स्थित राणा प्रताप उच्च विद्यालय रामपुर कला के प्रांगण में जिलाधिकारी अमन समीर के साथ जिले के अन्य वरिय पदाधिकारी आम जनता की समस्याओं से रूबरू हुए। जहां लोगों को बिहार सरकार द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं का लाभ आमजन तक पहुंच बनाने को ले जानकारी दी गई।

शिक्षा, श्रम संसाधन, लोक स्वास्थ्य अभियंत्रण विभाग, पंचायती राज विभाग, ऊर्जा विभाग, ग्रामीण विकास विभाग, लघु जल संसाधन विभाग, सहकारिता विभाग, कृषि विभाग, अल्पसंख्यक कल्याण, अनुसूचित जाति अनुसूचित जनजाति कल्याण एवं पिछड़ा वर्ग कल्याण विभाग, समाज कल्याण विभाग, स्वास्थ्य विभाग, पशुपालन विभाग, सामान्य प्रशासन विभाग, ग्रामीण कार्य विभाग, उद्योग विभाग, एवं गृह विभाग तथा अन्य संबंधित विभागों के पदाधिकारी के द्वारा सरकार द्वारा आम लोगों के कल्याण हेतु चलाए जा रहे विभिन्न योजनाओं के बारे में लोगों को अवगत कराया गया। वहीं सदर अनुमंडल पदाधिकारी ने राशन कार्ड में नाम जुड़वाने तथा नये राशन कार्ड बनवाने की विस्तृत जानकारी लोगों को उपलब्ध कराई। डीएसपी सौरभ कुमार ने हर थाने में महिला हेल्थ टैक्स एवं 112 डायल के बारे में बताया कि घटनास्थल पर 112 सूचना पाने के 15 मिनट के अंदर सेवा उपलब्ध कराती है। वहीं जिलाधिकारी अमन समीर ने स्वास्थ्य जनकल्याण, श्रमिक कल्याण गरीबों के इलाज तथा नए मतदाता सूची में किस प्रकार नाम जोड़े जाएंगे इत्यादि की विस्तृत जानकारी आम नागरिकों को उपलब्ध कराई। जनसंवाद के अंतर्गत लोगों के विभिन्न समस्याओं को सुनते हुए उनसे रूबरू हुए एवं लोगों की समस्याओं के समाधान के लिए आश्वासन दिए। इस अवसर पर क्षेत्र के लोगों ने क्षेत्र की समस्या और सुझाव पर विस्तृत चर्चा किया जिसमें मुख्य रूप से खैरा पंचायत के प्रयाग पांडेय ने उच्च विद्यालय रामपुर को आवासीय बनाने का मांग की। कोरेयां पंचायत के धर्मपुर गांव निवासी रामजी पांडेय ने सरकारी सड़क अतिक्रमण का मुद्दा उठाया। वही अफौर पंचायत के सफाई कर्मी सतेन्द्र कुमार ने 8 माह से वेतन नहीं मिलने की शिकायत की। कोरेयां पंचायत के पूर्व मुखिया मालिक राय ने किसानों के ऋण माफी तथा बेरोजगारी पर सुझाव दिए।

उक्त कार्यक्रम में जिला पदाधिकारी के साथ, जिला भू अर्जन पदाधिकारी, प्रभारी पदाधिकारी जिला आपदा शाखा, अनुमंडल पदाधिकारी सदर एवं अन्य सभी संबंधित विभागों के जिला स्तरीय पदाधिकारी, प्रखंड विकास पदाधिकारी, नगरा, अंचल अधिकारी , नगरा, पंचायत के मुखिया, स्थानीय जन प्रतिनिधिगण तथा बड़ी संख्या में आम जनता/ग्रामीण/जीविका की दीदी आदि उपस्थित थे। वही इस कार्यक्रम में खैरा पंचायत के मुखिया नीतु देवी व मुखिया प्रतिनिधि अनिल कुमार सिंह, परमानंद यादव, सरपंच योगेंद्र सिंह, बीडीसी जमाल हैदर, गणेश कुमार, शैलेश सिंह, प्रमुख प्रतिनिधि योगेन्द्र प्रसाद चौरसिया, वेदप्रकाश उपाध्याय, सहित सैकड़ो की संख्या में आम लोग उपस्थित थें।

विधायक ने नगर निगम क्षेत्र में 14 प्रमुख नाला एवं सड़क निर्माण का प्रश्न विधानसभा में उठाया

प्रात : किरण संवाददाता

सहरसा। विधायक डॉ आलोक रंजन ने विधानसभा में नगर निगम सहरसा क्षेत्र अन्तर्गत 14 प्रमुख नाला एवं सड़क निर्माण का प्रश्न उठाया।उन्होंने अपने तारांकित प्रश्न में सहरसा नगर निगम क्षेत्र अन्तर्गत 14 प्रमुख सड़क एवं नाला है का स्थिति अत्यंत ही जर्जर है। अतः राज्य योजना मद से सरकार राशि आवंटित कर इसका निर्माण करवाए।विधायक डॉ आलोक रंजन ने कहा कि बिहार विधानसभा में तारांकित प्रश्न के माध्यम से सरकार से हमने सहरसा नगर निगम अंतर्गत 14 अतिमहत्वपूर्ण सड़क एवं नाला निर्माण हेतु राज्य योजना मद से राशि आवंटित करने का आग्रह किया था।

हमने प्रश्न में सहरसा नगर निगम सहरसा की जो प्रमुख सड़क है जिसका पूर्व में राज्य योजना मद से निर्माण करवाया गया था। पर सरकार का ध्यान आकृष्ट कराया और कहा कि लोगों को आवागमन में भारी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। सरकार उक्त सड़क एवं नाला निर्माण हेतु शीघ्र राशि उपलब्ध करवाए।सरकार ने प्रश्न को स्वीकारते हुए कहा कि षष्टम राज्य वित्त आयोग एवं 15 वें वित्त आयोग के अंतर्गत नगर निगम सहरसा को उपलब्ध करवायी गई राशि से नगर निगम सहरसा के बोर्ड के निर्णय के अलोक में निर्धारित प्राथमिकता के आधार पर सड़क एवं नाला निर्माण करवाया जाएगा।

सहरसा की बेटी सुप्रसिद्ध लेखिका कंचन पाठक को मिला केतकी साहित्य रत्न सम्मान

प्रात : किरण संवाददाता

सहरसा। लखीमपुर के मोहम्मदी उत्तर प्रदेश में कथाकुंज साहित्य सेवा परिषद् के तत्वावधान में आयोजित राष्ट्रीय साहित्य समागम व सम्मान समारोह का सफल आयोजन किया गया । जिसमें सहरसा की बेटी सुप्रसिद्ध लेखिका एवं कवियित्री कंचन पाठक को केतकी साहित्य रत्न सम्मान से नवाजा गया। सुप्रसिद्ध लेखिका एवं कवियित्री सुश्री कंचन पाठक को यह सम्मान साहित्यिक व सांस्कृतिक क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान के लिए दिया गया ।ज्ञात हो कि इस समारोह में देश भर की 21 प्रतिभाओं को केतकी व गोमती साहित्य रत्न सम्मान से सम्मानित किया गया । कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में क्षेत्रीय विधायक एवं उत्तर प्रदेश सरकार के दर्जा प्राप्त राज्य मंत्री लोकेन्द्र प्रताप सिंह मौजूद रहे । कार्यक्रम का संचालन संस्थापक गोविन्द गुप्ता के द्वारा किया गया।आयोजन में अध्यक्ष संदीप महरोत्रा, सनी गुप्ता, ब्लाक प्रमुख महेंद्र बाजपेयी, बाबुराम पाठक, नरेन्द्र रस्तोगी समेत अन्य बहुत से गणमान्य लोगों की उपस्थिति बनी रही । कार्यक्रम में देश भर के साहित्यकार उपस्थित रहे । दिल्ली से कंचन पाठक, अनुराधा पांडे, मोनिता सिंह महक, वन्दना चौधरी,नोयडा से अंजना जैन,डॉक्टर इला जायसवाल,अयोध्या से अर्चना द्विवेदी,अंबेडकर नगर से श्याम प्रताप सिंह, बरेली से लवी सिंह,

गोरखपुर से प्रतिभा गुप्ता,निर्भय निनाद, लखनऊ से नीमा पंत, आगरा से निभा चौधरी, कानपुर से अमिता गुप्ता नव्या,अनामिका सिंह अविरल, खड़गपुर बंगाल से विनीता जायसवाल आदि उपस्थित रहे । सुश्री कंचन पाठक ने अपने गीत और गजल से महफि ल में रौनक भर दी।सभी गणमान्य अतिथियों व साहित्यकारों को अंगवस्त्र, फूलमाला, सम्मानचिन्ह आदि भी प्रदान किया गया।

भाजपा द्वारा पंचायत समिति सदस्यों का कार्यशाला का आयोजन

प्रात : किरण संवाददाता

गया।भारतीय जनता पार्टी गया जिला के द्वारा पंचायत समिति सदस्यों का कार्यशाला का आयोजन जिला कार्यालय पंडित दीनदयाल उपाध्याय नगर रसलपुर में आहूत की गई इस कार्यशाला को लेने के लिए युवा मोर्चा के पूर्व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष सह प्रशिक्षण प्रभारी स्वदेश सिंह औरंगाबाद के सांसद सुशील कुमार सिंह भाजपा प्रदेश प्रवक्ता सह पूर्व विधायक मनोज शर्मा,पूर्व विधायक श्यामदेव पासवान ने कार्यशाला को संबोधित किए इस कार्यशाला का अध्यक्षता जिला अध्यक्ष प्रेमप्रकाश चिंटू तथा संचालन जिला महामंत्री गोपाल प्रसाद यादव ने किया इस कार्यशाला को संबोधित करते हुए सुशील कुमार सिंह ने कहा कि भारत सरकार के कई योजनाएं देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र भाई मोदी के द्वारा गरीब कल्याणकारी योजनाएं जो चलाई जा रही है इस योजना को बिहार सरकार द्वारा सहयोग नहीं किया जा रहा है तथा इसी स्कीम को नाम बदल कर दूसरा स्कीम चलाया जा रहा है।प्रधानमंत्री आवास योजना पूरे देश में 4लाख पेंडिंग है जिसमे अकेले बिहार में 3लाख है।इस कार्यशाला को स्वदेश सिंह के द्वारा संगठन पर चर्चा करते हुए कहा कि पार्टी का जो विचारधारा है देशहित सर्वोपरि है इसका उदाहरण श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी ने नेहरू मंत्रिमंडल से इस्तीफा देकर धारा 370,35अ हटाने के लिए कश्मीर कुच किए जहां उनकी शहादत होना पड़ा पंडित दीनदयाल उपाध्याय,अटल बिहारी वाजपेई सहित जनसंघ से लेकर भारतीय जनता पार्टी के सर्वमान नेता के साथ साथ देशहित के प्रति समर्पित रहा।आज उन नेताओं को हमलोग गर्व से कहते हैं उनपर कोई भ्रष्टाचार का कोई आरोप नही लगा आज उन्ही नेताओं के मार्गदर्शन पर चलकर पूरे दुनिया का सबसे बड़े पार्टी भारतीय जनता पार्टी विराजमान हैं।प्रदेश प्रवक्ता मनोज शर्मा ने कहा देश के ओजस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी का जी 20के सफल आयोजन होने से पूरे विश्व में भारत का मान सम्मान बढ़ा है लेकिन देश के विभिन्न अदालतों में चक्कर लगाने वाले नरेंद्र भाई मोदी को हटाने के लिए एकजुट होने का नाटक कर रहे हैं जबकि विपक्षी गठबंधन चुनाव के पूर्व में ही रास्ता भटक गई देशहित में 2024 में 400+सीट जीतकर मोदी जी के नेतृत्व में सरकार बनेगी।इस अवसर पर पूर्व विधायक श्यामदेव पासवान ने कहा कि केंद्र की योजनाओं को एवं प्रधानमंत्री के किए गए कार्यो को घर घर जाकर बतलाए।इस अवसर पर पूर्व सांसद रामजी मांझी संतोष सिंह,संतोष गुप्ता, जिला मीडिया प्रभारी संतोष ठाकुर बंदना कुमारी,सुधांशु मिश्रा, सुशीला देवी सहित भारी संख्या में पंचायत समिति सदस्य उपस्थित हुए तथा धन्यवाद जिला उपाध्यक्ष राजेंद्र प्रसाद अधिवक्ता ने किया है।

बच्चे प्रतियोगिता के माध्यम से अपने प्रतिभा को प्रदर्शित करते हैं :धर्मेंद्र कुमार

अरवल। दिल्ली पब्लिक स्कूल में दीपावली पर्व को लेकर रंगोली प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें विद्यालय के छात्र छात्राओं ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। छात्र-छात्राओं द्वारा तरह-तरह की आकर्षक रंगोली बनाई गई। रंगोली बनाने को लेकर विद्यार्थियों में काफी उत्साह देखा गया। एक दूसरे से बेहतर रंगोली बनाने की प्रतिस्पर्धा साफ देखी गई।

सफल प्रतिभागियों के बीच पुरस्कार का वितरण किया गया। शहर के दिल्ली पब्लिक स्कूल में आयोजित रंगोली प्रतियोगिता में बच्चों ने उत्कृष्ट रंगोली बनाई,जिसमें हाउस के आधार पर आयोजित इस प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राची, द्वितीय हर्षिता, तृतीय खुशी,एवम चौथ रिया शर्मा,ने स्थान प्राप्त किया। प्रतियोगिता में दिल्ली पब्लिक स्कूल के बच्चों को सांत्वना पुरस्कार दिया गया। इस अवसर पर विद्यालय के निर्देशक धर्मेंद्र कुमार ने कहा कि बच्चों में प्रतियोगिता की भावना विकसित करने के लिए इस तरह के कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं बच्चों ने इस प्रतियोगिता के माध्यम से अपनी प्रतिभा को प्रदर्शित किया है। यह काफी सराहनीय है। जिसमें कक्षा एक से लेकर आठवीं कक्षा तक के विद्यार्थी शामिल हुए। इस कार्यक्रम मे लोजपा (रा) नेता रवींद्र कनौजिया शिक्षक अविनाश कुमार रोशन कुमार सौरभ कुमार हरबंस कुमार अलीशा कुमारी अमीषा कुमारी इत्यादि शिक्षक मौजूद हुए।

केरल के पूर्व राज्यपाल निखिल कुमार व डॉक्टरों के बीच हुई बैठक

प्रात : किरण संवाददाता

औरंगाबाद। डॉक्टरों द्वारा चल रहे बहिष्कार को लेकर आज केरल के पूर्व राज्यपाल निखिल कुमार और सदर अस्पताल के डॉक्टरों के बीच एक बैठक हुई। बैठक में डॉक्टरों और स्थानीय लोगों की समस्याओं, अस्पताल अधिकारियों की अक्षमता और विफलता पर चर्चा की गई। अस्पताल चलाने और मरीजों को गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवा प्रदान करने पर ध्यान दिया गया। इन सभी समस्याओं का समाधान निकालने की कोशिश की जा रही है। डॉ अभिषेक कुमार डॉक्टर उदय कुमार डॉ अरुण कुमार डॉक्टर अमित कुमार, डॉ रवि भूषण, डॉक्टर सुभाष सिंह, डॉक्टर उदय प्रकाश, डॉ प्रवीण अग्रवाल डॉक्टर संजय कुमार ने अपनी समस्या रखी। वहीं पूर्व राज्यपाल ने मरीज की हो रही। इस संबंध विभाग के वरीय अधिकारियों से को पत्र लिखा जाएगा। कांग्रेस जिला अध्यक्ष राकेश कुमार उर्फ पप्पू सिंह ने कहा है कि पूर्व राज्यपाल के आदेश पर इस मामला को डीएम और सिविल सर्जन से मिलकर जल मामला को चिकित्सा का मांग को पूरा करने का रखा जाएगा। प्रस्ताव और जो भी चिकित्सक को परेशानी है उसे दूर करने के लिए बात कही जाएगी। वहीं कांग्

संक्षिप्त खबरें

हर महिने के एकादशी को विष्णु पद मे दीपोत्सव

गया। गया जी के विष्णु पद मंदिर प्रांगण में कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष एकादशी तिथि के अवसर पर डा विरेन्द्र कुमार के नेतृत्व में दिए जलाए गए हैं भगवान विष्णु चरण में।इस मौके पर अनिल स्वामी, अनंत धीश अमन,सत्वती गुप्ता ने दिए जलाए भगवान विष्णु से चरणों में तुलसी से भी पुजन किए। डाक्टर वीरेन्द्र एंव अनंत धीश अमन के नेतृत्व में लगतार एक वर्ष से लगातार एकादशी के अवसर पर विष्णु पद मंदिर के प्रारंग में दिपोत्सव मनाया जाता है।

वरीय पुलिस अधीक्षक ट्रेनिंग में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने के लिए किए गए पुरस्कृत

गया। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक गया 04.9 से 29.09 तक हैदराबाद में हुई देश के आईपीएस अधिकारियों की ट्रेनिंग में वरीय पुलिस अधीक्षक गया आशीष भारती को पूरे देश के 92 आईपीएस अधिकारियों में मिला तीसरा स्थान है। इन्होंने कुल 100 मार्क्स में से कुल 83.75 मार्क्स अर्जित किया है। केंद्रीय गृह मंत्रालय के तहत आने वाली सरदार वल्लभ भाई पटेल राष्ट्रीय पुलिस अकादमी की तरफ से आशीष को हाई अचीवमेंट सर्टिफिकेट दिया गया है। ट्रेनिंग में पूरे देश के विभिन्न राज्यों तथा अन्य पुलिस संगठनों के 2008 से 2016 बैच के आईपीएस अधिकारी शामिल हुए हैं। यह फेज तीन ट्रेनिंग थी। जब किसी का आईपीएस में सिलेक्शन होता है, तो उसे फेज वन ट्रेनिंग दी जाती है। उसके लगभग आठ माह बाद उसे फेज दू ट्रेनिंग के लिए भेजा जाता है। उसके कई साल बाद उसे फेज थ्री ट्रेनिंग में भेजा जाता है।

फुटबॉल फाइनल मैच का आयोजन किया गया

आरा। शाहपुर प्रखंड के बीमारी के निवासी श्री शिव कुमार साह जो राजद के व्यावसायिक मोर्चा के जिला अध्यक्ष है। उनके पिताजी स्वर्गीय रामनथ साह की पुण्यतिथि के अवसर पर फुटबॉल फाइनल मैच का आयोजन किया गया। जिसमें बनारस और आरा एकादश के बीच महा मुकाबला हुआ। दोनों तरफ से गोल नहीं हुआ ।ट्राई बेकर के द्वारा जीत- हार का फैसला हुआ जिसमें 6-5 से बनारस की टीम विजयी घोषित हुई। इस महा मुकाबला मैच को हजारों लोगों ने देखा। इस मैच में अतिथि के रूप में प्रोफेसर राजेंद्र मणियारा ,दावां पंचायत के पैक्स अध्यक्ष हरे कृष्णा सिंह यादव, जदयू प्रखंड अध्यक्ष शाहपुर हीरालाल गुप्ता, राजद के प्रदेश सचिव धर्मेंद्र पासवान, बबलू राय रविंद्र जी धूमराज यादव सुभाष राम लायक यादव , रबिन्द्र यादव वगैरह के अलावा बहुत सारे साथी भाग लिए। उपस्थित अतिथियों का स्वागत धमाका क्लब के सदस्यों के द्वारा किया गया।

राग मारवा के सुरों में गुरु की महिमा का सांगीतिक वर्णन

आरा।लीजेंड बक्शी कुलदीप नारायण सिन्हा मेमोरियल कल्चरल सोसायटी के तत्वाधान में आयोजित साप्ताहिक कार्यक्रम गुरुवासरे संगीत सभा का उद्घाटन विदुषी बिमला देवी ने दीप प्रज्जवलित कर किया। स्थानीय महाजन टोली स्थित ठाकुरबाड़ी प्रांगण में संगीत सभा को संबोधित करते हुये संगीत विदुषी बिमला देवी ने कहा कि शास्त्रीय संगीत के सभी बंदिशों में ईश्वर का गुणगान है। राग संगीत गायन का महत्व मंत्रों के उच्चारण के समतुल्य है। सुरों में डूबना एक ध्यान है जिसके चरमोत्कर्ष पर ब्रम्ह के स्वरूप का दर्शन संभव है। इस अवसर पर जिले के मशहूर ख्याल गायक श्री महेश यादव ने राग मारवा में विलंबित ख्याल, तीनताल में लयबद्ध छोटा ख्याल की बंदिश ह्लगुरु बिन ज्ञान न पावें मन मूर्खर पछताएह्व खमाज की ठुमरी व भजन प्रस्तुत कर दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। महेश जी के गले की तैयारी, दानेदार तान व स्वरों के माधुर्य ने श्रोताओं को खासा प्रभावित किया।

खेलो इंडिया सेपकटाकरा स्मॉल सेन्टर के लिए चयन ट्रायल 11 को

पटना। खेलो इंडिया योजना के तहत पटना में संचालित होने वाले खेलो इंडिया सेपकटाकरा स्मॉल सेन्टर का चयन ट्रायल 11 नवंबर 2023 को पाटलिपुत्र खेल परिसर, कंकड़बाग, पटना में पूर्वाहन 9.00 बजे से आयोजित की जायेगी। यह जानकारी देते हुए जिला खेल पदाधिकारी, पटना श्री ओम प्रकाश ने बताया कि भारतीय खेल प्राधिकरण तथा बिहार राज्य खेल प्राधिकरण के अन्तर्गत पटना में संचालित होने वाले खेलो इंडिया सेपकटाकरा स्मॉल सेन्टर पूर्णतः गैर आवासीय निःशुल्क प्रशिक्षण केन्द्र है। इस केन्द्र के लिए चयन हेतु सिर्फ पटना जिला के बालक/बालिका खिलाड़ियों ही भाग ले सकते हैं तथा चयन ट्रायल में भाग लेने वाले पटना जिला के बालक/बालिका प्रशिक्षणार्थियों की उम्र 14 वर्ष से कम होनी चाहिए। उन्होंने बताया कि इच्छुक खिलाड़ी अपने आधार कार्ड एवं दो पासपोर्ट साईज फोटो के साथ चयन ट्रायल के लिए प्रशिक्षक श्री अजित कुमार (मो0 नं0- 9835882754) को रिपोर्ट करेंगे।

प्रतिबंधित घाट पर आमजन नही जाए : जिलाधिकारी

प्रात : किरण संवाददाता

गय। बिहार श्रद्धा, भक्ति एवं आस्था का महापर्व छठ पर्व के अवसर पर छठ व्रतियों को अपेक्षित सुविधा प्रदान करने के लिए जिलाधिकारी गया डॉ त्यागराजन एसएम एवं वरीय पुलिस अधीक्षक आशीष भारती द्वारा संयुक्त रूप से गया जिला के महत्वपूर्ण छठ घाटों का निरीक्षण किया गया है सर्वप्रथम केंदुई घाट का निरीक्षण किया गया। उपस्थित छठ पूजा समिति के सदस्यों को जिलाधिकारी ने कहा कि केंदुई घाट पर काफी भारी संख्या में लोग उपस्थित होते हैं। छठ पूजा समिति केंदुई को कहा कि श्रमदान करके केंदुई घाट को और अच्छे तरह साफ कराएं। वाहन पड़ाव के लिए उगे हुए झाड़ियों को साफ कराने का निर्देश दिया गया है। उपस्थित पदाधिकारियों द्वारा बताया गया कि दूर-दूर से आने वाले छठ व्रती इसी घाट पर भगवान सूर्य का अर्घ्य देते हैं। उपस्थित स्थानीय ने बताया कि इस घाट पर भीड़ अधिक होने के कारण चार-पांच अलग अलग सब घाट केंदुई घाट में बनाया जाता है जिससे भीड़ नियंत्रित रहती है। वरीय उप समाहर्त्ता, जिला नजारात को निर्देश दिया कि केंदुई घाट काफी बड़ा घाट है इसलिए इस घाट पर माइकिंग सिस्टम दुरुस्त रहनी चाहिए। साथ ही जगह-जगह पर चेंजिंग रूम बनवाना सुनिश्चित करें। जगह जगह सीसीटीवी लगवाए। केंदुइ घाट आने के सभी रास्तो को स्मूथ, चलंत, समतल बनवाये। इसके साथ कि रौशनी की पूरी व्यवस्था रखे। जिलाधिकारी ने नगर आयुक्त को निर्देश दिया कि जेसीबी मशीन से केंदुई घाट जाने के रास्ते को स्लोपिंग बनवाएं एवं चौड़ीकरण कराएं। डीएम ने खनन पदाधिकारी को निदेश दिया कि संवेदक से सुनिश्चित करवाये की केंदुई नदी के बीच मे बने गड्ढे को भरवाए। ऐसी सूचना मिलती है कि संध्या अर्घ्य एव सुबह अर्घ्य देने आने वाले लोगो को ट्रैफिक जाम का बहुत समस्या होती है, इसे पूरी गंभीरता से ले। आमजन आसानी से घाट पहुच सके, उसके लिये वाहनों का आवागमन सुगम रखे।

जिला पदाधिकारी ने आम जनों से अपील किया है कि जो श्रद्धालु केंदुई घाट पर अर्घ्य देना चाहते हैं तो वह समय से 1 घंटा पहले पहुच जाए यहां काफी अधिक भीड़ होती है। बेवजह रोड पर वाहन का पड़ाव न हो, इसे देखे। मुख्य सड़क को वन वेरखे। खिरियावा घाट से बाईपास तक मोटरसाइकिल पुलिस टीम द्वारा भीड़ को रेगुलेट एव ट्रैफिक कंट्रोल किया जाएगा। घाट आने के रास्ते में जहां भी दलदल या जल जमाव है वहां पर बैरिकेडिंग करवाना सुनिश्चित करें रास्तों पर एवं घाटों पर पर्याप्त रोशनी की व्यवस्था सुनिश्चित करवाये ।पोलटेकनिक घाट निरीक्षण के दौरान जिला पदाधिकारी ने रास्ता को समतल बनवाने का निर्देश दिए उन्होंने निर्देश दिया कि छोटे आकार का जेसीबी मशीन लगाकर पूरे जंगल झाड़ को साफ करवा पर्याप्त संख्या में ट्यूबलाइट एवं बल्ब के माध्यम से रोशनी का पुख्ता इंतजाम करें घाट का प्रॉपर साफ सफाई करवाये।

सीताकुंड घाट का निरीक्षण किया है। निरीक्षण के दौरान गयाजी डैम के निर्माण होने से फल्गु नदी में काफी पानी एकत्रित है इसे देखते हुए कहा कि स्टील ब्रिज से सीताकुंड जाने वाले पैदल पाथवे होते हुए पंचदेव घाट तक पूरी मजबूती से बैरिकेडिंग करवाये ताकि एक सीमित पानी के बाद कोई गहरा पानी की ओर नदी में न जा सकें। उन्होंने कहा कि वेरीकटिंग के ऊपर लाल रंग का झंडा का भी लगावे ताकि लोगों को महसूस हो सकेगी बैरीकटिंग के बाद गहरा पानी है। उन्होंने निर्देश दिया कि पब्लिक ऐड्रेस सिस्टम, कंट्रोल रूम, चेंजिंग रूम, सीसीटीवी कैमरा सहित अन्य व्यवस्थाएं सभी घाटों पर रखें। नगर आयुक्त गया नगर निगम को निर्देश दिया कि नगर निगम क्षेत्र अंतर्गत जितने भी छठ घाट हैं। सभी छठ घाटों में साफ सफाई की मुकम्मल व्यवस्था रखें। इसी प्रकार देवघाट के तरफ भी सभी तैयारियां रखे। एसडीआरएफ एव गोताखोर की टीम नाव सहित लगातार मूवमेंट में रहे, इसे सुनिश्चित करवाये। सूर्यकुंड तालाब का निरीक्षण किया है। गया नगर निगम को मजबूती से बेरीकेटिंग करने एवं तालाब के चारों ओर जमी काई को हटवाने का निर्देश दिया साथ ही ब्लीचिंग पाउडर का छिड़काव कराने को भी कहा। सूर्यकुंड के चारों तरफ पर्याप्त रोशनी की व्यवस्था कराएं। चेंजिंग रूम अस्थाई, पी ए सिस्टम, सीसीटीवी अधिष्ठापन कंट्रोल रूम का निर्माण कराने सहित अन्य आवश्यक निर्देश दिए हैं। आश्वस्त कराया कि किसी भी हाल में कोई भी छठ व्रती वेरीकेटिंग के बाहर पूजा ना करें, यह ध्यान दें। सूर्यकुंड घाट के निरीक्षण के दौरान बताया गया कि वर्तमान में सूर्य कुंड में लगभग 27 फीट गहरा पानी है। जिला पदाधिकारी ने सूर्य कुंड पानी एवं सूर्य कुंड से निकलने वाले विभिन्न रास्तों के बारे में विस्तार से जानकारी लिया है। उन्होंने निर्देश दिया कि एंट्री एवं एग्जिट रास्ता सेपरेट रखें। प्रभारी पदाधिकारी जिला आपदा शाखा को निर्देश दिया कि नाव सहित एसडीआरएफ की टीम सूर्यकुंड में उपलब्ध करवाना सुनिश्चित रखें। सूर्य कुंड घाट में आने वाले सभी रास्तों को चलंत बनाएं यदि कहीं भी रास्ता खराब है तो उसे तुरंत स्मूथ बनाएं। सभी रास्तों में पर्याप्त रोशनी की व्यवस्था रखें। इसके साथ ही ट्रैफिक व्यवस्था पर विशेष ध्यान दें अभी से ही रूट लाइन तैयार कर ले। स्थानीय लोगों द्वारा बताया गया कि संध्या अर्ग के समय सबसे ज्यादा भीड़ सूर्य कुंड में ही होता है। इसे देखते हुए जिला पदाधिकारी ने सभी व्यापक व्यवस्थाएं दुरुस्त रखने का निर्देश दिया है। साफ तौर पर कहा कि बिजली के जर्जर तार या लटकी हुई तारों को तुरंत ठीक करावे ।जिला पदाधिकारी ने आम जनों से अपील किया है कि सूर्यकुंड में अत्यधिक भीड़ को देखते हुए संध्या अर्घ्य देने वाले छठ व्रती दोपहर 2:00 ही आकर अपना स्थान ग्रहण कर ले।

गया कॉलेज में शिक्षा पखवाड़े का किया गया आयोजन

प्रात : किरण संवाददाता

गया ।राष्ट्रीय शिक्षा दिवस के अवसर पर शिक्षा शास्त्र विभाग गया कॉलेज गया में शिक्षा पखवाड़े का आयोजन किया जा रहा है इस कार्यक्रम का विधिवत्त शुभारंभ शिक्षा शास्त्र विभाग के विभाग अध्यक्ष डॉक्टर धनंजय धीरज एवं अन्य शिक्षकों ने मिलकर किया आज इस अवसर पर एक भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया है ।जिसका विषय था राष्ट्र के नव निर्माण में शिक्षा की भूमिका है। राष्ट्रीय शिक्षा दिवस पर आयोजित इस कार्यक्रम का विधिवत शुभारंभ करते हुए अपने उद्बोधन में डॉक्टर धनंजय धीरज ने कहा कि. विद्यार्थी हमारे राष्ट्र की पूंजी हैं और शिक्षा सबसे बेहतर निवेश है। आज के अवसर पर छात्रों से अनुरोध करता हूं ।कि वे मौलाना आजाद साहब की जीवनी को पढ़ें और उनके जीवन से सीख ले। मौलाना आजाद साहब के विचार आज भी प्रासंगिक हैं। आवश्यकता इस बात की है कि विद्यार्थी. उनसे संबंधित साहित्य का अध्ययन करें। और उनके आदर्शों को अपने जीवन में आत्मसात करने का प्रयत्न करें. मौके पर निर्णायक मंडल के रूप में डॉक्टर अभिषेक कुमार सहायक प्राध्यापक व श्री अमरेंद्र कुमार सहायक प्राध्यापक के रूप में मौजूद थे। नखत परवीन सहायक प्रा अध्यापिका शिक्षा शास्त्र विभाग। अजय शर्मा डॉक्टर सदरे आलम. सहित सभी शिक्षक के दर कर्मचारी प्रथम एवं द्वितीय वर्ष के बी एड के विद्यार्थी उपस्थित थे कार्यक्रम को लेकर विद्यार्थियों में काफी उत्साह देखा गया है।

जीतन राम मांझी आरक्षण विरोधी भाजपा की भाषा बोल रहे हैं : विनय कुशवाहा

प्रात : किरण संवाददाता

गया । राष्ट्रीय जनता दल के प्रांतीय सचिव महात्मा ज्योतिबा फुले क्रांतिकारी संघ के राष्ट्रीय संयोजक विनय कुशवाहा ने कहा कि पूर्व मुख्यमंत्री जीतनराम मांझी आरक्षण विरोधी हैं ।सदन से लेकर सड़क पूर्व मुख्यमंत्री जीतन मांझी जातिय जनगणना एवं आरक्षण का विरोध कर रहे हैं। दलितों पिछड़ों को आगे बढ़ने नहीं देना चाहते हैं जीतन मांझी। जितन राम मांझी नहीं चाहते हैं कि बिहार के दलित शैक्षणिक एवं सामाजिक आर्थिक रूप से आगे बढ़े वह सिर्फ अपने परिवार का विकास के लिए राजनीतिक करते हैं उन्हें दलित पिछड़ों से कोई लेना-देना नहीं। विनय कुशवाहा ने कहा कि जिस तरह से बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार एवं उपमुख्यमंत्री तेजस्वी प्रसाद यादव ने पिछड़े दलित अत्यंत पिछड़े जातियों के आरक्षण के सीमा को 15% बढ़ाया। बिहार में आरक्षण 65 प्रतिशत हो गया इससे जीतन मांझी को परेशानी हो रही है और बार-बार आरक्षण एवं जातिय जनगणना का विरोध कर रहे हैं। बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने इन्हें बिहार का मुख्यमंत्री बनाया था लेकिन जीतराम मांझी मौका परस्त निकले ।मांझी सिर्फ अपने बेटा समधन एवं परिवार के लोगों तक सिमट कर रह गए। बेटा को मंत्री बनाने के लिए और परिवार के लोगों को राजनीति में स्थापित करने के लिए जितनराम मांझी सिर्फ राजनीति करते हैं ।जीतन राम मांझी नहीं चाहते हैं कि दलित पिछड़ा समुदाय के कोई भी व्यक्ति राजनीति एवं नौकरी में आगे बढ़े इसीलिए लगातार जातीय जनगणना और आरक्षण का विरोध कर रहे हैं ।भाजपा के साथ गठबंधन करके जीतन राम मांझी आरक्षण का लगातार विरोध कर रहे हैं। जिस तरह से नीतीश कुमार एवं तेजस्वी यादव की सरकार लाखों लाख की संख्या में नौकरियां बांट रही है और 85 प्रतिशत दलित पिछले अति पिछड़े के लिए आरक्षण के सीमा को 15% बढ़कर 65 प्रतिशत किया एवं ऊंची जातियां को 10% आरक्षण आरक्षण की सीमा को 75% किया देश के लिए ऐतिहासिक कदम है इससे गरीब कमजोर वर्गों का आर्थिक सामाजिक शैक्षणिक विकास होगा ।कुशवाहा ने केंद्र सरकार से बिहार के तर्ज पर देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से 75 प्रतिशत आरक्षण देने की मांग की और नहीं तो 2024 में इस देश की जनता बीजेपी को धूल चटा देगी।

गया शहर में डेंगू के खिलाफ महा अभियान जारी

प्रात : किरण संवाददाता

गया। नगर निगम के द्वारा गया शहर में डेंगू के खिलाफ महा अभियान जारी है। महाअभियान के आठवें दिन बुधवार को मेयर डॉ. वीरेंद्र कुमार उर्फ गणेश पासवान एवं स्टैंडिंग कमेटी के सदस्य डॉ. अखौरी ओंकार नाथर मोहन श्रीवास्तव के नेतृत्व में विभिन्न वार्डो में फॉगिंग करायी गई। इस दौरान वार्ड संख्या- 8, 9 10, और 11 फॉगिंग और एंटी लार्वा व केमिकल का छिड़काव किया गया। अभियान का शुरूआत गया रेलवे स्टेशन से हुई। उसके बाद बैरागी, रामधनपुर, नई गोदाम, बंगला स्थान सहित विभिन्न स्थानों से गुजरा। वहीं खुद मेयर व स्टैडिंग के सदस्य आधुनिक कोल्ड फोगर मशीन को संचालित करते दिखे। इस मौके पर मेयर गणेश पासवान ने कहा दस हैंड फोगर और बड़े अत्याधुनिक मशीनों से फॉगिंग का काम चल रहा है। पिछले 7 दिन इसके पूरे हो चुके हैं। इस पर्व के इस मौसम में भी यह अभियान चल रहा है। जनता को डेंगू आदि समेत मच्छरों से होने वाली बीमारियों से बचाव हो सके, इसे लेकर निगम के द्वारा लगातार इस तरह का अभियान चलाया जा रहा है, जो काफी सफल हो चुका है और अब डेंगू के मरीज नहीं के बराबर मिल रहे हैं ।स्टैडिंग मेम्बर मोहन श्रीवास्तव ने कहा कि दीपावली जैसे पर्व में भी हम जनता के सुरक्षित रखने के लिए सड़क पर उतरे हुए हैं। ताकि वे स्वस्थ रहे। डेंगू के खिलाफ यह बड़ा अभियान से निगम अपनी जिम्मेदारियां का पूरी तरह से निर्वहन कर रहा है। डेंगू जो हमारे लिए बड़ी चुनौती के रूप में थी। उसे बैक फुट पर ला दिया गया है। अपवाद के रूप में ये रह गया है। हम लोगों का यह अभियान डेंगू के पूरे से सफाया तक जारी रहेगा। मौके पर पार्षद गोपाल कुमार सहित अन्य मौजूद थे।

सीयूएसबी के विद्यार्थियों ने अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में किया शोधपत्र प्रस्तुत

प्रात : किरण संवाददाता

गया ।दक्षिण बिहार केन्द्रीय विश्वविद्यालय (सीयूएसबी) के शारीरिक शिक्षा विभाग के तीन छात्रों ने मणिपाल विश्वविद्यालय, जयपुर में "शारीरिक शिक्षा एवं खेल विज्ञान" विषय पर आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया है जन सम्पर्क पदाधिकारी मो. मुदस्सीर आलम ने बताया कि विभागाध्यक्ष डॉ. उषा तिवारी के मार्गदर्शन में शारीरिक शिक्षा विभाग के एमपीएड के छात्र ऋतिक कुमार सिंह, सोनू कुमार एवं चन्दन कुमार ने सम्मेलन में अपने शोध पत्र प्रस्तुत किये । अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में देश विदेश से 400 से अधिक लोगों ने भाग लिया था विद्यार्थियों के द्वारा शोध पत्र प्रस्तुति के पश्चात आयोजकों द्वारा प्रमाण पत्र दिया गया ।विभागाध्यक्ष ने कहा कि शारीरिक शिक्षा विभाग का सम्पूर्ण परिवार सभी छात्रों को बधाई देते हुए उज्जवल भविष्य की कामना करता है उन्होंने कहा कि इस प्रकार की गतिविधि में भाग लेना विभाग के छात्रों की प्रतिभा को विकसित करने में काफी सहयोग पूर्ण रहेगा डॉ. तिवारी ने बताया कि विभाग के तीसरे सत्र के छात्र अमनदीप कुमार और सुमन कुमार को गया गवर्नमेंट इंजीनियरिंग कॉलेज , वैशाली बिहार के अंतर महाविद्यालय के क्रिकेट प्रतियोगिता में मुख्य निर्णायक की भूमिका निभाने का अवसर प्राप्त हुआ जो विभाग के लिए काफी उत्सावर्धक है ।

बी.एस.डीएवी. में विज्ञान, कला-शिल्प प्रदर्शनी की धूम

प्रात : किरण संवाददाता

आरा । स्थानीय बी.एस.डीएवी.प.स्कूल में दीपावली, भैया दूज, छठ पर्व और बाल-दिवस के पूर्व सांस्कृतिक कार्यक्रम व विज्ञान सह कला-शिल्प प्रदर्शनी का वृहद आयोजन हुआ। त्योहारों की खुशी और अपने विज्ञान व कला के प्रति गहरी रूचि की वजह से अधिकांश विद्यार्थियों ने अवकाश से पूर्व इस आयोजन में भारी संख्या में हिस्सा लिया।

कार्यक्रम का उद्घाटन बतौर मुख्य अतिथि भोजपुर जनपद के ख्याति प्राप्त हड्डी रोग विशेषज्ञ डा.कुमार जितेंद्र ,सम्मानित अतिथि श्री राममूर्ति प्रसाद व प्राचार्य डीएवी., मोहनिया श्री पी.सी. दास तथा प्रधानाचार्या , बी.एस.डीएवी. ,श्रीमती नीशू जायसवाल ने सम्मिलित रूप से दीप प्रज्ज्वलित कर के किया।

परिसर में उपस्थित परिजनों व बच्चों को संबोधित करते हुए डा.कुमार जितेंद्र ने कहा कि बच्चों के इस आयोजन का संदेश अत्यंत व्यापक है। यह आयोजन एक ओर जीवन में प्रकाश,पवित्रता और बंधुत्व का संदेश देता है तो, वही यहाँ लगी विज्ञान व कला-शिल्प प्रदर्शनी के सहारे नई पीढ़ी की अभिरुचि व आधुनिक दृष्टि का भी पता चलता है।

अतिथि श्रीराम मूर्ति प्रसाद ने बच्चों को कार्यक्रम की बधाई दी और उनके प्रत्येक आयोजन में अपनी उपस्थिति का वायदा किया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए प्राचार्य, डीएवी., मोहनिया श्री पी.सी.दास ने परिसर में बच्चों व अभिभावकों की बड़ी उपस्थिति से खुश होकर कहा कि एक साथ हजारों गुलाबों का खिलना देखना हो तो किसी गुलाब बाग में जाने की जरूरत नहीं, ऐसे अवसरों पर विद्यालय में हीं उपस्थित होकर देखा जा सकता है। उन्हों ने बच्चों की वैज्ञानिक चेतना और सांस्कृतिक अभिरूचि की प्रशंसा की।

इस अवसर पर विद्यालय प्रधानाचार्या ने सभी अतिथियों व अभिभावकों का स्वागत व आभार व्यक्त किया। सबको आनेवाले त्योहारों की बधाई दी। छात्र-छात्राओं ने आयोजन की शुरूआत क्रमशः दीपावली, भाई दूज और छठ महापर्व की सामूहिक झलकियों को गीत-नृत्य के रूप में प्रस्तुत कर के किया। अभिभावकों ने त्योहारों पर आधारित इन कार्यक्रमों का खूब आनंद लिया।

सांस्कृतिक प्रस्तुति के बाद विज्ञान सह कला-शिल्प प्रदर्शनी की ओर भीड़ चली तो परिजनों, अतिथियों व छात्र-छात्राओं की आँखें देखते न थक रही थी। विद्यालय के सभागार में सैकड़ो की तादाद में प्रदर्शित स्टेटिक व वर्किंग प्रोजेक्ट्स आकर्षण के केंद्र बने रहे। इस प्रदर्शनी में टेरेस फॉर्मिंग, चंद्रयान, प्रदूषण शोषक, नवीकरणीय उर्जा के स्रोत, होलोग्राम, रोबोट, मानव लंग्स, ह्यूमन आई जैसे प्रोजेक्ट की काफी सराहना हुई। वहीं आर्ट एण्ड क्राफ्ट दीर्घा में राम मंदिर, लिप्पन आर्ट(राजस्थानी) मंडाला आर्ट, मिथिला कला आदि की उपस्थिति भी दर्शकों को आकर्षित कर रही थी।

विज्ञान प्रदर्शनी में कृति , पीयूष,समृद्धि, टान्या, सुरभि, आद्या,आश्वी, रिया, खुशबू, प्रकाश, अमृत,आमिर, सांभवी,काव्या, गुनगुन सिद्धार्थ, वेदांत आदि के प्रयासों ने लोगों को आकर्षित किया। वहीं श्रेया ,विशाल, श्रुति, हर्षि, सिद्धि आदि के चित्र व मॉडल खूब प्रशंसनीय रहे। विज्ञान प्रदर्शनी शिक्षक सुनील मिश्र, मनीषा कुमारी, सचिन पाठक,राकेश रंजन, एच.स्मित,शशि कुमार तथा कला प्रदर्शनी शिवा स्रोत्रीय, किरण कुमारी, काजल कुमारी आदि के कुशल निर्देशन और प्रधानाचार्या नीशू जायसवाल की प्रेरणा से यह तैयारी संभव हो सकी।

परिसर से बाहर निकल रहे प्रत्येक चेहरों को देखकर यही लग रहा था जैसे भीतर छठ महापर्व का लोक स्वर बज रहा हो। सांस्कृतिक कार्यक्रमों का संचालन कृति कुमारी और प्रेमप्रकाश ने संयुक्त रूप से किया। कार्यक्रम सफल रहा।

विधिक सेवा दिवस के अवसर पर आरा व्यवहार न्यायालय से प्रभात फेरी निकाला गया

प्रात : किरण संवाददाता

आरा : जिला विधिक सेवा प्राधिकार भोजपुर आरा के तत्वधान में विधिक सेवा दिवस के अवसर पर आज व्यवहार न्यायालय के गेट संख्या एक से जिला एवं सत्र न्यायाधीश, भोजपुर, आरा ब्रजेश कुमार मालवीय के अध्यक्षता में प्रभात फेरी निकाला गया। जिसमें सभी न्यायिक पदाधिकारीगण, जिला अधिवक्ता संघ के सचिव, जिला लोक अभियोजक भोजपुर आरा एवं सैकड़ो की संख्या में न्यायिक कर्मी सम्मिलित हुए। जिला न्यायाधीश ने बताया कि इस प्रभात फेरी का मुख्य उद्देश्य हर व्यक्ति को विधिक रूप से जागरूक करना एवं प्राधिकार के उद्देश्यों से अवगत कराना है। जिला विधिक सेवा प्राधिकार के सचिव गौतम कुमार ने बताया कि विधिक सेवा दिवस के अवसर पर निकाले गए प्रभात फेरी में आमजन के बीच हैंड बिल का वितरण किया गया जिसमें कमजोर एवं पिछड़े वर्ग के लोगों के बीच विधिक संबंधी जानकारी तथा सरकार द्वारा चलाए जा रहे योजनाओं को उनके बीच साझा किया गया। आगे सचिव, गौतम कुमार ने बताया कि विधिक सेवा दिवस के अवसर पर आज कई कार्यक्रम रखे गए हैं जिसमें जिला +2 उच्च विद्यालय में सांस्कृतिक कार्यक्रम के साथ-साथ प्रखंड स्तर पर पारा विधिक स्वयंसेवक की टीम बनाई गई है जो डोर टू डोर कैंपेन के तहत घर-घर जाकर लोगों को जागरूक करेंगे एवं उन्हें विधिक सहायता पहुंचाएंगे।

इजरायल द्वारा फिलिस्तीन पर हमले व जारी जनसंहार के खिलाफ वामदलों ने निकाला विरोध मार्च

प्रात : किरण संवाददाता

आरा। फिलिस्तीन में बच्चों,महिलाओं समेत नागरिकों के जनसंहार पर तत्काल रोक लगाओ,मोदी सरकार इजरायल का समर्थन बंद करे और युद्ध पर रोक लगाने का समर्थन करे नारों के साथ फिलिस्तीन की जनता के साथ एकजुटता के साथ वाम संगठनों द्वारा आरा में निकाला विरोध मार्च !वामदलों ने भाकपा-माले फिलिस्तीन में बच्चों,महिलाओं समेत हजारों नागरिकों के जारी जनसंहार पर तत्काल रोक लगाने की मांग के साथ देशव्यापी विरोध के आह्वान पर रेलवे पूर्वी आरा से विरोध मार्च निकालकर शहर के विभिन्न मार्गो से होते से आरा रेलवे स्टेशन तक पहुंचा और उसके बाद सभा में तब्दील हो गया !सभा का संचालन भाकपा-माले नगर सचिव दिलराज प्रीतम ने किया !सभा को संबोधित वाम दलों के नेताओं ने कहा कि फिलिस्तीन की जनता के साथ एकजुटता प्रदर्शित की इजराइल द्वारा फिलिस्तीन पर बमबारी करते हुए एक माह बीत चुका है और इजराइली सेना ने बेशर्मी से अस्पतालों,रिहायशी इलाकों,घरों पर हमला करके हजारों नागरिकों को मार डाला है, जिसमें बड़ी संख्या में बच्चे और महिलाएं और बुजुर्ग शामिल हैं!

अमेरिकी साम्राज्यवाद के इजराइल के साथ गठजोड़ के खिलाफ विरोध प्रदर्शन करते हुए मांग की गई कि अमेरिका को तत्काल युद्धविराम सुनिश्चित करना चाहिए और फिलिस्तीनी जनसंहार के लिए इजरायली रक्षा बलों को वित्तपोषण,हथियार और समर्थन देना बंद करना चाहिए!

वामदलों ने यह भी मांग की कि,मोदी सरकार अमेरिका-इजरायल द्वारा फिलिस्तीनियों के जनसंहार को बढ़ावा देना और इजराइल का समर्थन बंद और अंतराष्ट्रीय स्तर पर तत्काल रोक लगाने की मांग करे !विरोध मार्च में भाकपा-माले केंद्रीय कमेटी सदस्य राजू यादव,सीपीएम के पूर्व जिला सचिव शिवकेश्वर राय,भाकपा-माले राज्य कमेटी सदस्य क्यामुद्दीन अंसारी,इंनौस राज्य सचिव शिवप्रकाश रंजन,आइसा राज्य सचिव शब्बीर कुमार,जिला कमेटी सदस्य,नंदजी राम,जिला कमेटी सदस्य भोला यादव,गोपाल प्रसाद,अमित कुमार बंटी,अभय कुशवाहा,विशाल कुमार,लालन यादव,रौशन कुशवाहा,चंदेश्वर राम,सुरेश सिंह,संतोष कुमार,योगेन्द्र राम,जनार्दन राम,शिवगोविंद राम,कृष्णरंजन गुप्ता,लव कुमार,सीपीएम के अशोक शास्त्री,जसमुद्दीन अंसारी,प्रमोद राय,भोदा यादव,आशानंद यादव,प्रमोद रजक शामिल थे!

भोजपुर में पहली बार गोबर से बने दिये की बिक्री हुई शुरू, सस्ते दामों पर उपलब्ध हैं आरा में इको फ्रेंडली दिये

प्रात : किरण /आलोक भारती

आरा। दीपावली को लेकर आरा के बाजारों में चल पहल बढ़ गई है। दीपावली को लेकर स्थानीय लोग घर की सजावट की वस्तुओं के साथ साथ घर को जगमग करने के लिए ईको फ्रेंडली दिये भी खरीदने के लिए बाजार में पहुँच रहें हैं। पहली बार जिले में गोबर से बने ईको फ्रेंडली दिये बाजारों में बिक रहें हैं। गोवर्धन गो सेवा केंद्र ट्रस्ट के संचालक सुधीर कुमार ने बताया कि दीपावली पर गाय के गोबर से बनने वाले दीयों की भारी मांग है। पहले जहां गाय के गोबर से सिर्फ खाद बनाई जाती थी, वहीं अब खाद के अलावा दीये व भगवान के मूर्तियां भी बनाई जा रही है, जिन्हें पर्यावरण और धार्मिक महत्व से भी काफी शुद्ध और पवित्र माना जाता है।

पर्यावरण संरक्षण में सहायक हैं गोबर के दीये: पर्यावरण संरक्षण को ध्यान में रखते हुए गोबर के दीये का चलन भी तेजी से बढ़ रहा है। इस दीये की सबसे बड़ी खासियत यह है कि यह बाती के जलने के साथ ही दीया स्वयं भी जलकर राख में परिवर्तित हो जाता है। फिलहाल बाजार में खरीददारी करने आ रहे ग्राहकों के लिए गोब

18 की सैलरी पर मांजते थे जूठे बर्तन, आज देश में 100 से ज्यादा रेस्टोरेंट्स

13 साल की उम्र में घर छोड़ मुंबई आ गए थे जयराम बानन

नई दिल्ली, एजेंसी। इंसान पैसे नहीं, सोच से गरीब होता है। मेहनत से गरीब होता है। अगर कोई चाह ले कि अमीर बनना है, तो फिर बेस कितना भी छोटा क्यों ना हो, मंजिल मिल ही जाती है। यह ऐसे ही एक शख्स की कहानी है। इस शख्स ने अपनी किस्मत का रोना नहीं रोया, बल्कि मेहनत की। कम पैसो वाला काम किया लेकिन सपने बड़े देखे। कहां तो वह कभी सैलरी में 18 रुपये पाता था और आज 300 करोड़ का बिजनस चलाता है। हम बात कर रहे हैं सागर र प्रतिशता रेस्टोरेंट्स के मालिक जराम बानन की। आइए उनकी कहानी जानते हैं।

13 साल की उम्र में छोड़ दिया घर

कर्नाटक के उडुपी में पैदा हुए जयराम बनान करीब 13 साल के रहे होंगे, जब उन्होंने घर छोड़ दिया था। घर छोड़ने का कारण था पापा की पिटाई का डर। बानन को अपने पापा से बहुत डर लगता था। स्कूलिंग के दौरान वे एक कक्षा में फेल हो गए थे। उन्हें यह डर सताने लगा कि पिताजी बहुत पिटाई करेंगे। इसी डर से उन्होंने 13 साल की उम्र में घर छोड़ दिया।

मुंबई जाकर झूठे बर्तन मांजे

घर छोड़कर बनान सीधे मुंबई पहुंच गए। यह 1967 का समय था। यहां उनका एक जानने वाला था, जो रेस्टोरेंट चलाता था। इसी रेस्टोरेंट में बानन काम करने लग गए। उम्र छोटी थी तो ज्यादा कुछ आता नहीं था। ऐसे में वे झूठे बर्तन धोते थे। इस काम के लिए उन्हें 18 रुपये महीने सैलरी मिलती थी। 6 साल तक उन्होंने बर्तन धोने का काम किया। इसके बाद बनान की लगन देखकर उन्हें पहले वेटर और बाद में रेस्टोरेंट का मैनेजर बना दिया गया। इसके साथ ही उनकी सैलरी 200 रुपये महीने हो गई थी।

दिल्ली में खोला पहला रेस्टोरेंट

बानन ने वर्षों तक उस रेस्टोरेंट में नौकरी की। फिर उन्होंने खुद का बिजनस शुरू करने का सोचा। वे दिल्ली में अपना खुद का रेस्टोरेंट खोलना चाहते थे। बानन 1947 में दिल्ली आ गए। यहां पहले उन्होंने गाजियाबाद में सेंट्रल इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड की कैंटीन चलाई। इसके बाद उन्होंने साउथ दिल्ली की डिफेंस कॉलोनी में अपना पहला रेस्टोरेंट खोला। इसका नाम सागर रखा गया। इस रेस्टोरेंट से पहले ही दिन उन्होंने 408 रुपये कमाए थे।

300 करोड़ का बिजनस

बानन ने रेस्टोरेंट में मन लगाकर काम किया। क्वालिटी पर विशेष ध्यान किया। जब यह अच्छा चल निकला तो 4 साल बाद दिल्ली में ही एक और रेस्टोरेंट खोला गया। इस रेस्टोरेंट का नाम सागर र प्रतिशता रखा गया। जयराम बनान को लोग डोसा किंग के नाम से भी बुलाया जाता है। समय के साथ सागर र प्रतिशता बड़ा ब्रांड बनता चला गया। आज न सिर्फ भारत में, बल्कि सिंगापुर, कनाडा और बैंकॉक में भी सागर र प्रतिशता के आउटलेट्स हैं। आज बनान 300 करोड़ रुपये से अधिक का बिजनस चलाते हैं। दुनिया भर में उनके करीब 100 रेस्टोरेंट्स हैं।

डाबर इंडिया को 7,000 करोड़ रुपए की नकदी के साथ अधिग्रहण के अवसर की तलाश

नई दिल्ली, एजेंसी। तेल, साबुन, शैम्पू जैसे दैनिक उपयोग का सामान बनाने वाली घरेलू कंपनी डाबर इंडिया 7,000 करोड़ रुपए की नकदी के साथ स्वास्थ्य, घरेलू तथा व्यक्तिगत देखभाल क्षेत्र में अधिग्रहण के अवसर टटोल रही है। कंपनी के मुख्य कार्यपालक अधिकारी (सीईओ) मोहित मल्होत्रा ने कहा है कि इसके अलावा डाबर ऑनलाइन कारोबार में भी अधिग्रहण करना चाहती है। डाबर ऑनलाइन क्षेत्र में अपनी उपस्थिति बढ़ा रही है, जिसमें ई-कॉमर्स चैनल और डी2सी यानी सीधे ग्राहकों को सामान की बिक्री का कारोबार शामिल है। वह मौजूदा ब्रांड के तहत अधिक नवोन्मेषी उत्पाद तथा अधिग्रहण के माध्यम से पैठ बढ़ाने की योजना बना रही है। मल्होत्रा ने कहा, ''हम वहां नवप्रवर्तन ला रहे हैं। ये नवप्रवर्तन मौजूदा ब्रांड के और कुछ नए ब्रांड के आधार पर आएंगे जिन्हें हम पेश कर सकते हैं। हम एक नए ब्रांड के अधिग्रहण पर भी विचार कर रहे हैं। कंपनी अधिग्रहण के साथ त्वचा देखभाल के क्षेत्र में नए ब्रांड पेश कर वृद्धि पर ध्यान दे रही है। मल्होत्रा ने कहा, ''...हमारी त्वचा देखभाल को छोड़कर कोई नया ब्रांड पेश करने की योजना नहीं है। अन्य क्षेत्रों में हमारी ऐसी कोई योजना नहीं है। बाकी हम अधिग्रहण पर गौर कर रहे हैं।

उन्होंने कहा, ''यदि डाबर को 'उपयुक्त मूल्यांकन पर कुछ मिलता है, तो वह एक अधिग्रहण पर विचार कर सकती है। इस विशेष उद्देश्य के लिए हमारे बही-खाते में लगभग 7,000 करोड़ रुपए पड़े हैं। मल्होत्रा ने कहा कि अधिग्रहण के अलावा, नवोन्मेष भी बहुत महत्वपूर्ण है। यह न केवल युवा या नए उम्र के उपभोक्ताओं को आकर्षित करता है बल्कि एक ब्रांड की अवधि को भी बढ़ाता है। उन्होंने कहा, ''यह एक आवश्यकता है, अगर किसी ब्रांड को विकसित होना है या बढ़ना है, तो उसे हर दो से तीन साल में एक नया रूप लेना होगा, तभी ब्रांड आगे बढ़ेगा। इस साल की शुरुआत में डाबर ने ब्रांडेड मसालों और मसाला बाजार में प्रवेश करने के लिए बादशाह मसाला में 51 प्रतिशत हिस्सेदारी का अधिग्रहण किया था।

मार्च, 2024 तक 65,000 सहकारी समितियों को डिजिटल करने का लक्ष्य: नाबार्ड चेयरमैन

नई दिल्ली, एजेंसी। राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक (नाबार्ड) के चेयरमैन शाजी के. वी. ने बुधवार को कहा कि सरकार का लक्ष्य सहकारी समितियों की पारदर्शिता तथा दक्षता में सुधार के लिए अगले साल मार्च तक करीब 65,000 सहकारी समितियों को कंप्यूटरीकृत करने का है। नाबार्ड को राष्ट्रीय स्तर की निगरानी तथा कार्यान्वयन समिति और सहकारिता मंत्रालय के मार्गदर्शन व निर्देशों के तहत सहकारी समितियों को डिजिटल करने के लिए परियोजना प्रबंधक के रूप में नामित किया गया है।

एक सम्मेलन में उन्होंने कहा, ''करीब 10,000 सहकारी समितियों को पहले ही डिजिटल किया जा चुका है। हम मार्च, 2024 तक 65,000 समितियों को डिजिटल करने का लक्ष्य बना रहे हैं। सहकारी समितियों में दक्षता के स्तर पर पिछले कुछ वर्षों में आई खामियों पर उन्होंने कहा, ''हम पारदर्शिता में सुधार करके और इन संस्थाओं के कंप्यूटरीकरण के जरिए उन्हें महत्वपूर्ण मूल्य श्रृंखला का खिलाड़ी बनाने की कोशिश कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि नाबार्ड सहकारी समितियों और ग्रामीण क्षेत्र के लिए एक डेटा वेयरहाउस भी बना रहा है। यह करीब छह महीने में तैयार हो जाना चाहिए।

सूक्ष्म वित्त पहुंच के संबंध में क्षेत्रीय असमानता की ओर इशारा करते हुए शाजी ने कहा कि पूर्व और दक्षिण की ओर इसका झुकाव अधिक है। उन्होंने कहा कि इन दोनों क्षेत्रों में सूक्ष्म वित्त पहुंच करीब दो-तिहाई है, जबकि उत्तर, मध्य तथा पश्चिम सहित शेष भारत में केवल एक-तिहाई है। शाजी ने कहा, ''यह सवाल उठता है कि क्या हम क्षेत्रीय असमानता से ठीक से निपट रहे हैं। यदि आप इस डाटा को सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) योगदान या राष्ट्रीय आय योगदान के साथ जोड़ते हैं, तो हम यहां कुछ असमानता पाएंगे। लैंगिक समानता पर उन्होंने कहा कि नाबार्ड ने क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों (आरआरबी) को कर्ज देते समय इसे ध्यान में रखने के लिए कहा है।

एचपीसीएल अगले साल से दूसरी कंपनियों से डीजल नहीं खरीदेगी

नई दिल्ली, एजेंसी। हिंदुस्तान पेट्रोलियम कॉरपोरेशन लिमिटेड (एचपीसीएल) आंध्र प्रदेश में अपनी विशाखापत्तनम रिफाइनरी का विस्तार पूरा करने और अगले वित्त वर्ष में राजस्थान में एक नई रिफाइनरी स्थापित करने के बाद रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड और नायरा एनर्जी जैसी कंपनियों से डीजल खरीदना बंद कर देगी। कंपनी के अधिकारियों ने यह जानकारी दी। देश में करीब एक-चौथाई पेट्रोल पंप एचपीसीएल के हैं लेकिन उसके पास पेट्रोल तथा डीजल का उत्पादन करने के लिए पर्याप्त तेल शोधन क्षमता नहीं है। इसलिए इसकी भरपाई के लिए वह मेंगलोर रिफाइनरी एंड पेट्रोकेमिकल्स लिमिटेड (एमआरपीएल), गुजरात में रिलायंस इंडस्ट्रीज की जामानगर इकाइयों और नायरा की वाडिनार रिफाइनरी से उत्पाद खरीदती है।

एचपीसीएल के चेयरमैन पुष्प कुमार जोशी ने कहा कि पिछले पांच वर्षों में परिसंपत्तियों की गुणवत्ता तथा क्षमता को मजबूत करने में पूंजीगत व्यय पर कंपनी के ध्यान देने के अब नतीजे आने शुरू हो गए हैं। उन्होंने कहा कि कंपनी पहले ही अपनी मुंबई रिफाइनरी की क्षमता को 75 लाख टन से बढ़ाकर 95 लाख टन प्रति वर्ष कर चुकी है। विशाखापत्तनम इकाई का विस्तार करके उसकी क्षमता अगले साल तक 1.5 करोड़ टन तक की जाएगी। उत्पाद 'सोर्सिंग मिश्रण के बारे में पूछे जाने पर एचपीसीएल के निदेशक (वित्त) रजनीश नारंग ने कहा कि कंपनी की मुंबई तथा विशाखापत्तनम रिफाइनरियां वर्तमान में कंपनी द्वारा बेचे जाने वाले पेट्रोल का 43 प्रतिशत और डीजल का 47 प्रतिशत प्रदान करती है।

एचपीसीएल-मित्तल एनर्जी लिमिटेड उद्योगपति लक्ष्मी निवास मित्तल के साथ एक संयुक्त उद्यम वाली कंपनी और यह 24 प्रतिशत पेट्रोल तथा 31 प्रतिशत डीजल प्रदान करती है। बाकी 34 प्रतिशत पेट्रोल और 21 प्रतिशत डीजल दूसरी कंपनियों से आता है। उन्होंने कहा कि एक बार जब विशाखापत्तनम का विस्तार अगले साल पूरा हो जाएगा, तो एचपीसीएल की अपनी रिफाइनरियां 61 प्रतिशत डीजल की मांग पूरी करेंगी। एचएमईएल 16 प्रतिशत देगी और 23 प्रतिशत बाहरी कंपनियों से लिया जाएगा। नारंग ने कहा, ''एक बार जब राजस्थान रिफाइनरी स्थापित हो जाएगी, तो डीजल की पूरी आवश्यकता एचपीसीएल की अपनी तथा संयुक्त उद्यम रिफाइनरियों से पूरी हो जाएगी। उन्होंने कहा कि पेट्रोल की मांग में से 49 प्रतिशत एचपीसीएल की मौजूदा दो रिफाइनरियों से, 10 प्रतिशत एचएमईएल से, 12 प्रतिशत राजस्थान रिफाइनरी से और शेष 29 प्रतिशत एमआरपीएल, रिलायंस और नायरा जैसी अन्य रिफाइनरियों से पूरी की जाएगी।

धनतेरस: वाहन बिक्री का टूटेगा रिकॉर्ड, हर सेगमेंट में सकारात्मक वृद्धि, 90 फीसदी एसयूवी की हिस्सेदारी

नई दिल्ली, एजेंसी। वाहनों की बुकिंग और खुदरा बिक्री के लिहाज से इस साल का धनतेरस शानदार रहने वाला है। देशभर के बाजारों में खरीदारों की अच्छी-खासी भीड़ दिख रही है। वाहनों के हर सेगमेंट में सकारात्मक वृद्धि दिख रही है। नवरात्र की तरह इस बार धनतेरस पर भी वाहन बिक्री का रिकॉर्ड टूट सकता है।

फेडरेशन ऑफ ऑटोमोबाइल डीलर्स एसोसिएशन (फाडा) के अध्यक्ष मनीष राज सिंघानिया ने बताया कि एसयूवी (स्पोर्ट्स यूटिलिटी व्हीकल) के प्रति बढ़ते आकर्षण की वजह से यह धनतेरस वाहन उद्योग के लिए खास रहेगा। वाहनों की रिकॉर्ड बुकिंग हुई है। कुल बुकिंग में एसयूवी की हिस्सेदारी 90 फीसदी है। हालांकि, हैचबैक और सेडान कारों की बुकिंग में गिरावट देखी जा रही है। फाडा अध्यक्ष ने बताया, कुल बुकिंग में शहरी मांग का योगदान 60 फीसदी है। ग्रामीण इलाकों से भी 40 फीसदी बुकिंग मिली है, जो उम्मीद से कम है।उन्होंने बताया कि बेहतर इन्वेंट्री की वजह से इस साल वाहनों की वेटिंग अवधि घटकर चार-छह महीने रह गईहै।पिछले साल इन्वेंट्री में कमी से लोगों को वाहनों की डिलीवरी के लिए दो साल तक इंतजार करना पड़ा था। दोपहिया वाहनों की बिक्री में भी तेजी की उम्मीद है। फाडा का कहना है कि अब तक बुकिंग के आंकड़े अच्छे रहे हैं। धनतेरस पर दोपहिया वाहनों

की बिक्री का असर नवंबर के वाहनों की बिक्री के आंकड़ों पर सकारात्मक दिखेगा। इलेक्ट्रिक वाहनों (ई-वाहन) की मांग अच्छी दिख रही है, लेकिन वृद्धि स्थिर है। इलेक्ट्रिक यात्री वाहनों की पहुंच दो फीसदी और ई-दोपहिया वाहनों की पांच फीसदी पर स्थिर है। ईवी की पहुंच बढ़ाने के लिए इन्हें किफायती बनाना होगा। पिछले धनतेरस से इस बार ज्यादा ऑफर और फाइनेंस स्कीम उपलब्ध हैं। हैचबैक-सेडान कारों पर 5-10 फीसदी तक छूट मिल रही। एसयूवी पर छूट कम है। एक्सचेंज बोनस व कॉरपोरेट छूट जैसे कई अन्य ऑफर भी मिल रहे हैं। -मनीष राज सिंघानिया, अध्यक्ष, फाडा कन्फेडरेशन ऑफ ऑल इंडिया ट्रेडर्स (कैट) के राष्ट्रीय महामंत्री प्रवीन खंडेलवाल ने बताया कि धनतेरस-दिवाली के लिए सजे बाजारों में उम्मीद से ज्यादा भीड़ दिख रही है। माहौल अच्छा दिख रहा है। इस बार देशभर के खुदरा बाजारों में करीब दो लाख करोड़ रुपये तक कारोबार होने की उम्मीद है। पिछले साल धनतेरस-दिवाली पर खुदरा बाजारों में 1.50 लाख करोड़ का कारोबार हुआ था।

सिर्फ धनतेरस पर देशभर के खुदरा बाजारों में 50,000 करोड़ रुपये के कारोबार की उम्मीद है। इसमें सोने के आभूषणों का 3,500 करोड़ का योगदान होगा। इसके अलावा, 1,000 करोड़ रुपये के बर्तन और 1,000 करोड़ रुपये के इलेक्ट्रॉनिक्स उत्पाद बिकने की उम्मीद है। खंडेलवाल ने कहा, आत्मनिर्भर भारत और वोकल ऑफ लोकल अभियान का उपभोक्ताओं पर काफी असर पड़ा है। इस बार भारतीय कारोबारियों ने धनतेरस-दिवाली से जुड़ी किसी भी वस्तु का चीन से आयात नहीं किया। इससे चीन को एक लाख करोड़ रुपये का नुकसान हुआ है। पिछले साल भी पड़ोसी देश को 75,000 करोड़ की चपत लगी थी। रिटेलर्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया (राई) के सीईओ कुमार राजगोपालन ने बताया कि इस बार पिछले साल से कम उत्साह दिख रहा है। फिर भी, खुदरा बिक्री पिछले साल के मुकाबले 5-6 फीसदी तक बढ़ सकती है। हालांकि, उम्मीद 10-12 फीसदी वृद्धि की जताई जा रही थी। उन्होंने कहा, बुकिंग और पूछताछ के अब तक आंकड़ों को देखें तो इलेक्ट्रॉनिक्स उत्पादों की बिक्री 6 फीसदी बढ़ने की उम्मीद है।

फाइनेंशियल ईयर 24 की दूसरी तिमाही के लिए कैप्टन पाइप्स लिमिटेड ने शानदार वित्तीय परिणामों की घोषणा की

राजकोट , एजेंसी। पीवीसी पाइप्स इंडस्ट्री की लीडिंग कंपनियों में से एक, कैप्टन पाइप्स लिमिटेड कैप्टन (बीएसई-538817) ने हाल ही में आयोजित होने वाली अपनी बोर्ड मीटिंग में 30 सितंबर 2023 को खत्म हुई तिमाही और छह माही के लिए कंपनी के अन-ऑडिटेड फाइनेंशियल रिजल्ट्स को अप्रूव कर दिया है। हेल्दी ग्रोथ वॉल्यूम की वजह से ऑपरेशनल रेवेन्यू 8.2 प्रतिशत बढ़ गया, जो फाइनेंशियल ईयर 23 की दूसरी तिमाही में 1545.82 लाख रुपये से फाइनेंशियल ईयर 24 की दूसरी तिमाही में 1672.24 लाख रुपये हुआ। सेल्स में हाई मार्जिन वाले प्रोडक्ट्स के जुड़ने के कारण एबिटा एबीटा 251 प्रतिशत बढ़ गया,जो फाइनेंशियल ईयर 23 की दूसरी तिमाही में 47.94 लाख रुपये से फाइनेंशियल ईयर 24 की दूसरी तिमाही में 168.64 लाख रुपये पहुंचा। एबीटा मार्जिन फाइनेंशियल ईयर 23 की दूसरी तिमाही में 3.10 प्रतिशत से बढ़कर फाइनेंशियल ईयर 24 की दूसरी तिमाही में 698 बीपीएस द्वारा 10.08 प्रतिशत हो गया। प्रॉफिट बिफोर टैक्स 706.37 प्रतिशत बढ़ गया,जो फाइनेंशियल ईयर 23 की दूसरी तिमाही में 14.91लाख रुपये से फाइनेंशियल ईयर 24 की दूसरी तिमाही में 120.23 लाख रुपये हुआ। फाइनेंशियल ईयर 24 की दूसरी तिमाही में शुद्ध लाभ बढ़कर 103.96 लाख रुपये हुआ। फाइनेंशियल ईयर 24 की पहली छमाही और फाइनेंशियल ईयर 24 की दूसरी तिमाही के परफॉर्मेंस पर कमेन्ट करते हुए मैनेजमेंट ने कहा कि, हमने फाइनेंशियल ईयर 24 की दूसरी तिमाही में रेवेन्यू में शानदार ग्रोथ देखी, हमारे ऑपरेशनल रेवेन्यू में पिछले साल की समान अवधि की तुलना में 8.2 प्रतिशत की ग्रोथ हुई, जो 1672.24 लाख रुपये तक पहुंच गई। इस वृद्धि का श्रेय हमारे बिज़नेस ऑपरेशन के बढ़े वॉल्यूम को दिया जा सकता है। हालांकि पहली तिमाही में सीमिलर लोअर आरएम प्राइस की वज़ह से बिक्री वसूली प्रभावित हुई। इसी तिमाही में हमारे साथ कुछ सकारात्मक चीजों में से एक एबीटा से जुड़ा हेल्दी इंप्रूवमेंट था, जिसमें 251 प्रतिशत की बढ़ोत्तरी हुई और ये फाइनेंशियल ईयर 23 की दूसरी तिमाही में 47.94 लाख रुपये से बढ़कर फाइनेंशियल ईयर 24 की दूसरी तिमाही में 168.64 लाख रुपये हो गया।

एचडीएफसी इर्गो ने रबी सीजन में मध्य प्रदेश के किसानों के लिए प्रधान मंत्री फसल बीमा योजना लागू की

धार एजेंसी भारत में निजी क्षेत्र की अग्रणी सामान्य बीमा कंपनी, एचडीएफसी इर्गो जनरल इंश्योरेंस कंपनी को मध्य प्रदेश सरकार ने रबी, 2023 सीजन के लिए अलीराजपुर, बड़वानी, बुरहानपुर, धार, झाबुआ, खंडवा और खरगोन जिलों में ऋणी और गैर-ऋणी किसानों के लिए प्रधान मंत्री फसल बीमा योजना (पीएमएफबीवाई) लागू करने के लिए अधिकृत किया है। पीएमएफबीवाई योजना में किसानों को तूफ़ान, ओलावृष्टि, बाढ़, तूफ़ानी बारिश, बेमौसम बारिश, बादल फटने, प्राकृतिक कारणों से लगी आग जैसे कई बाहरी ख़तरों के कारण फसल को होने वाले नुकसान से बीमा की सुरक्षा मिलती है। फसल के नुक़सान का आकलन करने के लिए, राज्य सरकार इस योजना के लिए अधिसूचित क्षेत्रों में अधिसूचित फसलों पर फसल कटाई प्रयोग (सीसीई) की योजना बनाकर संचालन करेगी। यदि सीसीई में फसल के कम आँकड़े पाए जाते हैं, तो माना जाएगा कि फसल की पैदावार कम हुई है, जिसके लिए किसान को क्लेम दिया जाएगा। इस योजना के अंतर्गत फसल चक्र के हर चरण के लिए बीमा कवर मिलेगा, जिसमें बुआई से पहले, कटाई और कटाई के बाद के जोखिम भी शामिल हैं। पीएमएफबीवाई योजना के अंतर्गत आने वाले सभी उत्पादों को मध्य प्रदेश सरकार के कृषि विभाग से अनुमोदन मिला है। अलीराजपुर, बड़वानी, बुरहानपुर, धार, झाबुआ, खंडवा और खरगोन जिलों के किसान ऊपर सूचीबद्ध फसलों के लिए पीएमएफबीवाई योजना के तहत बीमा कवर का लाभ अपने जिले में अपने बैंक, कॉमन सर्विस सेंटर (सीएससी) या फिर अधिकृत एचडीएफसी इर्गो एजेंट्स से संपर्क करके प्राप्त कर सकते हैं। बीमा कवर प्राप्त करने की अंतिम तिथि का वर्णन एवं अन्य विवरण कृषि विभाग की वेबसाइट पर उपलब्ध होगा।

एसएमएफजी गृहशक्ति ने मध्य प्रदेश में किया अपना विस्तार; सागर में नई शाखा का शुभारंभ

सागर एजेंसी। भारत में किफायती आवास ऋण के क्षेत्र की अग्रणी कंपनी, एसएमएफजी गृहशक्ति ने सागर में एक नई शाखा के उद्घाटन के साथ मध्य प्रदेश में अपने रणनीतिक विस्तार की घोषणा की। यह राज्य में एसएमएफजी गृहशक्ति द्वारा स्थापित 13वीं शाखा है, जिससे कंपनी की मध्य प्रदेश के निवासियों के लिए किफायती आवास ऋण की सुविधा प्रदान करने के प्रति प्रतिबद्धता ज़ाहिर होती है। कंपनी ने वित्त वर्ष 2024 में राज्य में और विस्तार करने की योजना बनाई है। कंपनी वित्तीय उत्पादों की एक विविध श्रृंखला प्रदान करती है, जिसमें पूर्व निर्मित घर को बेहतर बनाने, घर बनाने, घर का विस्तार, संपत्ति के एवज़ में ऋण और वाणिज्यिक संपत्तियों की खरीद या पुनर्बिक्री के ऋण शामिल है। इसके अतिरिक्त, एसएमएफजी गृहशक्ति मध्यम स्तरीय डेवलपर्स के लिए निर्माण से सम्बन्धित वित्तपोषण समाधान भी प्रदान करती है। उपरोक्त प्रस्ताव कंपनी के व्यापक उद्योग अनुभव, मजबूत अभिभावक संबंधों, मजबूत जोखिम प्रबंधन ढांचे के साथ राष्ट्रव्यापी वितरण नेटवर्क से लाभान्वित होते हैं। मध्य प्रदेश में कंपनी के विस्तार पर अपनी टिप्पणी में, एसएमएफजी गृहशक्ति के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी, श्री दीपक पाटकर ने कहा, 2016 में मध्य प्रदेश में हमारे प्रवेश के बाद से, हम ग्राहकों के अपना घर के स्वामित्व के सपनों को साकार करने के लिए प्रति पूरी तरह से प्रतिबद्ध हैं। हमने जानबूझकर आबादी के उन वर्गों के साथ जुड़ना चुना है, जिन्हें प्रायः औपचारिक बैंकिंग प्रणाली से बाहर रखा जाता है और इससे अधिक समावेशी वित्तीय प्रणाली का निर्माण सुनिश्चित होता है।

हैंडीक्राफ्ट पर रिलायंस का बड़ा दांव, लॉन्च हुआ पहला 'स्वदेश' स्टोर, देश की आर्ट को स-यूरोप तक ले जाने की प्लानिंग

नई दिल्ली, एजेंसी। रिलायंस ने भारत की सदियों पुरानी कला को दुनिया के सामने रखने की शुरुआज आज हैदराबाद से कर दी है। रिलायंस फाउंडेशन की फाउंडर और चेरपर्सन नीता अंबानी ने रिलायंस रिटेल के पहले 'स्वदेश' स्टोर को लॉन्च किया है। स्वदेश स्टोर हैदराबाद के जुबली हिल्स में 20,000 वर्ग फुट में फैला हुआ है। नीता अंबानी ने बताया कि यह स्टोर पूरी तरह भारतीय कला और शिल्प को समर्पित है। भारत की सदियों पुरानी कला और शिल्प को वैश्विक स्तर पर ले जाने के उद्देश्य से स्वदेश की शुरुआत की गई है। इस स्टोर में देशभर के पारंपरिक कलाकारों और कारीगरों के उत्पाद

व शिल्प बिक्री के लिए उपलब्ध होंगे। नीता अंबानी ने कहा, रिलायंस रिटेल के 'स्वदेश' स्टोर, भारत की सदियों पुरानी कला को दुनिया के सामने रखने का प्लेटफॉर्म बनेंगे। साथ ही ये कारीगरों और शिल्पकारों के लिए आमदनी का जरिया भी बनेंगे। स्वदेश स्टोर में हस्त शिल्प के अलावा हस्त निर्मित खाद्य वस्तुएं व कपड़े जैसे उत्पाद भी खरीददारी के लिए उपलब्ध होंगे। स्टोर की लॉन्चिंग के बाद मीडिया से नीता अंबानी ने कहा, स्वदेश भारत की पारंपरिक कला और कारीगरों को बचाने और उन्हें आगे बढ़ाने की एक विनम्र पहल है। इसमें मेक इन इंडिया की भावना निहित है और यह हमारे कुशल कारीगरों और शिल्पकारों के लिए सम्मान के साथ जीविका चलाने का साधन बनेगा। वे वास्तव में हमारे देश का गौरव हैं और स्वदेश के माध्यम से हम उन्हें वह वैश्विक पहचान दिलाने की कोशिश करेंगे, जिसके वे हकदार हैं। हम भारत के साथ अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अमेरिका और यूरोप में भी स्वदेश का विस्तार करने का प्रयास करेंगे। मुंबई स्थित नीता मुकेश अंबानी कल्चरल सेंटर (ह्रस्ष्ट) में स्वदेश एक्सपीरियंस जोन बनाया गया है। यहां भारतीय और अंतर्राष्ट्रीय मेहमान, हुनरमंद उस्ताद कारीगरों को काम करते हुए देख सकते हैं। वे उनसे बातचीत कर सकते हैं और साथ ही खरीददारी भी सकते हैं।

वर्ल्ड कप 2023 में पूरे हुए 500 छक्के

इतिहास में सबसे ज्यादा, यह टीम है आगे

नईदिल्ली (एजेंसी)। क्रिकेट विश्व कप 2023 बड़े हिटर्स के लिए जाना जाएगा। इस दौरान विश्व कप इतिहास में सबसे ज्यादा छक्के लग चुके हैं। अब तक यह रिकॉर्ड 2015 क्रिकेट विश्व कप के नाम पर था जब 463 छक्के उड़े थे लेकिन इंगलैंड बनाम नीदरलैंड मैच के साथ ही महज 40 मुकाबलों में ही क्रिकेट विश्व कप 2023 की यह संख्या 516 तक पहुंच गई है। इस दौरान दक्षिण अफ्रीकी क्रिकेटर सबसे ज्यादा चौके और छक्के लगाने वाली टीम बन गई है। टीम इंडिया की ओर से भले ही रोहित शर्मा सर्वाधिक 22 छक्के लगा चुके हैं लेकिन टीम इंडिया 54 छक्कों के साथ इस लिस्ट में काफी नीचे नजर आ रही है। देखें लिस्ट

विश्व कप में लगे छक्के

साल 2023 - 500+
साल 2019 -357
साल 2015 -463
साल 2011 -258
साल 2007 -373
साल 2003 -266
साल 1999 -153
(आंकड़े 40 मैचों तक)

विश्व कप 2023 में सबसे ज्यादा छक्के

22 ग्लेन मैक्सवेल, ऑस्ट्रेलिया
22 रोहित शर्मा, भारत
20 डेविड वॉर्नर, ऑस्ट्रेलिया
18 क्विंटन डीकॉक, दक्षिण अफ्रीका
18 फखर जमां, पाकिस्तान

विश्व कप इतिहास में सबसे ज्यादा छक्के लगाने वाले प्लेयर

49 क्रिस गेल
44 रोहित शर्मा
43 ग्लेन मैक्सवेल
37 एबी डीविलियर्स
37 डेविड वॉर्नर
31 रिकी पोंटिंग

सचिन तेंदुलकर के नाम पर विश्व कप में बतौर बल्लेबाज सबसे ज्यादा रन बनाने का रिकॉर्ड है लेकिन वह विश्व कप में सिर्फ 27 छक्के ही लगा पाए हैं। सौरव गांगुली ने 21 तो वीरेंद्र सहवाग 18 छक्के लगा चुके हैं। टॉप 10 में सिर्फ एक ही भारतीय रोहित शर्मा केरूप में मौजूद है जोकि इस विश्व कप में इस लिस्ट में टॉप पर आ सकते हैं।

किस टीम ने लगाए कितने छक्के

43 - इंगलैंड
66 - न्यूजीलैंड
54 - पाकिस्तान
37 - बांग्लादेश
36-अफगानिस्तान
82 - साऊथ अफ्रीका
54 - भारत
76 - ऑस्ट्रेलिया
24 - नीदरलैंड्स
42 - श्रीलंका

वहीं, चौकों पर अगर नजर घुमाई जाए तो ऑस्ट्रेलिया की टीम सर्वाधिक 215 चौके लगा चुकी है। इसके बाद न्यूजीलैंड (214), दक्षिण अफ्रीका (212), फिर भारत (198) का नाम आता है। पाकिस्तान (193), इंगलैंड (181), श्रीलंका (180) बांग्लादेश (162), अफगानिस्तान (158) तो नीदरलैंड 144 चौके लगा चुकी है।

दक्षिण अफ्रीका ने लगाए एक विश्व कप में सर्वाधिक छक्के

टूर्नामेंट के दौरान दक्षिण अफ्रीकी हिटर पूरे जोश में हैं। दक्षिण अफ्रीका के बल्लेबाजों ने पहले ही टूर्नामेंट के एक संस्करण में एक टीम द्वारा लगाए गए सर्वाधिक छक्कों के रिकॉर्ड को तोड़ दिया है। 2019 में इंग्लैंड के बल्लेबाजों ने 76 छक्के उड़ाए थे। दक्षिण अफ्रीका के बल्लेबाज अभी से 82 छक्के लगाकर इसे तोड़ चुकी है। ऑस्ट्रेलिया (76), न्यूजीलैंड (66) और भारत (54) का भी इस लिस्ट में नाम है।

वर्ल्ड कप में चल रही है चैंपियंस ट्रॉफी की रेस

टूर्नामेंट की टॉप-8 टीमों को मिलेगी जगह, इंग्लैंड की उम्मीदें बरकरार

नईदिल्ली (एजेंसी)। भारत में चल रहे वनडे वर्ल्ड कप में इस समय दो तरह की रेस चल रही है। एक रेस है टॉप-4 की। इसमें जगह बनाने वाली टीमें टूर्नामेंट के सेमीफाइनल में पहुंचेगी। वहीं, दूसरी रेस चल रही है टॉप-8 की। इसमें जगह बनाने वाली टीमें 2025 में होने वाले आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी में अपनी भागीदारी तय करेंगी। इंग्लैंड की टीम शुरुआती 7 में से 6 मुकाबले हारकर 10वें स्थान पर चल रही थी। वह सेमीफाइनल की रेस से तो बाहर हो ही चुकी है, उस पर चैंपियंस ट्रॉफी से बाहर होने का खतरा भी मंडरा रहा था। हालांकि, नीदरलैंड के खिलाफ जीत ने इंग्लैंड की सांसें लौटा दी हैं। बुधवार की जीत के बाद इंग्लैंड नंबर-7 पर पहुंच गया।

चैंपियंस ट्रॉफी की क्वालिफिकेशन प्रोसेस क्या है - 2025 में चैंपियंस ट्रॉफी पाकिस्तान में खेली जाएगी। इसमें पिछली बार (2017) की तरह 8 टीमें हिस्सा लेंगी। ये टीमें वर्ल्ड कप 2023 के पॉइंट्स टेबल के आधार पर तय होनी है। यानी वर्ल्ड कप में लीग स्टेज के मुकाबले खत्म होने के बाद पॉइंट्स टेबल के टॉप-8 पोजिशन पर फिनिश करने वाली टीमें ही चैंपियंस ट्रॉफी खेल सकेंगी।

पाकिस्तान टूर्नामेंट का मेजबान है, अगर वह पॉइंट्स टेबल में 10वें नंबर पर रहता तब भी वो चैंपियंस ट्रॉफी खेलता। इस सिचुएशन में पाकिस्तान के अलावा पॉइंट्स टेबल के टॉप-7 पोजिशन पर रहने वाली टीमें क्वालिफाई करतीं। लेकिन अभी की सिचुएशन में पाकिस्तान टॉप-6 में ही फिनिश कर रहा है, इसलिए पॉइंट्स टेबल के टॉप-8 में रहने वाली सभी टीमें चैंपियंस ट्रॉफी खेलेंगी।8 नवंबर 2023 तक हुए मैचों के बाद का पॉइंट्स टेबल। यहां क्यू और ई का मतलब सेमीफाइनल के लिए क्वालिफाई करने या इससे एलिमिनेट होने वाली टीमें हैं।

6 टीमें क्वालिफाई कर चुकीं - भारत, साउथ अफ्रीका, ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, पाकिस्तान और अफगानिस्तान की टीमें चैंपियंस ट्रॉफी के लिए क्वालिफाई कर चुकी हैं। ये टीमें अब पॉइंट्स टेबल में छठे नंबर से नीचे नहीं पहुंच सकती हैं। क्योंकि इन 6 टीमों के 8 से ज्यादा पॉइंट्स हैं और बाकी 4 टीमों के फिलहाल 4-4 पॉइंट्स हैं।

चैंपियंस ट्रॉफी के लिए क्वालिफाइड टीमें

टीम	करेंट पोजिशन	पॉइंट्स
भारत	1	16
साउथ अफ्रीका	2	12
ऑस्ट्रेलिया	3	12
न्यूजीलैंड	4	8
पाकिस्तान	5	8
अफगानिस्तान	6	8

टीमों को क्वालिफाई करने के लिए क्या करना होगा?

नीदरलैंड- 12 नवंबर को बेंगलुरु में टीम का आखिरी मैच भारत से होगा। इस मुकाबले को जीतने पर टीम के 6 पॉइंट्स होंगे, यहां टीम चाहेगी कि बांग्लादेश, श्रीलंका और इंग्लैंड में से कोई 2 टीमें अपना आखिरी मैच हार जाएं। इस सिचुएशन में टीम 6 पॉइंट्स के साथ 7वें या 8वें नंबर पर रहेगी और क्वालिफाई कर जाएगी। भारत से हारने पर टीम बाहर हो जाएगी, क्योंकि बाकी 3 टीमों के मुकाबले नीदरलैंड का रन रेट सबसे खराब है।

बांग्लादेश- 11 नवंबर को पुणे में टीम का मुकाबला ऑस्ट्रेलिया से होगा। इस मुकाबले को जीतने पर टीम के 6 पॉइंट्स होंगे, यहां टीम चाहेगी कि नीदरलैंड, श्रीलंका और इंग्लैंड में से कोई 2 टीमें अपना आखिरी मैच हार जाएं। इस सिचुएशन में बांग्लादेश 6 पॉइंट्स के साथ 7वें या 8वें नंबर पर रहेगा और टीम क्वालिफाई कर जाएगी। ऑस्ट्रेलिया से हारने पर टीम चाहेगी कि बाकी 3 टीमें भी अपना-अपना मैच हार जाएं, क्योंकि बांग्लादेश इस वक्त रन रेट के कारण 8वें नंबर पर है और इस पोजिशन पर रहकर टीम क्वालिफाई कर जाएगी।

श्रीलंका- 9 नवंबर को बेंगलुरु में टीम का मुकाबला न्यूजीलैंड से हुआ। इस मुकाबले को जीतने पर टीम के 6 पॉइंट्स हो जाएंगे। यहां टीम चाहेगी कि बांग्लादेश, नीदरलैंड और इंग्लैंड में से कोई 2 टीमें अपना आखिरी मैच हार जाएं। इस सिचुएशन में टीम 6 पॉइंट्स के साथ 7वें या 8वें नंबर पर रहेगी और क्वालिफाई कर जाएगी। न्यूजीलैंड से हारने पर टीम क्वालिफाई नहीं कर सकेगी, क्योंकि श्रीलंका इस वक्त पॉइंट्स टेबल में 9वें नंबर पर है और ये पोजिशन क्वालिफाई करने के लिए काफी नहीं है।

इंग्लैंड- 11 नवंबर को कोलकाता में टीम का मुकाबला पाकिस्तान से होगा। इस मुकाबले को जीतने पर टीम 6 पॉइंट्स के साथ क्वालिफाई कर जाएगी, क्योंकि उसका रन रेट बाकी 3 टीमों से ज्यादा है। पाकिस्तान से हारने पर टीम चाहेगी कि बांग्लादेश, श्रीलंका और नीदरलैंड में से कोई 2 टीमें अपना-अपना मैच हार जाएं, क्योंकि इस सिचुएशन में एक ही टीम 6 पॉइंट्स के साथ 7वें नंबर पर आ पाएगी, जबकि इंग्लैंड 8वें नंबर पर रहकर क्वालिफाई कर जाएगा।

2 स्पॉट के लिए 4 टीमें रेस में - चैंपियंस ट्रॉफी के लिए बचे 2 स्पॉट के लिए वर्ल्ड कप खेल रहीं 4 टीमों में रेस है। इनमें 2019 की वर्ल्ड कप विनर इंग्लैंड, बांग्लादेश, श्रीलंका और नीदरलैंड शामिल हैं। चारों टीमों के इस वक्त 4-4 पॉइंट्स हैं और सभी का 1-1 मैच ही बाकी है। आखिरी मैच जीतने वाली टीम के 6 पॉइंट्स होंगे, अगर सभी टीमें अपना आखिरी मैच जीत गईं, तो बेहतर रन रेट रखने वाली 2 टीमें क्वालिफाई कर जाएंगी। वहीं आखिरी मैच हारने वाली टीम के क्वालिफाई नहीं कर पाने के चांस ज्यादा हो जाएंगे। पॉइंट्स टेबल में फिलहाल इंग्लैंड नंबर-7, बांग्लादेश नंबर-8, श्रीलंका नंबर-9 और नीदरलैंड नंबर-10 पर है। 4-4 पॉइंट्स होने के बाद बावजूद टीमों की रैंकिंग नेट रन रेट में अंतर होने के कारण अलग-अलग हैं। इसलिए टीमों को आखिरी मैच में बड़े अंतर से जीत चाहिए ताकि उनका रन रेट बाकी टीमों से कम न हो।

शुरू हुई वनडे विश्व कप नॉकआउट मैचों के टिकटों की बिक्री

नई दिल्ली (एजेंसी)। आईसीसी वनडे विश्व के सेमीफाइनल और फाइनल के टिकटों के अंतिम सेट की बिक्री गुरुवार रात को होगी। विश्व कप का पहला सेमीफाइनल 15 नवंबर को मुंबई में और दूसरा 16 नवंबर को कोलकाता में खेला जाएगा। फाइनल 19 नवंबर को अहमदाबाद में होगा।

भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) ने यहां जारी विज्ञप्ति में बताया, 'विश्व कप के तीनों अहम मैचों पहला सेमीफाइनल (15 नवंबर), दूसरा सेमीफाइनल (16 नवंबर) और 19 नवंबर को होने वाले फाइनल के टिकट नौ नवंबर को रात आठ बजे आधिकारिक टिकट वेबसाइट 'टिकट्स डॉट क्रिकेटवर्ल्डकप डॉट कॉम पर उपलब्ध होंगे।

उन्होंने कहा, 'विश्व कप के जादू और रोमांच का अनुभव करने और एक नए चैंपियन की ताजपोशी को व्यक्तिगत रूप से देखने के इच्छुक क्रिकेट प्रशंसकों के लिए यह आखिरी मौका होगा। भारत, ऑस्ट्रेलिया और दक्षिण अफ्रीका सेमीफाइनल के लिए क्वालीफाई कर चुके हैं। चौथे स्थान के लिए के लिए न्यूजीलैंड, पाकिस्तान और अफगानिस्तान के बीच मुकाबला है।

न्यूजीलैंड गेंदबाजों के सामने श्रीलंका 171 रन पर ढेर

बेंगलुरु (एजेंसी)। वनडे वर्ल्ड कप 2023 में न्यूजीलैंड और श्रीलंका के बीच मैच बेंगलुरु के एम चिन्नास्वामी स्टेडियम में खेला गया। न्यूजीलैंड ने टॉस जीतकर पहले बॉलिंग का फैसला लिया था। श्रीलंका ने 46.4 ओवर में 171 रन बनाए थे। दुष्मंथा चमीरा 1 रन बनाकर आउट हुए थे। उन्हें रचिन रवींद्र ने ट्रेंट बोल्ट के हाथों कैच कराया। चमिका करुणारत्ने 6 रन बनाकर आउट हुए। उन्हें लॉकी फर्ग्यूसन ने टॉम लैथम के हाथों कैच कराया। धनंजय डी सिल्वा 18 रन बनाकर आउट हुए। उन्हें मिचेल सैंटनर ने डेरिल मिचेल के हाथों कैच कराया। यह सैंटनर का दूसरा विकेट है। उन्होंने एंजलो मैथ्यूज (16 रन) को भी आउट किया। कुसल परेरा 51 रन बनाकर आउट हुए। उन्हें लॉकी फर्ग्यूसन ने मिचेल सैंटनर के हाथों कैच कराया। परेरा ने 22 गेंद पर अर्धशतक जमाया। यह वर्ल्ड कप के मौजूदा सीजन का सबसे तेज अर्धशतक है। इससे पहले, ट्रेंट बोल्ड ने चरिथ असलंका (8 रन), सदीरा समरविक्रमा (1 रन) और कुसल मेंडिस (6 रन) को चलता किया। पथुम निसांका (2 रन) को टिम साउदी ने आउट किया।

पावरप्ले - श्रीलंका ने गंवाए 5 विकेट, परेरा के नाम इस वर्ल्ड कप की सबसे तेज फिफ्टी पावरप्ले में श्रीलंका की आधी टीम पवेलियन लौट गई। 10 ओवर के बाद टीम का स्कोर 74/5 रहा। मुकाबले के दूसरे ओवर में टिम साउदी की बॉल पर टॉम लैथम ने कुसल परेरा का कैच टपकाया। जीवनदान मिलने के बाद कुसल परेरा ने शानदार बल्लेबाजी की। उन्होंने टिम साउदी के दूसरे ओवर में 2 चौके और एक छक्का जड़ा। 5वें ओवर में ट्रेंट बोल्ट ने कुसल मेंडिस और सदीरा समरविक्रमा को चलता कर दिया, लेकिन परेरा लय में बल्लेबाजी करते रहे। उन्होंने टिम साउदी के ओवर में एक छक्का और 3 चौके जमाए। परेरा ने 22 बॉल पर फिफ्टी पूरी की, जो इस वर्ल्ड कप की सबसे तेज फिफ्टी भी है। बोल्ट ने चरिथ असलंका और फर्ग्युसन ने परेरा को पवेलियन की राह दिखाई।

दोनों टीमों की प्लेइंग-11

न्यूजीलैंड - केन विलियमसन (कप्तान), रचिन रवींद्र, डेवोन कॉन्वे, डेरिल मिचेल, टॉम लैथम (विकेटकीपर), ग्लेन फिलिप्स, मार्क चापमन, मिचेल सैंटनर, लॉकी फर्ग्यूसन, टिम साउदी और ट्रेंट बोल्ट।

श्रीलंका - कुसल मेंडिस (कप्तान और विकेटकीपर), कुसल परेरा, पथुम निसांका, सदीरा समरविक्रमा, चरिथ असलंका, एंजलो मैथ्यूज, धनंजय डी सिल्वा, महीश तीक्षणा, दिलशान मदुशंका, दुष्मंथा चमीरा और चमिका करुणारत्ने।

ऑस्ट्रेलियाई महिला कप्तान मेग लैनिंग ने संन्यास की घोषणा की , एक-दो नहीं, जीते हैं 7 विश्व कप

मेलबर्न (एजेंसी)। ऑस्ट्रेलिया की महिला कप्तान मेग लैनिंग ने गुरुवार को दुनिया को उस समय चौंका दिया जब उन्होंने तत्काल प्रभाव से अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास की घोषणा की। दो आईसीसी महिला क्रिकेट विश्व कप ट्रॉफी और पांच आईसीसी महिला टी20 विश्व कप खिताब की विजेता लैनिंग ने अपने देश के लिए सभी प्रारूपों में 8000 से अधिक रन बनाने के बाद 31 साल की उम्र में खेल से संन्यास ले लिया।

संन्यास का निर्णय कठिन था- लैनिंग ने आईसीसी के हवाले से कहा, अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट से दूर जाने का निर्णय लेना कठिन था, लेकिन मुझे लगता है कि अब मेरे लिए सही समय है। मैं 13 साल के अंतर्राष्ट्रीय करियर का आनंद लेने के लिए अविश्वसनीय रूप से भाग्यशाली रही हूं, लेकिन मुझे पता है कि अब मेरे लिए कुछ नया करने का सही समय है। टीम की सफलता के कारण ही आप खेल खेलते हैं, मैं जो करने में सक्षम हूं उस पर मुझे गर्व है और रास्ते में टीम के साथियों के साथ साझा किए गए क्षणों को संजोकर रखूंगी।

उन्होंने आगे कहा, मैं अपने परिवार, अपने साथियों, क्रिकेट विक्टोरिया, क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया और ऑस्ट्रेलियाई क्रिकेटर्स एसोसिएशन को मेरे पसंदीदा खेल को उच्चतम स्तर पर खेलने की अनुमति देने में उनके समर्थन के लिए धन्यवाद देना चाहती हूं। मैं उन सभी प्रशंसकों को भी बहुत-बहुत धन्यवाद देना चाहता हूं, जिन्होंने मेरे पूरे अंतर्राष्ट्रीय करियर में मेरा समर्थन किया है।

2014 में संभाली की कप्तानी - लैनिंग का पहला आईसीसी खिताब 2012 में श्रीलंका में टी20 विश्व कप था और इसके बाद 2013 में भारत में 50 ओवर का विश्व कप खिताब जीता। अल्ट्रा-कंसिस्टेंट दाएं हाथ की खिलाड़ी ने 2014 की शुरुआत में जोडी फील्ड्स से कप्तानी की बागडोर ली और इसके बाद उन्होंने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। उन्होंने 182 मौकों पर आत्मविश्वास के साथ अपने देश का नेतृत्व किया और स्वर्णिम दौड़ के दौरान ऑस्ट्रेलिया क्रिकेट के लिए पांच आईसीसी खिताब जीते।

लैनिंग को 2014 में आईसीसी महिला टी20आई क्रिकेटर ऑफ द ईयर नामित किया गया था और अगले वर्ष आईसीसी महिला वनडे क्रिकेटर ऑफ द ईयर चुना गया था। लैनिंग की निगरानी में ऑस्ट्रेलिया ने और भी खिताब जीते और इस खतरनाक कप्तान ने अपने देश को बर्मिंघम में 2022 राष्ट्रमंडल खेलों में स्वर्ण पदक भी दिलाया।

करियर पर एक नजर - लैनिंग ने अपना करियर कुल 17 अंतर्राष्ट्रीय शतकों के साथ समाप्त किया जिनमें से 15 वनडे क्रिकेट में आए और 2017 में ब्रिस्टल में श्रीलंका के खिलाफ करियर की सर्वश्रेष्ठ 152* रन की पारी भी खेली। 15 शतकों की यह संख्या महिला वनडे क्रिकेट में सबसे अधिक है। लैनिंग का आखिरी अंतरराष्ट्रीय मैच तब था जब उन्होंने इस साल की शुरुआत में दक्षिण अफ्रीका में अपने देश को टी20 विश्व कप खिताब दिलाया था।

छह टेस्ट मैचों में लैनिंग ने 31.36 की औसत से 345 रन बनाए जिसमें 93 का सर्वश्रेष्ठ व्यक्तिगत स्कोर और दो अर्धशतक शामिल हैं। 103 वनडे मैचों में उन्होंने 53.51 की औसत से 4,602 रन बनाए। लैनिंग ने 102 पारियों में 15 शतक और 21 अर्द्धशतक बनाए, जिसमें उनका सर्वश्रेष्ठ स्कोर 152* था। अंत में 132 टी20आई में लैनिंग ने 121 पारियों में 36.61 की औसत और 116 से ऊपर की स्ट्राइक रेट से 3,405 रन बनाए। उन्होंने 133* के सर्वश्रेष्ठ स्कोर के साथ दो शतक और 15 अर्द्धशतक भी बनाए।

मनिका बत्रा वर्ल्ड रैंकिंग में 31वें पायदान पर पहुंची

ये करियर में सर्वश्रेष्ठ, शरत कमल भी टॉप-100 में, मिक्स्ड डबल्स में मनिका-साथियान की रैंकिंग गिरी

दुबई (एजेंसी)। टेबल टेनिस स्टार मनिका बत्रा आईटीटीएफ वर्ल्ड रैंकिंग में 31वें रैंक पर पहुंच गई हैं। यह उनके करियर का बेस्ट रैंकिंग भी है। इससे पहले मनिका 33वें स्थान पर पहुंची थी। वहीं मनिका और साथियान को मिक्स्ड डब्ल्स रैंकिंग में एक स्थान का नुकसान हुआ है। वे 10वें स्थान पर खिसक गए हैं। मनिका के अलावा कोई भी भारतीय खिलाड़ी टॉप 50 में जगह नहीं बनाया पाया है। श्रीजा अकुला को तीन स्थान का नुकसान हुआ है और वह 82वें रैंक पर पहुंच गई हैं। मनिका को एशियन गेम्स और डब्ल्यूटीटी चैंपियंस टूर्नामेंट में बेहतर प्रदर्शन का मिला फायदा मनिका बत्रा को एशियन गेम्स और डब्ल्यूटीटी चैंपियंस टूर्नामेंट में अपने करियर का बेस्ट प्रदर्शन का फायदा मिला है। पिछले महीने चीन में हुए एशियन गेम्स में मनिका बत्रा पहली बार क्वार्टर फाइनल में पहुंची थी। इससे पहले कोई भी भारतीय खिलाड़ी क्वार्टर फाइनल तक सफर तय नहीं कर पाया था। वर्ल्ड टेनिस चैंपियंस टूर्नामेंट में वह अपने करियर में पहली बार राउंड 16 में जगह बना पाई थी। मनिका राउंड 16 में चीन की वांग यिडी से 3-0 से हार गईं थीं। इससे पहले टूर्नामेंट में उन्होंने राउंड 32 में हांगकांग की डू होई केम को 3-2 से हराया था।

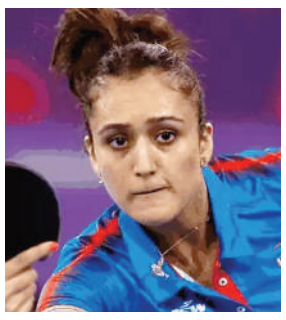

शरत कमल की टॉप-100 रैंकिंग में वापस - मेंस सिंगल्स में शरत कमल की टॉप रैंकिंग में वापसी हुई है। उन्हें तीन स्थान का फायदा हुआ है। वह अब 100वें रैंक पर पहुंच गए हैं। पुरुषों में सबसे बेहतर रैंकिंग हरमीत देसाई की है। वह 73वें स्थान पर पहुंच गए हैं। जबकि मानव ठक्कर 82वें स्थान पर हैं। साथियान को तीन पायदान का नुकसान हुआ है।

विश्व कप अभियान में खराब प्रदर्शन के बावजूद सफेद गेंद के कप्तान बने रहना चाहते हैं बटलर

पुणे (एजेंसी)। इंग्लैंड के सीमित ओवर के कप्तान जोस बटलर ने एकदिवसीय विश्व कप टूर्नामेंट में निशानाजनक प्रदर्शन के बावजूद सफेद गेंद के दोनों प्रारूपों में टीम का नेतृत्व जारी रखने की इच्छा व्यक्त की है। विश्व कप के शुरूआती दौर में ही बाहर होने वाले गत चैंपियन ने बुधवार को नीदरलैंड्स को 160 रनों से हराकर पांच मैचों की हार का सिलसिला तोड़ दिया।

2025 में चैंपियंस ट्रॉफी क्वालीफाई करने के इरादे से इंग्लैंड अब अपने अंतिम लीग मुकाबले में पाकिस्तान पर जीत हासिल करना चाहेंगी। इंग्लैंड के पुरुष क्रिकेट टीम के प्रबंध निदेशक रॉब इस सप्ताह के अंत में भारत आकर टीम से जुड़ेंगे तथा टीम की खामियों पर चर्चा करेंगे। इसके अलावा वे अगले महीने वेस्टइंडीज में होने वाले दौरे के लिए टीम का भी चयन करेंगे। इंग्लैंड की टीम वेस्टइंडिज में तीन एकदिवसीय और पांच टी-20 मुकाबले खेलेंगी।

चर्चा के दौरान कप्तान और कोच के रूप में बटलर व मैथ्यू मॉट के भविष्य पर भी निर्णय लिया जा सकता है। बटलर ने बुधवार को कहा, हां, मैं (अगले महीने सफेद गेंद के दौरे में टीम की कप्तानी करना चाहूंगा)। मुझे पता है कि रॉब आज भारत आ रहे हैं। हम उनके और कोच के साथ कुछ अच्छी बातचीत कर सकते हैं और सभी के साथ उस (वेस्टइंडिज) दौरे के लिए एक योजना बना सकते हैं।

भूटान महामहिम के राज्याभिषेक समारोह को समर्पित थिम्पू हाफ मैराथन का 16वां संस्करण सम्पन्न

चांगलिमथांग (एजेंसी)। एथलेटिकिस और एकता के जीवंत प्रदर्शन में थिम्पू हाफ मैराथन का 16वां संस्करण हाल ही में भूटान में सम्पन्न हुआ। भूटान एमेच्योर एथलेटिक फेडरेशन द्वारा आयोजित इस वर्ष का कार्यक्रम विशेष महत्व रखता है क्योंकि यह महामहिम राजा के राज्याभिषेक समारोह को समर्पित था। 500 से अधिक प्रतिभागियों के साथ मैराथन ने सभी उम्र के धावकों को न केवल खेल के प्रति अपने प्यार को व्यक्त करने बल्कि अपने राजा के प्रति उनके गहरे सम्मान और प्रशंसा का जश्न मनाने के लिए एक साथ लाया।

यह कार्यक्रम सुबह होते ही शुरू हुआ जिसमें धावक अपने जूते उतारकर चांगलिमथांग स्टेडियम की पार्किंग में एकत्र हुए। जैसे ही घड़ी में सुबह 7 बजे मैराथन आधिकारिक तौर पर शुरू हो गई जो थिम्पू की सड़कों से शुरू हुई जो रोमांचक और चुनौतीपूर्ण यात्रा की शुरुआत थी। वयस्कों के लिए मैराथन ने कठिन 21 किलोमीटर की दूरी तय की गई जो चांगलिमथांग स्टेडियम में शुरू और समाप्त हुई। धावक रास्ते में अपनी सहनशक्ति, दृढ़ संकल्प और दौड़ने के प्रति प्रेम का परीक्षण करते हुए नामसेलिंग की ओर निकले।

युवा वर्ग ने 10 किलोमीटर की चुनौती ली। चांगलिमिथांग में विजयी वापसी से पहले उन्होंने ओलाखा में ओ प्लाजा के एक मोड़ से उसी स्थान से शुरुआत की। युवा वर्ग में रोमांचक प्रतियोगिता थी जिसमें भूटान की सर्वश्रेष्ठ युवा प्रतिभाओं ने अपने उल्लेखनीय कौशल का प्रदर्शन किया। लड़कों की श्रेणी में पेमा धेंदुप ने 35 मिनट और 15 सेकंड के समय के साथ पहला स्थान हासिल किया, उसके बाद जिग्मे वांगचुक ने 35 मिनट और 54 सेकंड के साथ दूसरा स्थान हासिल किया। सागर सुब्बा ने 36 मिनट और 49 सेकंड में दौड़ पूरी कर तीसरा स्थान हासिल किया।

लड़कियों का वर्ग भी उतना ही रोमांचक था जिसमें नोरबू डेमा चैंपियन बनीं। उसने 44 मिनट और 29 सेकंड में फिनिश लाइन पार की। उसके बाद जिग्मे सेल्डन ने 44 मिनट और 37 सेकंड में फिनिश लाइन पार की। तीसरे स्थान पर चिम्मी पेल्डन ने 45 मिनट 18 सेकेंड में दौड़ पूरी की। 21 किलोमीटर की महिला धावकों में गोमा प्रधान ने मैराथन को 1 घंटे, 32 मिनट और 46 सेकंड में पूरा करके शीर्ष स्थान हासिल किया। किन्जांग ल्हामो ने 1 घंटा, 35 मिनट और 2 सेकंड के समय के साथ दूसरा स्थान हासिल किया जबकि किंगा वांगमो ने 1 घंटे, 41 मिनट और 2 सेकंड में दौड़ पूरी करके शीर्ष तीन में जगह बनाई।

21 किलोमीटर वर्ग में पुरुष प्रतिभागियों में जम्फेल चोडा ने 1 घंटा, 17 मिनट और 24 सेकंड के समय के साथ पहला स्थान हासिल किया। काबजी शेरिंग ने 1 घंटे, 17 मिनट और 45 सेकंड में मैराथन पूरी करके दूसरा स्थान हासिल और डेचेन उगयेन 1 घंटे, 18 मिनट और 10 सेकंड के समय के साथ तीसरे स्थान पर रहे।

थिम्पू हाफ मैराथन न केवल एथलेटिकिज्म का जश्न मनाती है, बल्कि भूटान के लोगों के मन में अपने राजा के प्रति गहरे सम्मान और प्रशंसा की याद भी दिलाती है। यह भूटानी लोगों की स्थायी भावना और स्वस्थ और सक्रिय जीवनशैली को बढ़ावा देने की उनकी प्रतिबद्धता का प्रमाण है। 16वीं थिम्पू हाफ मैराथन न केवल एथलेटिकिज्म के प्रदर्शन के लिहाज से बल्कि भूटान के लोगों में आई एकता और खुशी के लिहाज से भी जबरदस्त सफलता रही। जब प्रतिभागियों और दर्शकों ने धावकों का उत्साह बढ़ाया, तो यह स्पष्ट था कि यह आयोजन आने वाले वर्षों तक एक पोषित परंपरा बनी रहेगी। यह दौड़ प्रिय राजा के प्रति भूटान के स्थायी प्रेम का प्रमाण है।

संक्षिप्त समाचार

बेटे ने मां-बाप को सरिए मारकर उतारा मौत के घाट

अमृतसर, एजेंसी। अमृतसर के मजीठा में दिल दहला देने वाली घटना सामने आई है। दरअसल, यहां पंधेर कलां गांव में गत रात एक बेटे ने अपने माता-पिता के सरिया मारकर बेरहमी से हत्या कर दी। ताजा जानकारी के मुताबिक पुलिस ने आरोपी प्रीतपाल सिंह को गिरफ्तार कर लिया है। दरअसल गांव पंधेर कलां में एक शादी थी, जहां प्रीतपाल ने खूब शराब पी हुई थी। इसके विरोध में उसके माता-पित प्रीतपाल को घर से दोबारा शादी वाले घर जाने से रोक रहे थे। गुस्से में आए प्रीतपाल ने अपने माता-पिता की बुरी तरह मारपीट की और सरीया मार-मार कर दोनों की बेरहमी से हत्या कर दिया। मृतकों का नाम गुरमीत सिंह और कुलविंदर कौर है, जिनकी उम्र करीब 70 साल बताई जा रही है। फिलहाल मौके पर पहुंची पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर अगली कार्रवाई शुरू कर दी है।

कर्नाटक के पूर्व सीएम सदानंद गौड़ा का चुनावी सियासत से संन्यास, नहीं लेंगे इलेक्शन में हिस्सा

बेंगलुरु, एजेंसी। एक महत्वपूर्ण राजनीतिक घटनाक्रम में कर्नाटक के पूर्व मुख्यमंत्री, चिक्कबल्लापुर निर्वाचन क्षेत्र से भाजपा सांसद डीवी सदानंद गौड़ा ने चुनावी राजनीति से संन्यास लेने की घोषणा की है। अगले लोकसभा चुनाव में उन्हें टिकट दिए जाने को लेकर संशय था। अब डीवी सदानंद गौड़ा ने राजनीतिक संन्यास की घोषणा की है। उन्होंने हसन में पत्रकारों से बात करते हुए अपने फैसले के बारे में बताया। पत्रकारों से बातचीत में गौड़ा ने कहा, मैंने चुनावी राजनीति से संन्यास लेने का फैसला किया है। मेरे 30 साल के राजनीतिक करियर में पार्टी ने मुझे सब कुछ दिया है। मैंने 10 साल तक विधायक, 20 साल तक सांसद, एक साल तक मुख्यमंत्री, 4 साल तक राज्य पार्टी अध्यक्ष के रूप में कार्य किया है। मैंने नरेंद्र मोदी सरकार में सात वर्षों तक कैबिनेट मंत्री के रूप में कार्य किया है। अगर मैं और अधिक चाहता हूं, तो मुझे स्वार्थी कहा जाएगा। डीवी सदानंद गौड़ा पिछले कुछ महीनों से राजनीतिक रूप से सक्रिय हैं। वह राजनीतिक बयानबाजी को लेकर सुर्खियों में थे। उन्होंने बीजेपी दफ्तर में प्रेस कॉन्फ्रेंस भी की और राज्य सरकार पर हमला बोला। इस तरह उम्मीद थी कि वह एक्टिव पॉलिटिक्स में फिर से प्रवेश कर रहे हैं। हाल ही में उन्हें केंद्रीय नेताओं ने दिल्ली बुलाया चुनावी राजनीति से संन्यास की घोषणा करते हुए उन्होंने राज्य में बीजेपी और जेडीएस के बीच गठबंधन पर नाराजगी जताई। ऐसी अटकलें हैं कि गठबंधन के तहत चिक्कबल्लापुर निर्वाचन क्षेत्र जेडीएस के पास जाएगा। शायद इस वजह से सदानंद गौड़ा नाराज हैं। पत्रकारों से बातचीत में गौड़ा ने कहा, एनडीए गठबंधन को लेकर हमारे केंद्रीय नेता फैसला लेंगे। हालांकि, हमारे कार्यकर्ता इस पर सहमत नहीं हैं। कार्यकर्ता कह रहे हैं कि जो पार्टी इतने सालों से इसका विरोध कर रही हो, उसके साथ अचानक गठबंधन करना ठीक नहीं है।

मनोज जारांगे ने दिया अल्टीमेटम- 24 दिसंबर तक मराठा आरक्षण जारी करो...

मुंबई, एजेंसी। महाराष्ट्र में मराठा आरक्षण को लेकर सामाजिक कार्यकर्ता मनोज जारांगे ने अब अल्टीमेटम जारी कर दिया है। जारांगे ने दो टूक शब्दों में कहा कि अगर 24 दिसंबर तक मराठा आरक्षण की मांग को पूरा नहीं किया जाता है तो वे उन नेताओं के नामों का खुलासा कर देंगे जो वर्षों से इसके खिलाफ रहे हैं। जारांगे ने यह भी दावा किया कि कई मराठा नेताओं ने अपने समुदाय के लिए आरक्षण का समर्थन नहीं किया। मराठों को आरक्षण नहीं देने के लिए सरकार पर 30-40 सालों से ओबीसी नेताओं का भी दबाव था। उन्होंने मांग की है कि ओबीसी की तरह मराठियों को सारी सुविधाएं मिलनी चाहिए। मराठियों को वो नौकरियां भी मिलनी चाहिए, जो उन्हें पहले नहीं दी गई।यहां एक निजी अस्पताल में पत्रकारों से बात करते हुए सामाजिक कार्यकर्ता मनोज जारांगे ने कहा कि मराठा और ओबीसी समुदाय के लोग कुछ राजनीतिक नेताओं के उत्तेजक बयानों से प्रभावित नहीं होंगे। जारांगे ने कहा, अगर हमें 24 दिसंबर तक आरक्षण नहीं दिया गया तो हम उन नेताओं के नामों का खुलासा कर देंगे, जिन्होंने बरसों से मराठा आरक्षण को रोककर रखा है। जरांगे को यहां पिछले सप्ताह भूख हड़ताल खत्म करने के बाद भर्ती कराया गया था। उधर, महाराष्ट्र की एकनाथ शिंदे सरकार ने जारांगे के नेतृत्व में चल रहे विरोध प्रदर्शन के मद्देनजर मराठा समुदाय के सदस्यों को कुनबी प्रमाण पत्र देने के लिए अध्ययन का जिम्मा न्यायमूर्ति (सेवानिवृत्त) संदीप शिंदे समिति को सौंपा है। यह समिति इस पर रिपोर्ट पेश करेगी कि मराठा समुदाय को कुनबी प्रमाण पत्र दिया जाए या नहीं? बता दें कि जारांगे की मांगों में मराठों को कुनबी प्रमाणपत्र दिया जाना भी शामिल है ताकि उन्हें ओबीसी श्रेणी के तहत आरक्षण मिल सके। मनोज जारांगे की मांग है कि मराठियों को वो तमाम सुविधाएं दी जाएं जो ओबीसी समुदाय को आरक्षण के तहत मिलती हैं, इसमें नौकरियां भी शामिल हैं। उधर, महाराष्ट्र के मंत्री और एनसीपी नेता (अजीत पवार गुट) छगन भुजबल मराठियों को आरक्षण देने के लिए बैकडोर से किए जा रहे प्रयासों का विरोध कर चुके हैं। सोमवार को उन्होंने इस मामले में कहा था कि मराठा आरक्षण के लिए इस तरह के प्रयासों का विरोध किया जाएगा। हिंसा और दबाव की रणनीति किसी भी सूरत में बर्दाश्त नहीं की जाएगी। उधर, इस मामले जारांगे कह चुके हैं कि मराठियों को आरक्षण देने से ओबीसी समुदाय को कोई फर्क नहीं पड़ेगा।

नहीं रोक सकते कर्मचारी का पीएफ और ग्रैच्युटी, सुप्रीम कोर्ट ने हाईकोर्ट का फैसला पलटा

नई दिल्ली, एजेंसी। सुप्रीम कोर्ट ने हाल ही में एक फैसले में कहा है कि कोई भी बैंक अपने किसी भी कर्मचारी के रिटायर होने पर उसका भविष्य निधि और ग्रैच्युटी नहीं रोक सकता है। पंजाब नेशनल बैंक के एक रिटायर्ड कर्मचारी (अपीलकर्ता) के पक्ष में फैसला सुनाते हुए सुप्रीम कोर्ट ने बैंक को अनिवार्य रूप से सेवानिवृत्त हुए कर्मचारी को भविष्य निधि और ग्रेच्युटी का भुगतान करने का निर्देश दिया है। इसके साथ ही अदालत ने कहा कि पंजाब नेशनल बैंक (अधिकारी) सेवा विनियम, 1979 के अनुसार, बैंक पीएफ राशि तभी रोक सकता है, जब यह साबित हो जाए कि किसी कर्मचारी के कृत्य से बैंक को कोई नुकसान हुआ है। इस मामले में बैंक न केवल कथित नुकसान को साबित करने में विफल रहा, बल्कि कर्मचारी को निष्पक्ष सुनवाई से भी वंचित कर दिया गया था।अदालत ने फैसले में कहा है कि बैंक के निदेशक मंडल ने भविष्य निधि योगदान के विनियोग के प्रस्ताव को पारित करने से पहले, बैंक को नुकसान या क्षति पहुंचाने के मुद्दे पर अपीलकर्ता को कोई अवसर नहीं दिया है। कोर्ट ने ग्रेच्युटी भुगतान के मुद्दे पर 1979 के ग्रेच्युटी अधिनियम और विनियमों के प्रावधानों पर विचार किया।

योगी सरकार एक्शन में, आपॅरेशन में लाखों की अवैध शराब बरामद

लखनऊ, एजेंसी। मुख्यमंत्री योगी आदित्य नाथ द्वारा दीपावली पर्व के दृष्टिगत अवैध शराब के निर्माण, बिक्री एवं तस्करी पर पूर्ण अंकुश लगाए जाने के निर्देश दिए गए हैं। आबकारी मंत्री नितिन अग्रवाल, प्रमुख सचिव बीना कुमारी, प्रमुख सचिव ने दीपावली पर्व के दृष्टिगत अवैध शराब के विरुद्ध प्रदेश में विशेष प्रवर्तन अभियान चलाने के निर्देश दिए हैं। विशेष प्रवर्तन अभियान के लिए आबकारी, पुलिस एवं प्रशासन की संयुक्त टीमों का गठन जिलाधिकारी के स्तर से किया जा चुका है। प्रवर्तन कार्य में जीएसटी, परिवहन विभाग व आरपीएफ से समन्वय स्थापित कर उनका भी सहयोग लिया जा रहा है। पंजाब एवं हरियाणा राज्य से आने वाली ट्रेनों की आकस्मिक चेकिंग के साथ-साथ उन पर विशेष निगरानी रखी जा रही है। आबकारी आयुक्त सैथिल पांडियन सी. ने बताया कि बुधवार को सोनभद्र में आबकारी एवं पुलिस की संयुक्त टीम द्वारा एक डीसीएम ट्रक से सूती कतरनों की बोरियों की छल्ली की ओट में छिपाकर रखी गई मैकडावल नं. वन ब्राण्ड की 300 पेटी अवैध विदेशी मदिरा (पंजाब राज्य में बिक्री के लिए अनुमन्य) बरामद करते हुए ट्रक चालक को गिरफ्तार किया गया। बरामद शराब की कीमत लगभग 30 लाख अनुमानित है। गिरफ्तार ट्रक चालक के विरुद्ध थाना रार्बट्सगंज, जिला सोनभद्र में आबकारी एवं आई.पी.सी. की सुसंगत धाराओं में मुकदमा पंजीकृत कराया गया। एक ट्रक से इम्पीरियल ब्लू ब्राण्ड की विदेशी मदिरा (चण्डीगढ़ राज्य में बिक्री के लिए अनुमन्य) की 357 पेटी बरामद की गई।

ईडी पर मनमानी का आरोप; कांग्रेस ने खटखटाया चुनाव आयोग का दरवाजा

रायपुर, एजेंसी।
कांग्रेस ने विधानसभा चुनावों के दौरान ईडी के कथित दुरुपयोग को रोकने के लिए बुधवार को चुनाव आयोग से तत्काल हस्तक्षेप की मांग की। कांग्रेस ने लगाया कि जांच एजेंसी केंद्र सरकार के इशारे पर छवि धुमिल करने के लिए काम कर रही है। कांग्रेस ने यह भी आरोप लगाया कि चुनावों में महादेव सट्टेबाजी ऐप मुद्दे का राजनीतिकरण किया जा रहा है। कांग्रेस ने भाजपा के चुनाव विभाग के खिलाफ भी शिकायत की है। कांग्रेस नेता अभिषेक सिंघवी ने संवाददाताओं को बताया कि चुनाव आयोग ने हमारी बात सुनी। हमने आयोग को ईडी के कथित दुरुपयोग के बारे में बताया है।

समाचार एजेंसी पीटीआई भाषा की रिपोर्ट के मुताबिक, कांग्रेस ने महादेव ऐप के मामले में छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री भूपेश बघेल के खिलाफ प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) द्वारा लगाए गए आरोपों की पृष्ठभूमि में बुधवार को निर्वाचन आयोग का रुख किया और कहा कि विधानसभा चुनाव के समय केंद्रीय एजेंसी की मनमानी बंद होनी चाहिए और उसे संरक्षण मिलना चाहिए। पार्टी नेताओं के एक प्रतिनिधिमंडल ने निर्वाचन आयोग पहुंचकर प्रतिवेदन दिया और यह दावा भी किया कि चुनाव आते ही केंद्रीय एजेंसियों का दुरुपयोग किया जाता है ताकि कांग्रेस को चुनावी रण में समान अवसरों से उपेक्षित रखा जा सके। इस प्रतिनिधिमंडल में कांग्रेस महासचिव तारिक

अनवर, वरिष्ठ अधिवक्ता एवं पार्टी प्रवक्ता अभिषेक सिंघवी और कुछ अन्य नेता शामिल थे। सिंघवी ने संवाददाताओं से कहा कि छत्तीसगढ़ में पहले चरण के चुनाव (सात नवंबर) से पहले हमने निर्वाचन आयोग से मिलने का समय मांगा था। हमने आयोग से शिकायत में कहा है कि 18 महीने पहले छत्तीसगढ़ पुलिस ने महादेव ऐप मामले में जांच शुरू की थी। छह महीने पहले मुख्यमंत्री बघेल ने भी आरोपियों की गिरफ़्तारी और ऐप को प्रतिबंधित करने की मांग की थी। लेकिन केंद्र सरकार ने तब कुछ नहीं किया। अभिषेक सिंघवी ने आरोप लगाया कि चुनाव आते ही भाजपा के नेता, प्रधानमंत्री मोदी और ईडी नई-नई चीजें सामने लाने लगते हैं। केंद्र सरकार ने पहले इस ऐप को प्रतिबंधित क्यों नहीं किया। उन्हें प्रदेश सरकार की पूर्व अनुमति क्यों चाहिए थी? ईडी कहती है कि ग़ैरकानूनी काम हो रहा है, छत्तीसगढ़ चुनाव के लिए बाहर से पैसा आ रहा है। आपने (ईडी) अभी तक जांच शुरू नहीं की और चुनाव के समय आरोप लगाने लगे, ताकि चुनाव में कांग्रेस का नुकसान हो। ईडी ने जिन लोगों के नाम लिए हैं, आरोपपत्र में उनकी भूमिका साफ नहीं कर पाई है। सिंघवी ने कहा- मुख्यमंत्री से जुड़े कई अफसरों पर आरोप लगाया है, लेकिन आरोप पत्र में उनका संबंध महादेव ऐप से नहीं बताया है। इतना बड़ा घोटाला हो रहा था, तो ईडी क्या कर रही थी? ऐप पर तीन दिन पहले रोक क्यों लगाई? साफ़ है भाजपा की हार को बचाने के लिए ये सब किया जा रहा है। मोदी सरकार ने संवैधानिक संस्थाओं को ख़त्म कर दिया है। हमने निर्वाचन आयोग से संरक्षण मांगा है और मांग की है कि मनमानी बंद हो। प्रवर्तन निदेशालय ने शुक्रवार को दावा किया था कि उसने पैसे का लेन-देन करने वाले एक व्यक्ति का बयान दर्ज किया है, जिसने आरोप लगाया है कि महादेव सट्टेबाजी ऐप के प्रवर्तकों ने बघेल को अब तक 508 करोड़ रुपये का भुगतान किया है। कांग्रेस ने आरोप को खारिज करते हुए कहा था कि अन्य पिछड़े समुदाय (ओबीसी) वर्ग से ताल्लुक रखने वाले छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री की छवि धूमिल करने के लिए भारतीय जनता पार्टी ने साजिश रची है तथा राज्य की जनता इस विधानसभा चुनाव में भाजपा को करारा जवाब देगी।

चाय नहीं मिली तो डॉक्टर ने छोड़ा ऑपरेशन, बेहोश पड़ी रह गईं 4 महिलाएं

नागपुर, एजेंसी। महाराष्ट्र के नागपुर स्थित एक सरकारी अस्पताल में चौंकाने वाला मामला सामने आया है। यहां एक डॉक्टर चाय नहीं मिलने से इस कदर नाराज हो गया कि उसने सर्जरी बीच में ही छोड़ दी और ऑपरेशन थिएटर से निकल गया। इस बीच एनेस्थीसिया लगवाकर चार महिलाएं बेहोश पड़ी रहीं। आनन-फानन में दूसरे अस्पताल से डॉक्टर को बुलाना पड़ा। तब जाकर सर्जरी हो पाई। यह घटना 3 नवंबर को नागपुर के मौदा तहसील के स्थानीय स्वास्थ्य केंद्र में हुई। उस दिन आठ महिलाओं की परिवार नियोजन के तहत नसबंदी की जानी थी। जानकारी के अनुसार, चार महिलाओं की सर्जरी करने और बाकी महिला मरीजों को एनेस्थीसिया देने के बाद डॉक्टर ने अस्पताल के कर्मचारियों से एक कप चाय मांगी। काफी देर के बाद जब उसके लिए चाय नहीं आई तो नाराज होकर डॉक्टर ऑपरेशन थिएटर से बिना सर्जरी के ही निकल गया। रिपोर्ट के मुताबिक, डॉक्टर का नाम तेजरंग भलावी बताया जा रहा है। डॉक्टर भलावी के जाने के बाद जब अस्पताल प्रशासन ने जिला चिकित्सा अधिकारी से संपर्क किया गया। आनन-फानन में बेहोश महिलाओं की सर्जरी करने के लिए दूसरे डॉक्टर को भेजा गया। जिला प्रशासन ने अब इस मामले की जांच के आदेश दे दिए हैं। इस मसले पर नागपुर जिला परिषद के सीईओ सौम्या शर्मा ने कहा कि मामले की जांच के लिए तीन सदस्यीय समिति का गठन किया गया है। कमेटी की रिपोर्ट के आधार पर डॉक्टर के खिलाफ उचित कार्रवाई की जाएगी। घटना के बारे में बात करते हुए उन्होंने कहा, शुक्रवार 3 नवंबर को मौदा तहसील के सरकारी अस्पताल में परिवार नियोजन ऑपरेशन का आयोजन किया गया था। ऑपरेशन करने के लिए रामटेक तहसील के आरएच सरकारी अस्पताल के डॉ. तेजरंग भलावी को बुलाया गया।

गन्ना किसानों के लिए एक अच्छी खबर, संघ, समितियां, विकास परिषदों के चुनाव की तैयारी

लखनऊ, एजेंसी।
प्रदेश के गन्ना किसानों के लिए एक अच्छी खबर है। पिछले लंबे समय से निष्क्रय चल रही गन्ना संघ, गन्ना समितियां, गन्ना विकास परिषद, चीनी मिल समितियों आदि संस्थाओं के चुनाव की तैयारी शुरू हो गई है। जल्द ही इन सभी संस्थाओं में लोकतंत्र की बहाली होगी। गन्ना किसान अपने प्रतिनिधियों के जरिए अपनी दिक्कतें, अपने सुझाव सरकार तक पहुंचाने में सक्षम होंगे। राज्य सहकारी निर्वाचन आयुक्त पी.के. मोहंती ने बातचीत में बताया कि इन संस्थाओं के चुनाव को लेकर कुछ न कुछ बाधाएं आती रहीं। मगर अब वह बाधाएं दूर कर ली गयी हैं।

जल्द ही चुनाव करवाए जाएंगे। एक प्रश्न के उत्तर में उन्होंने कहा कि लोकसभा चुनाव से पहले यह चुनाव हो सकते हैं। प्रदेश में गन्ना संघ के अलावा 169 गन्ना समितियां, 152 गन्ना विकास परिषद हैं। गन्ना संघ का कार्यकाल 2016 से 2021 तक रहा। इस दरम्यान संघ के अध्यक्ष जयवीर सिंह यादव रहे। पिछले साल अक्तूबर में अदालत ने तीन महीने के भीतर संघ के चुनाव करवाए जाने के आदेश दिये थे मगर कोई न कोई बाधा आती रही।

संघ के चुनाव के साथ ही गन्ना समितियों और गन्ना विकास परिषदों के भी चुनाव होते हैं। मगर वह भी नहीं हो सके। जहां-जहां सहकारी चीनी मिले हैं वहां चीनी मिल समितियों के उपाध्यक्ष के भी चुनाव होते हैं। मगर वह भी नहीं हो पाए। यह समितियां दरअसल चीनी मिलों और गन्ना किसानों के बीच सेतु का काम करती हैं। चीनी मिलों को पूरी पारदर्शिता के साथ गन्ने की आपूर्ति करवाती हैं।

इन संस्थाओं के अस्तित्व में न रहने से यह काम जिला गन्ना अधिकारी कर रहे हैं। इन संस्थाओं के सामान्य निकाय यानि डेलीगेट्स का अस्तित्व बना रहता है, इस नाते हर साल सामान्य निकाय की एजीएम बुलवा कर गन्ना आरक्षण व अन्य मामलों में प्रस्ताव पारित करवा कर जिला गन्ना अधिकारी को भेजे जाते हैं।

मुस्लिम प्रतिनिधित्व की बात करने पर मुझे कहते हैं एंटी-नेशनल:ओवैसी

पीएम के ओबीसी सीएम वाले बयान पर एआईएमआईएम के अध्यक्ष असदुद्दीन ओवैसी का पलटवार

नईदिल्ली, एजेंसी।
ऑल इंडिया मजलिस-ए-इत्तेहादुल मुस्लिमीन (एआईएमआईएम) के अध्यक्ष असदुद्दीन ओवैसी ने पीएम मोदी पर निशाना साधा है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री जाति के आधार पर मतदान करने की अपील तो करते हैं लेकिन अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) के साथ न्याय नहीं करना चाहते। पीएम मोदी ने मंगलवार रात को सोशल मीडिया मंच एक्स पर एक पोस्ट में कहा, तेलंगाना में लाल बहादुर शास्त्री स्टेडियम से राज्य के भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के मुख्यमंत्री को चुनने के लिए उलटी गिनती शुरू हो गई, जो पिछड़े समुदाय से ताल्लुक रखने वाला होगा। मोदी ने यहां एक चुनावी रैली को संबोधित किया था।

तो मुझे एंटी-नेशनल कहा जाता है= इस प्रतिक्रिया देते हुए ओवैसी ने एक्स पर यह भी कहा कि प्रधानमंत्री मोदी ने पिछड़े मुसलमानों के लिए आरक्षण हटाने का वादा किया था, 27 फीसदी ओबीसी आरक्षण का

विरोध किया था और आरक्षण पर 50 प्रतिशत की सीमा भी नहीं हटाई है। हैदराबाद से सांसद ओवैसी ने कहा, प्रधानमंत्री जाति के आधार पर वोट करने की अपील कर रहे हैं लेकिन वह ओबीसी के साथ न्याय करना नहीं चाहते। जब मैं कहता हूं कि मुसलमानों को भारतीय राजनीति में कम प्रतिनिधित्व दिया जा रहा है तो मुझे राष्ट्र विरोधी और सांप्रदायिक कहा जाता है। मोदी हताश हैं, जो दिख रहा है।

कांग्रेस और बीआरएस की कथित परिवारवादी मानसिकता पर हमला बोलते हुए, मोदी ने मंगलवार को यहां कहा कि ये पार्टियां कभी भी पिछड़ी जाति के उम्मीदवार को तेलंगाना का मुख्यमंत्री नहीं बनाएंगी। उन्होंने वादा किया कि अगर भाजपा राज्य में सत्ता में आई तो मुख्यमंत्री पिछड़े वर्ग से बनाया जाएगा। प्रधानमंत्री 30 नवंबर को होने जा रहे विधानसभा चुनाव से पहले भाजपा द्वारा आयोजित बीसी आत्म गौरव सभा (पिछड़ा वर्ग स्वाभिमान बैठक) को संबोधित कर रहे थे।

मोदी ने बीती रात कहा था, हैदराबाद आना हमेशा से अच्छा लगता है, और शहर के लाल बहादुर शास्त्री स्टेडियम में आकर तो और भी ज्यादा अच्छा लगता है। मैं 2013 में यहां अपनी रैली को नहीं भूल सकता। उस वक्त ओबीसी प्रधानमंत्री को चुनने के सफर की शुरुआत हुई थी। आज यहीं से तेलंगाना के लिए भाजपा के मुख्यमंत्री को चुनने की उलटी गिनती शुरू हुई है, जो पिछड़े समुदाय से ताल्लुक रखने वाला होगा।

दिल्ली का बिजनेसमैन ब्रिटेन में लड़ रहा चुनाव, मेयर पद की ठोकी दावेदारी

लंदन एजेंसी। भारतीय मूल के प्रधानमंत्री के बाद ब्रिटेन को जल्द ही लंदन के अगले मेयर के रूप में भारतीय बिजनेसमैन मिल सकता है। दिल्ली के एक व्यवसायी तरूण गुलाटी ने लंदन के मेयर पद के लिए अपनी दावेदारी का ऐलान किया है। तकरीबन 20 साल से लंदन में रह रहे तरुण ने अपनी प्राथमिकताओं में मजबूत पुलिसिंग, किफायती आवास और सभी लंदनवासियों के के सुनहरे भविष्य के लिए जरूरीसुधार गिनाए हैं।

63 वर्षीय तरुण घुलाटी लंदन के अगले मेयर बनने के लिए जी-जान से मेहनत कर रहे हैं। 2 मई, 2024 को लंदन में मेयर पद के लिए चुनाव होना है। इसके लिए तरुण गुलाटी ने निर्दलीय उम्मीदवार के तौर पर अपनी दावेदारी ठोकी है। इस चुनावी लड़ाई में ब्रिटेन के प्रमुख राजनीतिक दलों के कई प्रमुख उम्मीदवार भी मैदान में हैं। फाइनेंस एक्सपर्ट और लंदन में हिन्दुओं के लिए काम करने वाले गुलाटी ने बेहतर पुलिसिंग, सस्ते आवास और लंदनवासियों के जीवन में ÷सुधार÷ की कसम खाई है। उनका वादा है कि मेयर चुने जाने पर वो शहर की तस्वीर बदलने के लिए सीईओ के रूप में काम करेंगे। तरुण गुलाटी दिल्ली से लेकर मॉरीशस और कतर से लेकर यूके तक विभिन्न स्थानों पर काम कर चुके हैं। दो बच्चों के पिता गुलाटी को साल 2009 में ब्रिटेन की नागरिकता मिली थी। वह बताते हैं कि तब से ब्रिटेन उनका दूसरा घर है। हाल ही में भारत की यात्रा के दौरान गुलाटी ने कहा था कि, ÷मैं पिछले 40 वर्षों से हर दिन अनुशासित जीवन जी रहा है। जल्दी उठता हूं और मेरे पास एक दिन पहले ही अगले दिन की पूरी योजना तैयार रहती है। मैं समय का बेहद पाबंद हूं। मैं उन लोगों की तरफ ध्यान नहीं देता, जो दूसरे की बातों में अपना समय बर्बाद करते हैं। मेरे पास लंदन की पूरी तरह से बदलने की कार्ययोजना पूरी तरह से तैयार है।

मुद्रक तथा प्रकाशक रंजीत राय द्वारा स्वामी आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, प्लॉट नं. सी-16 एवं 17, रोड नं. 9, पाटलिपुत्रा इंडस्ट्रीयल एरिया, पटना-800013 के पक्ष में आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड प्रेस से मुद्रित एवं सी-20, एस.के. पुरी, नियर बसावन पार्क, पटना, बिहार-800013 से प्रकाशित संपादक- देवन प्रसाद
(नोटः प्रकाशित सभी लेखों आदि से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं और किसी भी कानूनी वाद-विवाद का निपटारा पटना न्यायालय में ही किया जाएगा।) RNI. No. BIHHIN/2013/ 49676, Email: news@pratahkiran.com, patna@pratahkiran.com, 9212228045, 8130691216, 9971557129